☞ **ISBN-** 978-81-932244-8-9

☞ **पुस्तक का नाम–** किरातमीमांसा

☞ **सम्पादक एवं व्याख्याकार-** सर्वज्ञभूषण

☞ **प्रकाशक**

संस्कृतगङ्गा (पञ्जीकृत)
59, मोरी, दारागञ्ज, प्रयागराज 211006
(कोतवाली दारागञ्ज के आगे, गङ्गाकिनारे, संकटमोचन छोटे हनुमान् मन्दिर के पास)
कार्यालय - **8004545095, 8004545096**
email-Sanskritganga@gmail.com
बेवसाइट - www.Sanskritganga.org

☞ **मुख्यवितरक**

राजू पुस्तक केन्द्र
अल्लापुर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
मो॰ 9453460552

☞ **मुद्रक-** एकेडमी प्रेस दारागञ्ज प्रयागराज

☞ प्रथम संस्करण - 05 जुलाई, 2021,

☞ **मूल्य –** **151** /= (एक सौ इक्यावन रुपये मात्र)

संस्कृतगङ्गा उवाच

प्रिय संस्कृतबन्धो!

नमः संस्कृताय

- 'किरातमीमांसा- परीक्षा दृष्टि' यह पुस्तक **TGT, GIC** प्रवक्ता, **UGC - NET, DSSSB, REET, GDC,** असिस्टेण्ट प्रोफेसर आदि प्रतियोगी परीक्षाओं को ध्यान में रखकर लिखी गयी है।

- किरातमीमांसा का तात्पर्य है- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के प्रश्नों की मीमांसा अर्थात् व्याख्या, जो प्रश्न प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं उनका सङ्कलन इस पुस्तक में किया गया है।

- किरातमीमांसा परीक्षा की दृष्टि से लिखी गयी है, अर्थात् महाकवि भारवि का परिचय, किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का परिचय, पात्रों का चरित्र-चित्रण, सूक्तियाँ, शब्दार्थ, व्याकरणात्मक टिप्पणी, परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण वन लाइनर क्वेश्चन और लगभग 450 वस्तुनिष्ठ प्रश्न आपको इस पुस्तक में मिलेंगे।

- इस पुस्तक के सम्पादन एवं प्रफू रीडिंग में सुमन सिंह और शुभम ममगाई ने अथक एवं अनवरत परिश्रम किया है, जो इस पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ में देखा जा सकता है। इन दोनों संस्कृत भगीरथ एवं भागीरथी को कोटिशः साधुवाद।

- इस पुस्तक के प्रूफ रीडिंग कार्य में **संगीता राय, रूबी अग्रहरी, कृष्णा ओझा, विनीत द्विवेदी, ब्रह्मा जी द्विवेदी**, निर्मोही सर, प्रभाशंकर, कृष्णकुमार आदि साथियों का विशेष योगदान रहा।

➢ इस पुस्तक के अक्षर संयोजन के लिए **संदीप कुमार,** एवं **नितिन कुमार** जी को साधुवाद तथा मुद्रणकार्य के लिए **राजकुमार गुप्ता (राजू पुस्तक केन्द्र)** को कोटिशः धन्यवाद।

भवदीय

दिनाङ्क — **सर्वज्ञभूषण**

05 जुलाई, 2021 — संस्कृतगङ्गा, प्रयागराज

❒❒

अनुक्रमणिका

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग)

संस्कृत मूलपाठ | **अनुवाद**

**श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्।
स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठरं द्वैतवने वनेचरः।।**

◆ कुरुदेश के स्वामी (दुर्योधन) की, राजलक्ष्मी का पालन करने वाली प्रजाविषयक प्रवृत्ति को जानने के लिए (युधिष्ठिर ने) जिस (वनेचर) को नियुक्त किया था, वह ब्रह्मचारी वेश वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया।

2

**कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे
जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः।
न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं
प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।।**

◆ (महाराज युधिष्ठिर को) प्रणाम करके, शत्रु द्वारा जीती हुई पृथ्वी (के वृत्तान्त) को राजा के प्रति निवेदित करते हुए उस वनेचर का मन व्यथित नहीं हुआ, क्योंकि हित चाहने वाले लोग मिथ्या मधुर वचन बोलने की इच्छा नहीं करते।

3

**द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो
रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः।
स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं
विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे।।**

◆ शत्रुओं के नाश के लिए कार्य करने की इच्छा वाले राजा (युधिष्ठिर) की एकान्त में आज्ञा प्राप्त करके उस (वनेचर) ने शब्दसौष्ठव और अर्थगौरव के वैशिष्ट्य से सुशोभित तथा सुनिश्चित अर्थ वाली इस प्रकार की वाणी अङ्गीकृत की अर्थात् कही।

**क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो
न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।।**

◆ हे राजन्! कार्यों में नियुक्त किये गये सेवकों द्वारा गुप्तचररूपी नेत्रों वाले राजा लोग ठगे नहीं जाने चाहिए, अतएव (मेरे) अप्रिय अथवा प्रिय (वचन) को क्षमा करें। क्योंकि हितकर और मनोहर वचन दुर्लभ होता है।

स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं
हितान्न यः संश्रृणुते स किम्प्रभुः।
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः ॥

◆ जो राजा को हितकर उपदेश नहीं करता वह कुमित्र है। जो हितैषी व्यक्ति से (उपदेश) नहीं सुनता वह कुत्सित राजा है। क्योंकि राजाओं और अमात्यों के (परस्पर) अनुकूल होने पर समस्त सम्पदाएँ सर्वदा अनुराग करती हैं।

निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः
क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः।
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया
निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम् ॥

◆ कहाँ स्वभाव से ही दुर्ज्ञेय राजाओं का चरित, और कहाँ अज्ञान से विकल (मुझ जैसे) प्राणी ! (तथापि) जो मेरे द्वारा शत्रुओं का गुप्त तत्त्वों वाला नीतिमार्ग जान लिया गया, यह आपका प्रभाव ही है।

विशङ्कमानो भवतः पराभवं
नृपासनस्थोऽपि वनाधिवासिनः।
दुरोदरच्छद्मजितां समीहते
नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः॥

◆ राजसिंहासन पर बैठा हुआ भी दुर्योधन, वन में निवास करने वाले आपसे पराजय की आशङ्का करता हुआ जुए के छल से जीती हुई पृथ्वी को नीति से जीतने के लिए प्रयत्न कर रहा है।

तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया
तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।
समुन्नयन्भूतिमनार्यसङ्गमाद्-
वरंविरोधोऽपि समं महात्मभिः ॥

◆ फिर भी अर्थात् आपके द्वारा पराजय से सशङ्कित होकर भी, कुटिल स्वभाव वाला वह दुर्योधन आपको जीतने की इच्छा से अपनी गुणरूपी सम्पत्ति के द्वारा धवल कीर्ति को फैला रहा है। ऐश्वर्य को बढ़ाता हुआ, महापुरुषों के साथ विरोध भी दुष्टों के समागम से अच्छा है।

9

कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीम्-
अगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना।
विभज्य नक्तन्दिवमस्ततन्द्रिणा
वितन्यते तेन नयेन पौरुषम् ॥

◆ (कामादिक) छह शत्रुओं के समूह को जीत लेने वाले, (तथा) मनु द्वारा उपदिष्ट दुष्प्राप्य स्वरूप वाली शासन-पद्धति को प्राप्त करने के इच्छुक, आलस्यरहित उस (दुर्योधन) के द्वारा रात्रि और दिन का समुचित विभाजन करके नीति से पुरुषार्थ का विस्तार किया जा रहा है

सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः
समानमानान्सुहृदश्च बन्धुभिः।
स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः
कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम् ॥

◆ अभिमानरहित वह (दुर्योधन) निरन्तर सेवकों को प्रेम से युक्त मित्रों की तरह, मित्रों को बन्धुओं के समान सम्मानयुक्त एवं बन्धुवर्ग को आधिपत्य रखने वाले स्वामी की भाँति अच्छी तरह प्रदर्शित करता है।

असक्तमाराधयतो यथायथं
विभज्य भक्त्या समपक्षपातया।
गुणानुरागादिव सख्यमीयिवान्
न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम् ॥

◆ यथोचित विभाजन करके समान पक्षपात वाले अनुराग से अनासक्त भाव से सेवन करते हुए इस (दुर्योधन) के तीन पुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम) मानों उसके गुणों में अनुराग होने के कारण मित्रता को प्राप्त हुए के समान एक दूसरे को बाधा नहीं पहुँचाते।

निरत्ययं साम न दानवर्जितं
न भूरिदानं विरहय्य सत्क्रियाम्।
प्रवर्त्तते तस्य विशेषशालिनी
गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया ॥

◆ उस (दुर्योधन) की निर्बाध (प्रवृत्त होने वाली) मधुरवाणी दान के बिना प्रवृत्त नहीं होती। उसका प्रचुर दान सत्कार के बिना प्रवृत्त नहीं होता। विशेषरूप से सुशोभित होने वाला उसका सत्कार गुणों का विचार किये बिना प्रवृत्त नहीं होता अर्थात् वह गुणी का ही सत्कार करता है।

वसूनि वाञ्छन्न न वशी न
मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः।
गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा
निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम् ॥

◆ इन्द्रियों को वश में रखने वाला वह (दुर्योधन) न तो धन चाहते हुए, न क्रोध से, (अपितु) (सभी) कारणों से रहित होते हुए 'अपना धर्म है'– ऐसा मानकर, गुरुओं द्वारा उपदिष्ट दण्डनीति से शत्रु अथवा पुत्र में भी (विद्यमान) धर्म के व्यतिक्रम को नष्ट करता है।

विधाय रक्षान्परितः परेतरान्-
अशङ्किताकारमुपैति शङ्कितः।
क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः
कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः ॥

◆ चारों ओर शत्रुओं के शत्रुओं को रक्षक नियुक्त करके, सशङ्कित होता हुआ भी (वह दुर्योधन) शङ्कारहित आकृति बनाए रखता है। कार्यों की समाप्ति पर सेवकों को प्रदान की गई सम्पत्तियाँ इस (दुर्योधन) की कृतज्ञता को कहती हैं।

अनारतं तेन पदेषु लम्भिता
विभज्य सम्यग्विनियोगसत्क्रियाः।
फलन्त्युपायाः परिबृंहितायतीः
उपेत्य सङ्घर्षमिवार्थसम्पदः ॥

◆ उस (दुर्योधन) के द्वारा उपादेय वस्तुओं में भलीभाँति विभाग करके समुचित प्रयोगरूप सत्कार को प्राप्त कराये गये सामादिक उपाय मानो (आपस में) स्पर्धा करके समुन्नत भविष्य वाली धनसम्पदाओं को निरन्तर उत्पन्न करते हैं।

अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलं
तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्।
नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रतां
भृशं नृपोपायनदन्तिनां मदः ॥

◆ राजाओं के द्वारा उपहार में दिये गये हाथियों का सप्तपर्ण के पुष्प की गन्ध वाला मदजल अनेक राजाओं के रथों और घोड़ों से भरे हुए उस (दुर्योधन) के आँगन को अत्यधिक गीला कर देता है।

सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैः
अकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।
वितन्वति क्षेममदेवमातृका-
श्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासति ॥

◆ पर्याप्त समय से उस (दुर्योधन) के द्वारा (प्रजाओं का) कल्याण करते रहने पर वर्षा पर आश्रित न रहने वाला कुरुदेश मानो बिना जुताई के ही पकने वाली (अतः) अनायास प्राप्त होनी वाली धान्य-सम्पत्तियों को किसानों के द्वारा धारण करते हुए सुशोभित हो रहा है।

उदारकीर्तेरुदयं दयावतः
प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया।
स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता
वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी ॥

◆ विशाल कीर्ति वाले, दयालु, सब ओर से रक्षा के द्वारा उपद्रवरहित अभ्युदय को सम्पादित करते हुए कुबेर के समान इस (दुर्योधन) के गुणों से द्रवीभूत हुई पृथिवी, सम्पदाओं को स्वयं ही प्रदान कर रही है।

महौजसो मानधना धनार्चिता
धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः।
नसंहतास्तस्य नभिन्नवृत्तयः
प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्॥

◆ महापराक्रमी, मानरूपी धन वाले, धन से सत्कृत, युद्ध में कीर्ति अर्जित कर लेने वाले, (परस्पर) गुटबन्दी न करने वाले, (एक-दूसरे के) विरुद्ध आचरण न करने वाले धनुर्धर (योद्धा) उस (दुर्योधन) के प्रिय कार्यों को प्राणपण से पूरा करने की इच्छा करते हैं।

महीभृतां सच्चरितैश्चरैः क्रियाः
स वेद निःशेषमशेषितक्रियः।
महोदयैस्तस्य हितानुबन्धिभिः
प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः।।

◆ कार्यों को पूर्णरूप से सम्पन्न कर लेने वाला वह (दुर्योधन) उत्तम चरित्र वाले गुप्तचरों द्वारा राजाओं की क्रियाओं को सम्पूर्ण रूप से जान लेता है, विधाता की भाँति उस (दुर्योधन) के कार्य अत्यधिक उत्कर्ष वाले हितकारक परिणाम वाले फलों के द्वारा ही प्रतीत होते हैं।

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्।।

◆ उस (दुर्योधन) के द्वारा कहीं भी चढ़ी हुई प्रत्यञ्चा वाला धनुष नहीं उठाया गया अथवा क्रोध के कारण मुख विकृत नहीं किया गया। राजाओं के द्वारा इस (दुर्योधन) का आदेश गुणों के अनुराग के कारण पुष्पमाला की भाँति शिरों से धारण किया जाता है।

22

स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं
निधाय दुःशासनमिद्धशासनः।
मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा
धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम् ।।

◆ अप्रतिहत आज्ञा वाला वह (दुर्योधन) अभिनव यौवन के कारण उद्दण्ड दुःशासन को युवराज के पद पर नियुक्त करके पुरोहित से अनुमति लेकर आलस्यरहित होकर यज्ञों में हव्य के द्वारा अग्निदेव को प्रसन्न करता है।

23

प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति
प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।
स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः
अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता ।।

◆ शत्रुरहित और स्थिर भविष्य वाले समुद्रपर्यन्त भूमण्डल पर शासन करता हुआ भी वह (दुर्योधन) आपकी ओर से आने वाली विपत्तियों के विषय में सोचता ही रहता है। अहो! बलवानों से किया गया विरोध दुःखद अन्त वाला होता है।।

24

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृताद्-
अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः
स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः ।।

◆ वार्तालाप में प्रसङ्गवश लोगों द्वारा उदाहरण-स्वरूप उच्चरित आपके (युधिष्ठिर) नाम से अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके वह (दुर्योधन), श्रेष्ठ विषवैद्यों द्वारा उच्चारण किये गये गरुड और वासुकि के नामों से संयुक्त अत्यन्त दुःसह मन्त्रपद से विष्णु के वाहनभूत पक्षी गरुड के पादप्रहार का स्मरण करके अधोमुख होकर व्यथित होने वाले सर्प के समान अधोमुख होकर व्यथित होता है।

तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते
विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्।
परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां
प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः ॥

◆ तो आपके प्रति छल करने को उद्यत उस (दुर्योधन) के प्रति उचित प्रतिक्रिया (आपके द्वारा) शीघ्र की जानी चाहिए। दूसरे लोगों के द्वारा कहे गए वचनों का संग्रह करने वाले मुझ जैसों की बातें तो वृतान्तों का सारमात्र होती हैं।

26

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये
गतेऽथ पत्यौ वनसन्निवासिनाम्।
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा
तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः ॥

◆ इस प्रकार (सभी) बातें कहकर, सत्कार पाकर, वनवासियों के स्वामी (उस वनेचर) के चले जाने पर महाराज (युधिष्ठिर) ने द्रौपदी के भवन में प्रवेश करके अनुजों के सान्निध्य में उस बात को कह सुनाया।

27

निशम्य सिद्धिं द्विषतामपाकृती
स्ततस्ततस्त्या विनियन्तुमक्षमा।
नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः
उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः ॥

◆ उसके पश्चात् शत्रुओं की सफलता को सुनकर, उनसे प्राप्त अपमानों को अथवा उद्भूत अपने मनोविकारों को सहन करने में असमर्थ द्रुपद की पुत्री द्रौपदी राजा (युधिष्ठिर) के क्रोध और उद्यम को उद्दीप्त करने वाले वचन बोली।

28

भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं
भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्।
तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां
निरस्तनारीसमया दुराधयः ॥

◆ आप जैसों के विषय में नारीजनों द्वारा कहा गया उपदेशपरक वचन अपमान के समान होता है, फिर भी स्त्रीजनोचित शालीनता को नष्ट कर देने वाली दुष्ट मानसिक व्यथाएँ मुझे बोलने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभि-
श्चिरं धृता भूपतिभिः स्ववंशजैः।
त्वयात्महस्तेन मही मदच्युता
मतङ्गजेन स्त्रगिवापवर्जिता ॥

◆ इन्द्र-सदृश तेजस्वी अपने वंश में उत्पन्न हुए राजाओं के द्वारा चिरकाल तक अखण्डरूप से धारण की गई पृथ्वी को आपने मद बहाने वाले हाथी के द्वारा (अपनी ही सूँड़ से गिराई गई) माला के समान अपने हाथ से गँवा दिया है।

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्-
असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः ।।

◆ जो लोग मायावियों के साथ मायावी नहीं होते, वे मूर्ख लोग पराजय को प्राप्त होते हैं। धूर्त लोग बिना ढँके हुए अङ्गों वाले उन जैसे लोगों को तीक्ष्ण बाणों के समान प्रविष्ट होकर निश्चित ही मार डालते हैं।

गुणानुरक्तामनुरक्तसाधनः
कुलाभिमानी कुलजां नराधिपः।
परैस्त्वदन्यः क इवापहारये
न्मनोरमामात्मवधूमिव श्रियम्।।

◆ अनुकूल सहायकों अथवा साधनों वाला एवं कुलीनता का गर्व रखने वाला आपके अतिरिक्त अन्य कौन राजा होगा जो गुणों में अनुरक्त, कुलीन एवं मनोहारिणी अपनी पत्नी के समान (साम, दानादि) गुणों में अनुरक्त एवं कुलक्रम से आयी हुई मनोहारिणी राजलक्ष्मी को दूसरों से अपहृत करायेगा?

भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते
विवर्त्तमानं नरदेव! वर्त्मनि।
कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः
शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः।।

◆ राजन्! इस समय मनस्वियों द्वारा निन्दित मार्ग में स्थित आपको सूखे हुए शमी के वृक्ष को जला देने वाली प्रज्वलित अग्नि के समान उद्दीप्त क्रोध कैसे नहीं प्रज्वलित करता?

अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां
भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना
न जातहार्देन न विद्विषादरः।।

◆ सफल क्रोध वाले (और) विपत्तियों को नष्ट करने वाले (मनुष्य) के सभी प्राणी स्वयं ही वशीभूत हो जाते हैं। क्रोधहीन व्यक्ति के मित्र बनने पर न तो उसे लोगों का आदर प्राप्त होता है (और) न ही शत्रु बनने पर भय होता है।

परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः
पदातिरन्तर्गिरि रेणुरूषितः।
महारथः सत्यधनस्य मानसं
दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः।।

◆ लाल चन्दन का लेप करने वाला, महारथी (किन्तु अब) पैदल पर्वतों पर घूमते हुए धूलिधूसरित यह भीम, क्या (आप) सत्यसन्ध के मन को व्यथित नहीं करता?

विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्
कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः।
स वल्कवासांसि तवाधुनाहरन्
करोति मन्युं न कथं धनञ्जयः ॥35॥

◆ इन्द्रतुल्य पराक्रम वाले जिस अर्जुन ने उत्तर कुरुओं को जीतकर प्रभूत स्वर्ण और रजतरूपी सम्पदा आप को प्रदान की थी, वही (अर्जुन) अब वल्कल वस्त्रों को लाता हुआ आपके क्रोध को कैसे नहीं उत्पन्न करता?

वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती
कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ।
कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ
विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम् ॥36॥

◆ वनभूमिरूपी शय्या के कारण कठोर शरीर वाले, सब ओर बालों से ढँके हुए दो पर्वतीय हाथियों के समान, इन दोनों जुड़वे भाइयों को देखते हुए तुम अपने धैर्य और संयम को त्यागने के लिए क्यों उद्यत नहीं होते?

इमामहं वेद न तावकीं धियं
विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः।
विचिन्तयन्त्या भवदापदं परां
रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः॥37॥

◆ तुम्हारी इस बुद्धि को मैं नहीं जानती क्योंकि चित्तवृत्तियाँ विचित्र रूपों वाली होती हैं (किन्तु) आपकी महान् विपत्तियों को सोचते हुए मेरी मनोव्यथाएँ मेरे चित्त को बलपूर्वक क्षतविक्षत कर देती हैं।

पुराधिरूढः शयनं महाधनं
विबोध्यसे यः स्तुतिगीतिमङ्गलैः।
अदभ्रदर्भामधिशय्य स स्थलीं
जहासि निद्रामशिवैः शिवारुतैः ॥38॥

◆ जो (आप) पहले बहुमूल्य शय्या पर शयन किए हुए माङ्गलिक स्तुतियों और गीतों के द्वारा जगाए जाते थे, वही (आप) बहुत से कुशों वाली भूमि पर शयन कर शृगालियों के अमङ्गलसूचक शब्दों (के श्रवण) से निद्रा त्यागते हैं।

पुरोपनीतं नृप रामणीयकं
द्विजातिशेषेण यदेतदन्धसा।
तदद्य ते वन्यफलाशिनः परं
परैति कार्श्यं यशसा समं वपुः॥39॥

◆ हे राजन्! आपका जो यह शरीर पहले ब्राह्मणों के भोजन के पश्चात् बचे हुए अन्न से रमणीयता को प्राप्त हो गया था, आज जङ्गली फलों को खाने से आपका वह शरीर (आपके) यश के साथ अत्यधिक क्षीणता को प्राप्त हो रहा है।

अनारतं यौ मणिपीठशायिना
वरञ्जयद्राजशिरःस्रजां रजः।
निषीदतस्तौ चरणौ वनेषु ते
मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम् ॥40॥

◆ निरन्तर मणिमय पादपीठ पर स्थित रहने वाले जिन (चरणों) को राजाओं की शिरोमालाओं की परागधूलि रञ्जित करती थी (आज) आपके वही दोनों चरण, हरिणों और ब्राह्मणों द्वारा काटे गये अग्रभाग वाले कुशों के समूहों पर पड़ते हैं।

द्विषन्निमित्ता यदियं दशा ततः
समूलमुन्मूलयतीव मे मनः।
परैरपर्य्यासितवीर्य्यसम्पदां
पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् ॥41॥

◆ चूँकि (आपकी) यह दशा शत्रुओं के कारण हुई है, अतः मेरा मन समूल उखड़ा-सा जा रहा है। शत्रुओं द्वारा नष्ट न की गई पराक्रमरूपी सम्पत्ति वाले स्वाभिमानियों के लिए पराजय भी उत्सवरूप ही है।

विहाय शान्तिं नृप! धाम तत्पुनः
प्रसीद सन्धेहि वधाय विद्विषाम्।
व्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः
शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः ॥42॥

◆ हे राजन्! शान्ति त्यागकर शत्रुओं के वध के लिए प्रसन्न होइये, उस तेज को पुनः धारण कीजिए। निष्काम मुनिजन ही (काम, क्रोधादि आन्तरिक) शत्रुओं को परास्त करके शान्ति के द्वारा सिद्धि प्राप्त करते हैं, राजा लोग नहीं।

पुरःसरा धामवतां यशोधना
सुदुः सहं प्राप्य निकारमीदृशम्।
भवादृशाश्चेदधिकुर्वते रतिं
निराश्रया हन्त हता मनस्विता॥43॥

◆ तेजस्वियों में अग्रणी (तथा) यशरूपी धन वाले आप जैसे लोग यदि इस प्रकार के अतीव दुःसह अपमान को प्राप्त करके (भी) सन्तोष करते हैं तो खेद है कि मनस्विता आश्रयहीन होकर नष्ट हो गयी।

अथ क्षमामेव निरस्तविक्रम-
श्चिराय पर्येषि सुखस्य साधनम्।
विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्मकार्मुकं
जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम् ॥44॥

◆ और यदि पराक्रम का परित्याग करके आप क्षमा को ही चिरकाल के लिए सुख का साधन मानते हैं तो राजचिह्न रूप धनुष को त्यागकर और जटा धारण करके यहीं (वन में) अग्नि में होम कीजिए।

न समयपरिरक्षणं क्षमं ते
निकृतिपरेषु परेषु भूरिधाम्नः।
अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः
विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि ॥45॥

◆ शत्रुओं के (आपके प्रति) अपकार में लगे रहने पर, परमतेजस्वी आपके लिए समय की प्रतीक्षा करनी उचित नहीं है अथवा सन्धि के नियमों की रक्षा करनी उचित नहीं है क्योंकि विजय की अभिलाषा वाले राजा लोग शत्रुओं के विषय में (की गयी) सन्धियों को छलपूर्वक भङ्ग कर देते हैं।

विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं
शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ
दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः ॥46॥

◆ विधाता अथवा भाग्य और काल के नियोगवश अत्यन्त गम्भीर आपत्तिरूपी समुद्र में डूबे हुए, प्रकाश नष्ट हो जाने से मन्दप्रभ, शिथिल किरणों वाले, शत्रुरूपी अन्धकार को नष्ट करके उदित होते हुए सूर्य की भाँति आपको शुभसमय प्रातःकाल (अनुकूल समय) में (खोई हुई) राज्यलक्ष्मी पुनः प्राप्त हो।

2. महाकवि भारवि का परिचय

➤ भारवि का प्रामाणिक जीवनवृत्त सर्वथा अप्राप्त है, कुछ किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं।
➤ महाकवि दण्डी विरचित 'अवन्तिसुन्दरीकथा' के अनुसार भारवि का जीवनवृत्त निम्नलिखित है।
➤ भारवि चालुक्यवंशी सम्राट् पुलकेशिन द्वितीय के अनुज विष्णुवर्धन (615 ई0) के मित्र/सभापण्डित/राजकवि थे।

स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
अनुरुध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने॥

➤ भारवि **कुशिक/कौशिक गोत्रीय** ब्राह्मण थे।
➤ भारवि का सम्बन्ध कोङ्कण के गङ्गवंशी नरेश दुर्विनीत और काञ्ची के पल्लववंशी नरेश सिंहविष्णु तथा उनके पुत्र महेन्द्रविक्रम के साथ भी था।
➤ सिंहविष्णु से मिलते समय कवि की अवस्था थी – **बीस वर्ष।**
➤ किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग की संस्कृत टीका लिखी थी – **विद्वान् नरेश दुर्विनीत ने।**
➤ एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार भारवि धारानगरी के निवासी थे।

भारवि के समय निर्धारण में प्रमुख स्रोत

➤ पुलकेशिन द्वितीय का एहोल शिलालेख।
➤ वामन और जयादित्य की काशिकावृत्ति।
➤ गुम्मरेड्डीपुर का पत्रलेख।
➤ महाकवि दण्डी की अवन्तिसुन्दरीकथा और उस पर आधारित 'अवन्तिसुन्दरीकथासार'।
➤ विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु तथा दुर्विनीत की ऐतिहासिकता।
➤ भारवि का जन्मसमय – **560 ई0 के लगभग।**
➤ भारवि का रचनाकाल – **615 ई0 के लगभग।**
➤ भारवि का समय – **600 ई0 के आसपास (555 ई0 से 625 ई0 के मध्य) (छठी शती के उत्तरार्ध से सातवीं शती के पूर्वार्द्ध तक)**
➤ श्री एन0सी0 चटर्जी ने उन्हें **ट्रावनकोर** का निवासी बताया है।
➤ विद्वानों का मानना है कि महाकवि भारवि विष्णुवर्धन, सिंहविष्णु, महेन्द्रविक्रम एवं दुर्विनीत के आश्रय में रहने वाले एक **दाक्षिणात्य कवि** थे।
➤ महाकवि भारवि का जन्म – **नासिक के समीपवर्ती बरारप्रान्त के 'अचलपुर' (एलिचपुर) नामक ग्राम में।**
➤ भारवि **शैवदर्शन** के अनुयायी थे, उन्होंने किरातार्जुनीयम् के 18वें सर्ग में शिवस्तुति की है।
➤ भारवि किस कवि से प्रभावित थे – **कालिदास से**
➤ भारवि से कौन प्रभावित था – **महाकवि माघ**
➤ राजशेखर के अनुसार कालिदास एवं भर्तृमेण्ठ की भाँति भारवि की भी परीक्षा उज्जयिनी में ली गयी थी – "**श्रूयते चोज्जयिन्यां काव्यकारपरीक्षा**"

- **उत्फुल्लस्थलनलिनीवनादमुष्मात्......कनकमयातपत्रलक्ष्मीम् (5/39)** 'किरातार्जुनीयम्' के इस श्लोक की उपमा के कारण ही उन्हें **'आतपत्रभारवि'** की उपाधि मिली।
- **पिता** – (i) श्रीधर, (ii) नारायणस्वामी (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार)
- **माता** – सुशीला
- **पत्नी** – रसिकवती या रसिका
- **पुत्र** – मनोरथ
- **मूल नाम** – दामोदर
- **गोत्र** – कुशिक
- **जन्म स्थान** – (i) दक्षिण भारत में नासिक प्रदेश के **'अचलपुर'** (एलिचपुर), (ii) धारानगरी (अवन्तिसुन्दरी कथा के अनुसार)
- **समय** – छठवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध/सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध

भारवि की वंशपरम्परा

नारायणस्वामी (श्रीधर) – (भारवि के पिता)
↓
भारवि – (दण्डी के प्रपितामह)
↓
मनोरथ – (दण्डी के पितामह)
↓
वीरदत्त-गौरी – (दण्डी के पिता-माता)
↓
दण्डी – (भारवि के प्रपौत्र)

- **सम्प्रदाय** – शैव
- **उपाधि** – 'आतपत्र भारवि'
- **''आधत्ते कनकमयातपत्रलक्ष्मीम्'' (किरात. 5.39)** इस श्लोक में **'कनकमय आतपत्र'** (सोने का छाता) की उपमा को अति सुन्दर मानकर आलोचकों ने कवि का नाम ही **'आतपत्र भारवि'** रख दिया।
- **आश्रयदाता** – 1. विष्णुवर्द्धन (पुलकेशिन द्वितीय के अनुज), 2. सिंहविष्णु (अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार), 3. दुर्विनीत, 4. महेन्द्रविक्रम (सिंहविष्णु का पुत्र)
- राजा दुर्विनीत ने 'किरातार्जुनीयम्' के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी।
- 'भारवि' **दण्डी के प्रपितामह** हैं।
- भारवि की वाणी को **'प्रकृतिमधुरा'** कहा जाता है।
- भारवि महाकाव्यों में **'अलङ्कृतकाव्यशैली'** या **'रीतिशैली' के जन्मदाता हैं।** इनके काव्यमार्ग को **विचित्रमार्ग** कहते हैं।
- श्री एन. सी. चटर्जी भारवि को **'ट्रावनकोर' का निवासी** सिद्ध करते हैं।
- एक किंवदन्ती के अनुसार पिता द्वारा अपमानित भारवि उनके वध के लिए उद्यत हो गये, परन्तु पिता द्वारा उनके हित के लिए डाँटा गया, यह जानकर उन्हें बहुत पश्चात्ताप हुआ, और पिता ने छः माह तक ससुराल में सेवा करने का आदेश दिया।
- भारवि का जन्म 560 ई. के लगभग तथा रचनाकाल 580 ई. के लगभग अधिकांश आलोचकों ने माना है।
- भारवि **'अर्थगौरव'** के लिए प्रसिद्ध हैं।
- आचार्य मल्लिनाथ ने भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' पर **'घण्टापथ'** नाम की टीका लिखी है।

- भारवि राजनीति के प्रकाण्ड पण्डित हैं।
- मल्लिनाथ, भारवि की कविता की उपमा '**नारिकेलफल**' से करते हैं– '**नारिकेलफलसम्मितं वचः**'
- दक्षिण के '**एहोल शिलालेख**' में भारवि का नाम उल्लिखित है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् को '**लक्ष्म्यन्त**' महाकाव्य, माघ के शिशुपालवधम् को '**श्र्यन्त**' महाकाव्य तथा श्रीहर्ष के नैषधीयचरितम् को '**आनन्दान्त**' महाकाव्य कहते हैं।

महाकवि 'भारवि' विषयक प्रशस्तियाँ

1. भारवेरर्थगौरवम्। – **उद्भट**
2. वृत्तच्छत्रस्य सा कापि वंशस्थस्य विचित्रता।
   प्रतिभा भारवेर्येन सच्छायेनाधिकीकृता।।
   – **क्षेमेन्द्र - सुवृत्ततिलक**
3. नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते।
   स्वादयन्तु रसगर्भनिर्भरं सारमस्य रसिका यथेप्सितम्।।
   – **मल्लिनाथ**
4. प्रदेशवृत्यापि महान्तमर्थं प्रदर्शयन्ती रसमादधाना।
   सा भारवेः सत्पथदीपिकेव एषा कृतिः कैरिव नोपजीव्या।।
   – **कृष्णकवि**
5. तादात्म्यं रसभावयोः भारविः स्पष्टमूचिवान्।।
   – **शारदातनय**
6. "प्रकृतिमधुरा भारविगिरः।" – **श्रीधरदास (सदुक्तिकर्णामृत)**
7. वंशस्थवृत्तेन धृतातपत्रो वृत्तेन संदर्शितराजवृत्तिः।
   अर्थप्रकर्षाहृतराजलक्ष्मीर्नृपायते भारविरात्तकीर्तिः।।
   – **आचार्य कपिलदेव द्विवेदी**
8. There is no doubt of the power of Bharvi in describption, his style at its best has a calm dignity which is certainly attractive, while he excels also in the observation and record of the beauties of nature and of maidens.
   हिन्दी अनुवाद – भारवि की वर्णन-शक्ति के विषय में सन्देह को अवसर नहीं है। उनकी शैली उत्कृष्टरूप में शान्त गौरवमयी है जो निश्चय ही आकर्षक है। वे प्रकृति और प्रमदाओं के सौन्दर्य, निरीक्षण और उन्हें चित्रित करने में सर्वश्रेष्ठ हैं।
   – **प्रो. ए. बी. कीथ, संस्कृत साहित्य का इतिहास**
9. स मेधावी कविर्विद्वान् भारविः प्रभवो गिराम्।
   अनुसाध्याकरोन्मैत्रीं नरेन्द्रे विष्णुवर्धने।। – **ऐहोल शिलालेख - रविकीर्ति।**
10. अर्थदीधितिसंवीता, सन्नीरजसुहासिनी।
    अज्ञोलूकनिरानन्दा, भा रवेरिव भारवेः।। – **आचार्य कपिलदेव द्विवेदी**

3. किरातार्जुनीयम् का परिचय

भारवि की रचना

- भारवि की रचना/कृति – **''किरातार्जुनीयमहाकाव्यम्' (एकमात्र कृति)**
- विधा – **महाकाव्य**
- सर्ग – **18 (अठारह)**
- श्लोक – **1040**
- उपजीव्यग्रन्थ – **महाभारत का वनपर्व**
- नायक – **मध्यमपाण्डव अर्जुन (धीरोदात्त)**
- प्रतिनायक – **किरातवेशधारी शिव**
- नायक की प्रकृति – **धीरोदात्त**
- नायिका – **द्रौपदी**
- मुख्य/अङ्गी/प्रधानरस – **वीररस**
- गौण/अङ्गरस – **शृङ्गार आदि**
- रीति एवं गुण – **पाञ्चाली रीति एवं ओजगुण**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में– **वैदर्भी रीति**
- अलङ्कार – **3 शब्दालङ्कार, 60 अर्थालङ्कार, 7 चित्राक्षर**
- भारवि की शैली – **पाण्डित्यप्रधान अलङ्कृतशैली**
- कथानक – **तपस्यारत अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान् शिव से पाशुपतास्त्र की प्राप्ति**
- बृहत्त्रयी में परिगणित महाकाव्य –
  1. भारवि का किरातार्जुनीयम् (सर्ग 18)
  2. माघ का शिशुपालवधम् (सर्ग 20)
  3. श्रीहर्ष का नैषधीयचरितम् (सर्ग 22)
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – **'श्री'** – शब्द से तथा प्रत्येक सर्ग के अन्तिम श्लोक में **'लक्ष्मी'** पद का प्रयोग हुआ है।
- भारवि के काव्य को कहा जाता है – **''लक्ष्मीपदाङ्क''**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में श्लोक/पद्य हैं – **46**
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में छन्द – **वंशस्थ** (1-44 श्लोकों तक)
- 45वें श्लोक में (न समयपरिरक्षणं क्षमं ते....) – **पुष्पिताग्रा छन्द**
- अन्तिम 46वें श्लोक में (विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्) – **मालिनी छन्द**
- अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं – **भारवि** (भारवेरर्थगौरवम्)
- नायक अर्जुन और प्रतिनायक किरात (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम पड़ा – **'किरातार्जुनीयम्'**
- श्रीकृष्णमाचारियर ने किरातार्जुनीयम् की कितनी टीकाओं का उल्लेख किया है – **34**

- किरातार्जुनीयम् की सर्वाधिक प्रसिद्ध, प्रामाणिक एवं सारवती टीका का नाम – **'घण्टापथ' – मल्लिनाथ**
- ''घण्टापथ'' का शाब्दिक अर्थ है – **राजमार्ग**
- किरात की अन्य टीकाओं में सर्वाधिक लोकप्रिय टीका है – **'शब्दार्थदीपिका' – श्री चित्रभानु** (केवल प्रथम तीन सर्गों पर)
- किरातार्जुनीयम् के प्रथम तीन सर्गों को कहा जाता है – **'पाषाणत्रय'**
- भारवि के आश्रयदाता दुर्विनीत ने संस्कृत टीका लिखी – **किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर।**
- 'शब्दावतार' नाम से बृहत्कथा का संस्कृत रूपान्तरण किसने किया – **दुर्विनीत ने**
- किरातार्जुनीयम् का 15वाँ सर्ग प्रसिद्ध है – **चित्रकाव्य के लिए**
- भारवि का एकाक्षर श्लोक – (केवल नकार का प्रयोग)

न नोननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु।
नुन्नोऽनुन्नो ननुन्नेनो नानेना नुन्ननुन्ननुत्॥

(किरात0 – 15/14)

- अर्थगौरव का क्या अर्थ है – अल्पशब्दों में प्रभूत अर्थ का सन्निवेश अर्थात् 'गागर में सागर भरना।'
- **''नारिकेलफलसम्मितं वचः''** मल्लिनाथ का यह कथन किसके लिए है – भारवि के लिए।
- **''प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् से
- **''स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्''** यह वाक्य किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – किरातार्जुनीयम् (2/27)
- किरातार्जुनीयम् का मुख्य कथानक है – अर्जुन द्वारा किरातवेशधारी भगवान् शङ्कर से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।
- अर्जुन पाशुपत अस्त्र के लिए भगवान् शङ्कर को प्रसन्न करने के लिए हिमालय (इन्द्रकील) पर्वत की यात्रा व्यास के कहने पर करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में 'किरात' से तात्पर्य है – **किरातवेषधारी शिव**
- 'किरातार्जुनीयम्' का मङ्गलाचरण है – **वस्तुनिर्देशात्मक**
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का फल है – **नायक अर्जुन को किरातवेशधारी शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति।**
- युधिष्ठिर बारह वर्षों के वनवास के काल में अपने अनुजों और द्रौपदी के साथ कहाँ रहते थे – **द्वैतवन में।**

किरातार्जुनीयम् का नामकरण

- किरातश्च अर्जुनश्च किरातार्जुनौ **(द्वन्द्वसमास)** तौ अधिकृत्य कृतं काव्यम् इति किरातार्जुनीयम्।
- **किरातार्जुन + 'छ'** ('अधिकृत्य कृते ग्रन्थे' के अर्थ में ''छ'' प्रत्यय)
- **'शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः'** सूत्र से ''छ'' प्रत्यय।
- किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीय। (**''आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्''** से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश हो गया)

- ग्रन्थवाची शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं, अतः – 'किरातार्जुनीयम्' पद बना।
- इस प्रकार नायक अर्जुन और प्रतिनायक (शिव) के नाम पर महाकाव्य का नाम **'किरातार्जुनीयम्'** पड़ा।

किरातार्जुनीय महाकाव्य के पात्र

- अर्जुन **(नायक)**, द्रौपदी **(नायिका)**, किरातवेशधारी शिव **(प्रतिनायक)**, श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, भीम, नकुल, सहदेव, वनेचर, दुर्योधन, कर्ण, भीष्म, परशुराम, यक्ष, द्रोण, इन्द्र, व्यास, मूक (शूकर) आदि प्रमुख पात्र हैं।

आचार्य मल्लिनाथसूरि का जीवनचरित्र

- काश्यपगोत्रीय तेलगू ब्राह्मण – **मल्लिनाथ सूरि**
- मल्लिनाथ के पिता – **कार्दिन**
- मल्लिनाथ के दो पुत्र – **पेड्डुभट्ट तथा कुमारस्वामी**
- कुमारस्वामी की रचना – **प्रतापरुद्रयशोभूषण** (काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ)
- मल्लिनाथ की आनुवांशिक उपाधि – **कोलाचल**
- मल्लिनाथ की व्यक्तिगत उपाधि – **महामहोपाध्याय**
- मल्लिनाथ का समय – **14वीं शताब्दी का उत्तरार्ध**

मल्लिनाथ की सुप्रसिद्ध संस्कृत टीकायें

1. रघुवंशमहाकाव्यम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
2. कुमारसम्भवम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
3. मेघदूतम् (कालिदास) – **सञ्जीवनी टीका**
4. किरातार्जुनीयम् (भारवि) – **घण्टापथ टीका**
5. शिशुपालवधम् (माघ) – **सर्वङ्कषा टीका**
6. रावणवध (भट्टि) – **जीवातु टीका**
7. नैषधीयचरितम् (श्रीहर्ष) – **जीवातु टीका**

- इसके अतिरिक्त तार्किकरक्षा, नलोदयकाव्य, प्रशस्तपादभाष्य, और लघुशब्देन्दुशेखर पर भी मल्लिनाथ ने टीका लिखी है।
- इनका पूरा नाम– **महामहोपाध्याय कोलाचल मल्लिनाथसूरि**

किरातार्जुनीय महाकाव्य के टीकाकार

- किरातार्जुनीयम् के प्रसिद्ध टीकाकार – **मल्लिनाथ – ''घण्टापथ टीका''**
- किरातार्जुनीयम् के दूसरे प्रसिद्ध टीकाकार – **चित्रभानु – ''शब्दार्थदीपिका'' (त्रिसागरिका)** (प्रारम्भ के केवल तीन सर्गों पर)
- भारवि के आश्रयदाता दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर संस्कृतटीका लिखी थी।

किरातार्जुनीयम् की संक्षिप्त कथा

- किरातार्जुनीयम् में कौरवों पर विजय प्राप्ति के लिए अर्जुन का हिमालयपर्वत पर जाकर तपस्या करना, किरातवेशधारी शिव से युद्ध और प्रसन्न हुए भगवान् शिव से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।
- **सर्ग – 1.** हस्तिनापुर भेजे गये वनेचर का द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर से मिलना, दुर्योधन के शासन प्रबन्ध का वर्णन तथा युधिष्ठिर के लिए/द्रौपदी का उत्तेजनापूर्ण कथन।
- **सर्ग – 2.** युधिष्ठिर–भीम का संवाद, व्यास का आगमन।
- **सर्ग – 3.** युधिष्ठिर – व्यास संवाद, व्यास द्वारा अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए हिमालय पर जाकर तपस्या करने का आदेश, अर्जुन का प्रस्थान।
- **सर्ग – 4.** शरद् ऋतु का वर्णन।
- **सर्ग – 5.** हिमालय पर्वत का वर्णन।
- **सर्ग – 6.** हिमालय पर अर्जुन की तपस्या, तपोविघ्न के लिए इन्द्र द्वारा अप्सराओं को भेजना।
- **सर्ग – 7.** इन्द्र द्वारा प्रेषित गन्धर्वों और अप्सराओं के आने और उनके विलासों का वर्णन
- **सर्ग – 8.** गन्धर्वों और अप्सराओं का उद्यानविहार और जलक्रीडा।
- **सर्ग – 9.** सायंकाल और चन्द्रोदयवर्णन, सुरतवर्णन तथा प्रभातवर्णन।
- **सर्ग – 10.** वर्षा आदि का वर्णन, अप्सराओं का चेष्टावर्णन तथा उनका प्रयत्न वैफल्य।
- **सर्ग – 11.** मुनिरूप में इन्द्र का आगमन, इन्द्र अर्जुन संवाद, इन्द्र का पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति के लिए अर्जुन को शिवाराधना करने का उपदेश।
- **सर्ग – 12.** अर्जुन की तपस्या, शूकर के रूप में मूक नामक दानव का अर्जुन वध के लिए आगमन, तथा किरातवेशधारी शिव का भी आगमन।
- **सर्ग – 13.** शूकररूपधारी मूकदानव पर शिव और अर्जुन के बाणों का प्रहार, उस वराह की मृत्यु, बाण के विषय में शिव के अनुचर और अर्जुन का विवाद।
- **सर्ग – 14.** सेना सहित शिव का आगमन और सेना के साथ अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 15.** चित्रयुद्ध वर्णन, (चित्रकाव्य)।
- **सर्ग – 16.** शिव और अर्जुन का अस्त्रयुद्ध।
- **सर्ग – 17.** शिव की सेना के साथ अर्जुन का युद्ध, शिव और अर्जुन का युद्ध।
- **सर्ग – 18.** शिव और अर्जुन का बाहुयुद्ध, शिव का वास्तविक रूप में प्रकट होना, इन्द्रादि का आगमन, अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति, इन्द्रादि का अर्जुन को विविध अस्त्र देना, सफल मनोरथ अर्जुन का युधिष्ठिर के समीप पहुँचना।
- सम्भोग शृङ्गार का सुन्दर वर्णन है – **सर्ग 8 और 9 में।**
- युद्ध वर्णन में वीररस का वर्णन है – **सर्ग 13 से 17 तक।**
- उपमा अलङ्कार का सुन्दर प्रयोग है – **सर्ग 13 से 17 में।**
- प्रमुख वर्णनवैचित्र्य – सर्ग 4 में **शरद् वर्णन।**
  – सर्ग 5 में **हिमालय वर्णन।**
  – सर्ग 8 में **जलक्रीडा वर्णन।**
  – सर्ग 9 में **सन्ध्या, चन्द्रोदय और सुरत वर्णन।**
  – सर्ग 12 से 18 तक – **युद्ध वर्णन।**

- अर्थगौरव या अर्थगाम्भीर्य के लिए प्रशंसा की जाती है – **महाकवि भारवि की।**
- भारवि को कौन सा रस सर्वाधिक प्रिय है – **वीर और शृङ्गार रस**
- महाकाव्यों में रीतिशैली के जन्मदाता कवि हैं – **भारवि।**
- ग्रन्थ के आरम्भ में **'श्री'** शब्द तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया गया है – **किरातार्जुनीयम् में।**
- किस कवि का काव्यसौन्दर्य 'नारिकेलफलसम्मितम्' माना गया है – **भारवि का।**
- भारवि की प्रशंसा में कही गयी सूक्तियाँ हैं –
  (1) ''भारवेरर्थगौरवम्'' **(2) ''भा रवेरिव भारवेः''**
  (3) ''प्रकृतिमधुरा भारविगिरः'' **(4) ''नारिकेलफलसम्मितं वचः''**
  (5) ''स्फुटता न पदैरपाकृता''
- केवल 'न' कार को लेकर सर्वप्रथम एकाक्षरी श्लोक लिखने वाले कवि हैं – **भारवि।**
- अपने काव्य में सर्वप्रथम चित्रालङ्कारों का प्रयोग करने वाले कवि हैं – **भारवि** (किरातार्जुनीयम्, सर्ग-15)
- भारवि ने विभिन्न सर्गों में 11 छन्दों का प्रयोग किया है और सर्गान्त श्लोकों में मालिनी और वसन्ततिलका प्रमुख हैं।
- भारवि द्वारा प्रयुक्त मुख्य छन्दों की संख्या है – **13**
- भारवि का अत्यन्त प्रिय छन्द है – **वंशस्थ तथा उपजाति।**
- क्षेमेन्द्र ने वंशस्थ छन्द के लिए प्रशंसा की है – **भारवि की।**
- संस्कृतसाहित्य में रीतिकाव्यपरम्परा के जन्मदाता हैं – **भारवि।**
- किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन को किस नाम से वर्णित किया गया है – **सुयोधन।**
- 'राजनीतिपरक महाकाव्य' कहा गया है – **किरातार्जुनीयम् को**
- शिव और अर्जुन पर आधारित महाकाव्य है – **किरातार्जुनीयम्**
- किरातार्जुनीयम् में एकाक्षर श्लोकों की संख्या है – **7 (सप्त)**
- महाकवि भारवि की मित्रता थी – **चालुक्यवंशी राजा विष्णुवर्धन से**
- भारवि के तीन पुत्र थे, इनके मध्यम पुत्र मनोरथ के चार पुत्र थे, जिनमें एक पुत्र वीरदत्त था इन्हीं वीरदत्त और गौरी के पुत्र दण्डी हुए।
- महाकवि भारवि, दण्डी के प्रपितामह और दण्डी, भारवि के प्रपौत्र थे।
- भारवि **शैव** थे, जबकि **माघ वैष्णव** थे।
- दक्षिण के एहोल शिलालेख में कालिदास और भारवि का नामोल्लेख हुआ। इस शिलालेख का समय 634 ई0 है – **''कविताश्रित-कालिदास-भारवि-कीर्तिः''।**
- गुम्मरेड्डीपुर के शिलालेखों से हमें पता चलता है कि राजा दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् के 15वें सर्ग पर टीका लिखी थी। दुर्विनीत का समय 580 ई0 के आसपास माना जाता है।
- भारवि के किरातार्जुनीयम् का उद्धरण जयादित्य की 'काशिकावृत्ति' में उपलब्ध होता है। मैक्समूलर 'काशिका' का समय 660 ई0 मानते हैं।
- बाणभट्ट (सप्तम शताब्दी) अपने ''हर्षचरित'' में पूर्ववर्ती सभी कवियों का उल्लेख करते हैं, किन्तु उसमें भारवि का नामोल्लेख नहीं है।

- कीथमहोदय भारवि का समय 550 ई० मानते हैं।
- जैकोबी, मैक्डानल, बलदेव उपाध्याय, चन्द्रशेखर पाण्डेय इत्यादि विद्वानों ने भारवि का समय 600 ई० के लगभग मानते हैं।
- शिवजी अर्जुन की तपस्या की परीक्षा के लिए 'किरात' का वेश धारण करते हैं।
- किरातार्जुनीयम् में **मूक दानव** अर्जुन को मारने के लिए मायावी वाराह का रूप धारण करता है।
- महाकाव्यकारों में **कालिदास** और **अश्वघोष** के बाद **भारवि** का नाम लिया जाता है।
- भारवि व्याकरण, वेदान्त, न्याय, धर्म, राजनीति, कामशास्त्र, पुराण, इतिहास आदि के मूर्धन्य विद्वान् थे।
- उदात्त एवं सजीव वर्णन, कमनीय कल्पनाओं, अर्थगौरव, हृदयग्राही शब्दयोजना, कोमलकान्त पदावली, हृदयस्पर्शी एवं रोचक संवाद, अलङ्कारों का चमत्कारिक प्रयोग, कलात्मक काव्यशैली, मनोहर प्रकृतिचित्रण, रसपेशलता, सजीव चरित्रचित्रण इत्यादि महनीय गुणों ने भारवि को महाकवियों में अत्यन्त उच्चस्थान पर प्रतिष्ठित किया है।
- भारवि राजनीतिशास्त्र और नीतिशास्त्र के प्रकाण्ड पण्डित थे।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर की स्वामिभक्ति, सत्यवादिता, निश्छलता, विनम्रता, साहस, स्पष्टवादिता आदि गुणों का चित्रण है।
- द्रौपदी की मानसिकपीड़ा, व्याकुलता, प्रतिकार की तीव्रभावना का वर्णन है।
- अर्जुन की वीरता, भ्रातृभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा का वर्णन है।
- भीम की वीरता, नीतिज्ञता, असहिष्णुता का वर्णन है।
- युधिष्ठिर की नीतिज्ञता, शान्तिप्रियता, धर्मपरायणता इत्यादि का वर्णन है।
- किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के प्रारम्भ में वनेचर की उक्तियों का तथा उत्तरार्ध में द्रौपदी की उक्तियों का चित्रण है।
- सम्पूर्ण प्रथमसर्ग युधिष्ठिर को सम्बोधित करके लिखा गया है।
- भारवि का संस्कृतसाहित्य में '**अलङ्कृतकाव्यशैली**' तथा '**विचित्रमार्ग के जनक**' के रूप में विशिष्ट स्थान है।
- विचित्रमार्ग की विशेषता यह है कि इसमें कथानक बहुत कम होता है और वर्णन अधिक।
- भारवि की अलंकृतकाव्यशैली में पाण्डित्यप्रदर्शन और अलङ्कार सन्निवेश को प्रधानता दी गयी है, इसमें कलापक्ष की प्रधानता तथा भावपक्ष (हृदयपक्ष) की अप्रधानता का वर्णन है।
- कालिदास के प्रमुख छन्द 6 हैं, भारवि के 13 और माघ के 16 माने गये हैं।
- भारवि ने **वंशस्थ छन्द** का सर्वाधिक प्रयोग किया है, इसके अतिरिक्त इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, प्रमिताक्षरा, प्रहर्षिणी, स्वागता, पुष्पिताग्रा, आदि का प्रयोग मिलता है।
- भारवि **वीररस** के सिद्धहस्त कवि हैं।

- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर के मुख से किसी उक्ति (कथन) को नहीं कहलाया गया है।
- महाकवि भारवि की **एकमात्र रचना 'किरातार्जुनीय'** का उपजीव्य महाभारत के वनपर्व की एक घटना है।
- किरातश्च अर्जुनश्च (द्वन्द्व) = किरातार्जुन + 'छ' प्रत्यय लगकर 'किरातार्जुनीय' शब्द बना है। ग्रन्थवाची होने पर नपुंसकलिङ्ग में 'किरातार्जुनीयम्' बना।
- इसमें अर्जुन का हिमालय पर्वत पर जाकर तपस्या करने व किरातवेषधारी भगवान् शिव से युद्ध करके उन्हें प्रसन्न कर **'पाशुपत अस्त्र'** प्राप्त करने की कथा है।
- 'किरात' में कुल **18 सर्ग और 1040 श्लोक** हैं।
- 'किरातार्जुनीय' में **कुल 25 छन्दों और मुख्यतः 13 छन्दों का** प्रयोग हुआ है।
- भारवि का **अत्यन्त प्रिय छन्द वंशस्थ** है। तत्पश्चात् उन्होंने **उपजाति** का ज्यादा प्रयोग किया है। 4 सर्गों में वंशस्थ, 3 सर्गों में उपजाति प्रयुक्त है।
- भारवि ने 3 शब्दालंकार, 60 अर्थालंकार और 7 चित्राक्षर अलंकारों का प्रयोग किया है। सर्वाधिक उपमा अलंकार प्रयुक्त है।
- भारवि ने 'किरात' के **15वें सर्ग में** युद्ध प्रसङ्ग में **चित्रालंकारों** का प्रयोग किया है।
- किरातार्जुनीय में **'वीर रस' मुख्य रस** है तथा 'शृंगार' गौण रस है।
- किरात में **'पाञ्चाली रीति'** और 'प्रसाद गुण' है, किन्तु वैदर्भीरीति का भी प्रयोग बाहुल्य है।
- किरात का **नायक 'अर्जुन'** (कहीं-कहीं युधिष्ठिर प्राप्त होता है), **प्रतिनायक किरातवेषधारी 'शिव'** तथा **नायिका 'द्रौपदी'** हैं।
- 'किरात' के 18वें सर्ग में शिव की अत्यन्त भावुक स्तुति की गई है।
- भारवि का प्रसिद्ध **एकाक्षर श्लोक** (न नोननुन्नो....) 15वें सर्ग में मिलता है।
- भारवि ने मङ्गलाचरण में **'श्री' शब्द** तथा सर्गान्त श्लोकों में **'लक्ष्मी'** शब्द का प्रयोग किया है।
- क्षेमेन्द्र ने भारवि के वंशस्थ वृत्त की प्रशंसा की है और वंशस्थ को राजनीतिक चर्चा के लिए सर्वाधिक उपयुक्त माना है।
- काव्य का आरम्भ **'द्वैतवन'** से होता है जहाँ महाराज युधिष्ठिर द्यूतक्रीड़ा में दुर्योधन से हारकर **'तेरह वर्ष'** का वनवास काट रहे होते हैं।
- युधिष्ठिर द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेष वाला गुप्तचर वनेचर लौटकर आता है और दुर्योधन के राज्य की शासन प्रणाली का वर्णन करता है।
- द्रौपदी इस समाचार से अत्यधिक क्रुद्ध हुयी और युधिष्ठिर को युद्ध के लिए प्रोत्साहित करती है।
- द्वितीय सर्ग में महर्षि व्यास आते हैं और अर्जुन को पाशुपत अस्त्र प्राप्त करने की सलाह देते हैं।
- अर्जुन तपस्या हेतु **इन्द्रकील** (हिमालय) पर जाते हैं।
- किरातार्जुनीय के प्रारम्भिक तीन सर्ग विशेष कठिन हैं अतः उन्हें **'पाषाण-त्रय'** के नाम से जाना जाता है।

- अर्जुन को **18वें सर्ग में पाशुपत अस्त्र प्राप्त** होता है।
- प्रथमसर्ग के अन्तिम दो श्लोकों में क्रमशः पुष्पिताग्रा और 'मालिनी' छन्दों का प्रयोग हुआ है। प्रथमसर्ग का अन्तिम श्लोक **'विधिसमयनियोगात् ....'** है।
- **'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती'** भारवि की भाषा तथा शैली का द्योतक महनीय मन्त्र है।
- भारवि के किरात के **'प्रथमसर्ग' में कुल 46 श्लोक** हैं।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग का सारांश)

- 'किरातार्जुनीयम्' में **'वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण'** किया गया है।
- दुर्योधन के प्रजाविषयक व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने वनेचर को नियुक्त किया था।
- युधिष्ठिर को प्रणाम करके उसने शत्रु द्वारा जीती गयी पृथ्वी का वर्णन किया। ऐसा करते हुए किरात का मन खिन्न नहीं हुआ।
- शत्रुओं के नाश के लिए यत्न करने वाले युधिष्ठिर की आज्ञा पाकर वह एकान्त में अपनी बात कहता है।
- वनेचर कहता है कि सेवकों द्वारा गुप्तचर रूपी नेत्र वाले 'स्वामी' को धोखा नहीं दिया जाना चाहिए।
- जो स्वामी को उचित सलाह न दे वह बुरा मित्र है और जो स्वामी हितैषी मित्र की न सुने वह बुरा स्वामी है।
- राजाओं का चरित्र स्वभाव से ही कठिनाई से जानने योग्य होता है। वनेचर जो कुछ जान पाया वह युधिष्ठिर का प्रभाव है।
- दुर्योधन अब 'जुएँ' में जीती गई पृथ्वी को 'नीति' से जीतना चाहता है।
- युधिष्ठिर को जीतने के लिए दुर्योधन अपने गुणों से यश का विस्तार करता है।
- दुर्योधन अपने छः शत्रुओं - काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य पर विजय प्राप्त कर लिया।
- दुर्योधन सेवकों से मित्र जैसा, मित्रों से भाइयों जैसा और भाई-बन्धुओं को शासक मानकर व्यवहार करता है।
- दुर्योधन का मधुर वचन दान के बिना नहीं होता, दान आदर-सत्कार को छोड़कर नहीं होता और विशेष आदर गुणों के अनुराग के बिना नहीं होता।
- जितेन्द्रिय दुर्योधन 'अपना कर्तव्य मानकर धर्म-विप्लव' को दण्ड से रोकता है अन्य कारण से नहीं।
- राजाओं के उपहारस्वरूप प्राप्त हाथियों के मदजल से दुर्योधन का आँगन गीलेपन को प्राप्त है।
- कुरुदेश के निवासी कृषि के लिए वर्षा जल पर निर्भर नहीं रहते। कुरुप्रदेश की कृषि अदेवमातृक है।
- दुर्योधन के 'कुबेर' सदृश गुणों से द्रवित पृथ्वी स्वयं धनरूपी दुग्ध देती है।
- दुर्योधन के धनुर्धर लोग मानरूपी धन वाले, धन से सम्मानित और युद्ध में यश पाने वाले हैं।
- महीपाल लोग दुर्योधन के गुणों में अनुराग के कारण उसके आदेश को 'माला' की भाँति शिरोधार्य करते हैं।
- दुर्योधन ने दुःशासन को 'युवराज' नियुक्त किया है।

- वनेचर प्रथमसर्ग के 25वें श्लोक तक का वक्ता है और उसके चले जाने पर युधिष्ठिर द्रौपदी के आवास में प्रवेश करते हैं।
- 'बुरी मनोव्यथाएँ' द्रौपदी को बोलने के लिए उद्यत करती हैं।
- द्रौपदी कहती है युधिष्ठिर ने मदस्रावी हाथी के समान पृथ्वी को माला की तरह अपने हाथ से त्याग दिया।
- सफल क्रोध वालों के वश में प्राणी स्वयं हो जाता है।
- **वृकोदर (भीम)** धूलधूसरित होकर पैदल ही पर्वतों में घूमता है।
- इन्द्र के समान पराक्रमी अर्जुन ने 'उत्तरकुरुदेश' को जीतकर प्रचुर धन युधिष्ठिर को दिया था, वह अब **'वल्कल वस्त्र'** संग्रह करता है।
- नकुल और सहदेव का शरीर वन में सोने के कारण कठोर हो गया है और दोनों जुड़वे हाथियों के समान हैं।
- युधिष्ठिर कुशवाली भूमि पर सोकर शृगाली (सियारिनियों) के शब्दों से निद्रा का परित्याग करते हैं।

किरातार्जुनीयम् के पात्रों का चरित्र-चित्रण

युधिष्ठिर

- सत्य का पालन करने वाले।
- धर्म पर दृढ़ रहने वाले।
- सहनशील और राजनीतिकुशल।
- द्रौपदी और भीम द्वारा उलाहना दिये जाने पर भी उनके मन में विकार उत्पन्न नहीं होता।
- प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर एक भी वाक्य नहीं बोलते हैं, केवल श्रोता के रूप में उनका वर्णन है।
- जुयें में हारकर वन में निवास करते हुए भी युधिष्ठिर हस्तिनापुर के राजा दुर्योधन के विचारों, उद्देश्यों और कार्यों को जानने के लिए वनेचर को गुप्तचर के रूप में भेजते हैं।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में भारवि ने भले ही युधिष्ठिर के मुख से कोई बात नहीं कहलवायी हो, फिर भी वनेचर एवं द्रौपदी के कथनों द्वारा उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं।
- भारवि ने पाँचों पाण्डवों के ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर को एक कुशल राजनीतिज्ञ, प्रतिज्ञापालक, संयमी एवं धैर्यशाली, सत्यप्रिय, शान्तिप्रिय, धर्मात्मा एवं शास्त्रज्ञ के रूप में चित्रित किया है।

वनेचर

- गुप्तचरों के लिए चार प्रकार के गुण बताये गये हैं – अमूढ़ता, अशैथिल्य, सत्यपरता और ठीक प्रकार से अनुमान कर सकने की क्षमता। युधिष्ठिर द्वारा गुप्तचर बनाकर भेजे गए वनेचर में ये सभी गुण विद्यमान थे।
- वनेचर ब्रह्मचारी के वेश में हस्तिनापुर जाकर सुयोधन (दुर्योधन) के सभी विचारों, योजनाओं, कार्यों और उद्देश्यों को ठीक प्रकार से समझता है, और द्वैतवन में आकर युधिष्ठिर को सम्पूर्ण वृत्तान्त बताता है।
- यद्यपि वनेचर द्वारा लाये गये समाचार युधिष्ठिर के लिए अप्रिय थे, तथापि वह उनको कहने में हिचकिचाया नहीं।

- वनेचर कार्यदक्ष था, उसने दुर्योधन की दुरभिसन्धियों, दुःश्चिंतन और युद्ध की पूर्ण तैयारियों को ठीक प्रकार से जान लिया और राजा युधिष्ठिर से सुस्पष्ट और प्रभावशाली ढंग से वहाँ के सभी गूढ़ रहस्यों को व्यक्त किया।
- वनेचर की वाणी, सौष्ठव और औदार्य गुणों से युक्त थी, और उसके कथन, प्रमाण और तर्कों से पूर्ण निश्चित अर्थों को व्यक्त करने वाले होते थे –

''स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे।''
(किरात० 1/3)

- वह राजा युधिष्ठिर का सच्चा हितैषी था, और अप्रिय लगने वाले भी हितकारी वचनों को कहने में कोई संकोच नहीं करता–

''न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः''
(किरात० 1/2)

- वनेचर अतिविनम्र था और अपनी सफलता के लिए अपने स्वामी युधिष्ठिर की कृपा को ही श्रेय देता है –

''तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया, निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्''
(किरात० 1/6)

- इसप्रकार सम्पूर्ण प्रथमसर्ग में वनेचर को एक कुशल गुप्तचर, सच्चा हितैषी, शिष्टाचारी एवं निरहंकारी, स्वामिभक्त, सत्यवादी, वाक्पटु, निरालस्य, निश्छल, कर्त्तव्यनिष्ठ, विनम्र, निर्भीक, साहसी, स्पष्टवादी, गुणी, कार्यकुशल एवं अत्यन्त बुद्धिमान् के रूप में चित्रित किया गया है।

सुयोधन (दुर्योधन)

- महाकवि भारवि ने दुर्योधन को सुयोधन नाम से अभिहित किया है, जो कुरु प्रदेश का राजा है–**''श्रियः कुरूणामधिपस्य'' (किरात. 1/1)**
- क्योंकि उसको सुखपूर्वक जीता जा सकता था अथवा उसकी नीतियाँ प्रजा को सुख पहुँचाने वाली थीं।
- किरातार्जुनीयम् का 'सुयोधन' कामक्रोधादि रिपुओं को जीतने वाला, प्रजावत्सल एवं आदर्श राजा बनने का दिखावा करता है। – **''स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः''**
(किरात० 1/10)
- दुर्योधन के राज्य की स्थिरता और सुख प्रजा और सेवकों की अनुरक्ति पर निर्भर है।
- सुयोधन अपने राष्ट्र को धन-धान्य से समृद्ध बनाने के लिए कृषि की उन्नति हेतु कृत्रिम सिंचाई के साधन उपलब्ध कराता है।

''सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैः'' (किरात० 1/17)

- सुयोधन अहंकार से शून्य होकर सेवकों के साथ मित्रों के समान तथा मित्रों के साथ बन्धु-बान्धव की तरह व्यवहार करता था –

''सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः'' – (किरात० 1/10)

- दुर्योधन पराक्रमी शूरवीरों को अपने आस-पास एकत्र किए रहता था जो उसके उत्तम व्यवहार से प्रभावित होकर अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी उसका हित करना चाहते थे –

''महौजसो मानधनाः धनार्चिताः....प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्।''
(किरात० 1/19)

- यद्यपि दुर्योधन कुटिल स्वभाव वाला है किन्तु आपको जीतने की इच्छा से वह अपने शुभ्र यश एवं पुरुषार्थ को फैला रहा है और प्रजा को यह दिखलाने का प्रयास करता है कि वह निरहंकारी, निरालस्य तथा युधिष्ठिर से कहीं अधिक गुणवान्, दयावान्, क्षमावान्, सत्यवादी तथा धर्मज्ञ है –
  ''तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।''
  (किरात० 1/8)
- राजाओं द्वारा भय के कारण नहीं, अपितु श्रद्धा और प्रेम के कारण दुर्योधन के आदेशों का पालन किया जाता था – **''गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते'' (किरात० 1/21)**
- दुर्योधन को कभी क्रोध करने अथवा शस्त्रों को उठाने की आवश्यकता नहीं होती थी –
  ''कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्'' (किरात० 1/21)
- राजनीति के छः अंगों – सन्धि, विग्रह, यान, आसन, संशय और द्वैधीभाव का प्रयोग करने में सुयोधन (दुर्योधन) कुशल था।
- साम, दान, दण्ड, भेद– इन चारों उपायों का सुयोधन सफलतापूर्वक प्रयोग करता था – **''निरत्ययं साम न दानवर्जितम्'' (किरात० 1/12)**
- न्याय करने में दुर्योधन कभी पक्षपात नहीं करता था –
  ''गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्''
  (किरात० 1/13)
- इस प्रकार सुयोधन नीतिज्ञ एवं कुशल प्रशासक, प्रजावत्सल, कुशल राजनीतिज्ञ, राजाओं के प्रति उदार, कूटनीतिज्ञ, उदारवादी राजा के रूप में किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में चित्रित है।

द्रौपदी

- किरातार्जुनीयम् की सबसे महत्त्वपूर्ण नारीपात्र द्रौपदी है, जो इस **महाकाव्य की नायिका** है।
- प्रथमसर्ग में द्रौपदी की मानसिक पीड़ा एवं अपमानजन्य वेदना अभिव्यक्त होती है।
- वनेचर द्वारा बतायी गयी दुर्योधन की कार्यप्रणालियों एवं सफलता को युधिष्ठिर से सुनकर द्रौपदी का क्रोध उद्दीप्त हो उठता है।
- युधिष्ठिर की नीतियाँ, सत्यप्रतिज्ञा के पालन और शान्तस्वभाव के कारण सबसे अधिक कष्ट द्रौपदी को झेलने पड़ते हैं।
- दुर्योधन से प्रतिशोध लेने की आकांक्षा सबसे अधिक द्रौपदी को है।
- द्रौपदी ओजस्विनी वाणी द्वारा युधिष्ठिर के क्रोध को उद्दीप्त करने का प्रयत्न करती है – **''उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः'' (किरात० 1/27)**
- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि तुम जैसा और कौन होगा, जो स्वयं ही अपनी राजलक्ष्मी और कुलवधू को शत्रुओं द्वारा अपहरण करा दे –
  ''परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेत्........'' (किरात० 1/31)

- वह युधिष्ठिर को क्षत्रियों तथा राजाओं के समान आचरण करने का उपदेश करती है, और उसकी सत्यप्रतिज्ञा को ढोंग कहती है।
- द्रौपदी पहले भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव के वन में प्राप्त होने वाले कष्टों का वर्णन करती है और उसके बाद स्वयं युधिष्ठिर को होने वाले दुःखों और अपमानों को बताती है – **''पुराधिरूढः शयनं महाधनम्'' (किरात० 1/38)**
- द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि जो मनुष्य क्रोध नहीं कर सकता, शत्रु उससे भय नहीं करते और मित्र उसका आदर नहीं करते –**''न जातहार्देन न विद्विषादरः''** **(किरात० 1/33)**
- वह युधिष्ठिर से कहती है कि वह किसी बहाने से सन्धि को तोड़ दे और समय की प्रतीक्षा न करके अपने पराक्रम से शत्रुओं को जीत लें – **''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते''......। (किरात० 1/45)**
- शान्ति और क्षमा मुनियों के लिए ही उचित है, राजाओं के लिए नहीं, यदि शान्ति और क्षमा का पालन नहीं करना है तो उसको राजाओं के चिह्न धनुष को छोड़कर जटाओं को धारण करके अग्नि में आहुति देते रहना ही उचित है। यह बात द्रौपदी युधिष्ठिर से कह रही है– **''जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्'' (किरात० 1/44)**
- इसप्रकार द्रौपदी को एक वीरक्षत्राणी, कुशल राजनीतिज्ञा, स्वाभिमानिनी, कूटनीतिज्ञा, अपमान से दुखी, सहृदया एवं क्रोधोद्दीपन में दक्ष नारी के रूप में चित्रित किया गया है।

किरातार्जुनीयम् की व्याकरणात्मक टिप्पणी

लट्लकार

- **इच्छन्ति** = √इष् (इच्छायाम्) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै०)
- **अर्हसि** = √अर्ह् (पूजायाम्) + लट् + म. पु. एक. (परस्मै०)
- **शास्ति** = √शास् (शिक्षा देना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै०)
- **संशृणुते** = सम् + √श्रु + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने०)
- **कुर्वते** = √कृ (करना) + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने०)
- **समीहते** = सम् + √ईह् (चेष्टा करना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **तनोति** = √तन् (विस्तार करना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै.)
- **वितन्यते** = वि + √तन् (विस्तार करना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मनेपदी) यहाँ कर्मणि 'त' प्रत्यय हुआ है।
- **दर्शयते** = √दृश् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **बाधते** = √बाध् (पीड़ा देना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने०)
- **प्रवर्तते** = प्र + √वृत् (होना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने०)
- **निहन्ति** = नि + √हन् (मारना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै०)
- **उपैति** = उप + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै०)

- **वदन्ति** = √वद् (बोलना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **फलन्ति** = √फल् (फलना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **नयति** = √नी (ले जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **चकासति** = √चकासृ + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)

नोट – यहाँ अदादिगण पठित ''चकासृ'' (दीप्तौ) शोभार्थक धातु से लट्लकार प्र. पु. बहु. में प्राप्त झि प्रत्यय को **''जक्षित्यादयः षट्''** सूत्र से 'चकासृ' के अभ्यस्त होने के कारण **''अति''** आदेश होकर **''चकासति''** रूप निष्पन्न होता है।

लट्लकार में इसका रूप इस प्रकार चलेगा–

चकास्ति	**चकास्तः**	**चकासति**
चकास्सि	**चकास्थः**	**चकास्थ**
चकास्मि	**चकास्वः**	**चकास्मः**

- **प्रदुग्धे** = प्र + √दुह् (दुहना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **वाञ्छन्ति** = √वाञ्छ् (चाहना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **प्रतीयते** = प्रति + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **वेद** = √विद् (जानना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

विशेष – अदादिगण की **''विद् ज्ञाने''** धातु से लट्लकार में **''विदो लटो वा''** (3.4.83) सूत्र से, णलादि (णल्, अतुस्, उस्) आदेश होकर **''वेद, विदतुः, विदुः रूप** निष्पन्न होता है, एवं पक्ष में, **'वेत्ति, वित्तः, विदन्ति'** इत्यादि। (णलादि आदेश विकल्प से होते हैं)

- **उह्यते** = √वह् (ढोना) + लट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **धिनोति** = √धिवि + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **चिन्तयति** = √चिन्त् (सोचना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **व्यथते** = √व्यथ् + लट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **भवति** = √भू (होना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **व्यवसाययन्ति** = वि + अव + √षो + लट् प्र. पु. बहु0 (परस्मै0)
- **व्रजन्ति** = √व्रज् (जाना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **भवन्ति** = √भू (होना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **घ्नन्ति** = √हन् (मारना) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **ज्वलयति** = √ज्वल् + णिच् + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **दुनोति** = √दु (पीड़ा) लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **करोति** = √कृ (करना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **उत्सहसे** = उद् + √सह् + लट् + म. पु. एक. (आत्मने0)
- **रुजन्ति** = √रुज् (हिंसा) + लट् + प्र. पु. बहु. (परस्मै0)
- **विबोध्यसे** = वि + √बुध् + णिच् म. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **जहासि** = √ओहाक् (हा) + लट् + म. पु. एक. (परस्मै0)

- **परैति** = परा + √इण् (जाना) + लट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **निषीदतः** = नि + √सद् + लट् + प्र. पु. द्विव. (परस्मै0)
- **उन्मूलयति** = उद् + √मूल् + णिच् + लट् प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **अधिकुर्वते** = अधि + √कृ + लट् + प्र. पु. बहु. (आत्मने0)
- **पर्येषि** = परि + √इण् (जाना) + लट् + म. पु. एकवचन

लङ्लकार

- **अयुङ्क्त** = √युज् + लङ् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **अरञ्जयत्** = √रञ्ज् + णिच् + लङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **अयच्छत्** = √दाण् (यच्छ, आदेश) + लङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

लिट्लकार

- **समाययौ** = सम् + आङ् + √या + लिट् प्र. पु. एक. (परस्मै0)
- **विव्यथे** = √व्यथ् (दुःखित होना) + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)
- **आददे** = आङ् + √दा (देना) + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने0)
- **आचचक्षे** = आङ् + √चक्ष् + लिट् + प्र. पु. एक. (आत्मने.)

लोट्लकार

- **विधीयताम्** = वि + √धा + लोट् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)
- **सन्धेहि** = सम् + √धा + लोट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **प्रसीद** = प्र + √सद् + (बैठना) लोट् + म. पु. एक. (परस्मै0)
- **समभ्येतु** = सम् + अभि + √इण् + लोट् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

लुङ् लकार

अवेदि = √विद् (ज्ञानार्थक) + लुङ् + प्र. पु. एक. (कर्मवाच्य)

विधिलिङ्

अपहारयेत् = अप + √हृ + णिच् + विधिलिङ् + प्र. पु. एक. (परस्मै0)

किरातार्जुनीयम् में प्रत्यय

क्विप्-प्रत्यय

- **श्रियः** = श्रयति पुरुषम् अर्थ में श्री + क्विप् = श्री, ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से 'श्री' शब्द में कर्म अर्थ में षष्ठी एक.
- **महीभुजे** = महीं भुनक्ति अर्थ में मही + भुज् + क्विप् = (चतुर्थी एक.)
- **द्विषाम्** = द्विषन्ति इस अर्थ में √द्विष् + क्विप् ''कर्तृकर्मणोः कृति'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति होकर बहुवचन में 'द्विषाम्' निष्पन्न हुआ।
- **भूभृतः** = भुवं विभर्ति अर्थ में भू + √भृ + क्विप् (षष्ठी एक.)

- **सम्पदः** = सम् + √पद् + क्विप्, (प्रथमा बहु.)
- **विद्विषाम्** = द्वेष्टि अर्थ में वि + √द्विष् + क्विप्, (षष्ठी बहु.)
- **प्रीतियुजः** = प्रीत्या युज्यन्ते अर्थ में प्रीति + √युज् + क्विप् = प्रीतियुज् (द्वितीया बहु.)
- **धनुर्भृतः** = धनु + √भृ + क्विप् (प्रथमा बहु.)
- **संयति** = सम् + √यम् + क्विप् = संयत् (सप्तमी एक.)
- **महीभृताम्** = मही + √भृ + क्विप् (षष्ठी बहु.)
- **भियः** = √भी + क्विप् = प्रथमा बहु.
- **मादृशः** = अस्मद् + √दृश् + क्विन्
- **मदच्युता** = मद + √च्यु + क्विप् (तृतीया एक.)
- **आपदाम्** = आङ् + √पद् + क्विप् (षष्ठी बहु.)
- **विद्विषा** = वि + √द्विष् + क्विप् (तृतीया एक.)
- **धियम्** = √ध्यै + क्विप् (द्वितीया एक.)
- **आपदम्** = आङ् + √पद् + क्विप् (द्वितीया एक०)
- **दिनकृतम्** = दिनं करोति अर्थ में, दिन + √कृ + क्विप् (द्वितीया एक.)

क–प्रत्यय

- **अधिपस्य** = "अधि पाति रक्षति" इस अर्थ में अधि + √पा + क = अधिप, षष्ठी एकवचन
- **नृपासनस्थः** = नृपस्य आसनं नृपासनं सिंहासनम्, तस्मिन् स्थितः अर्थ में नृप + आसन + √स्था + क
- **कृतज्ञताम्** = कृत + √ज्ञा + क = कृतज्ञ + तल् + टाप् द्वितीया, एकवचन
- **सङ्कुलम्** = सम् + कुल + क
- **भवादृशः** = भवत् + √दृश् + कञ्

युच् प्रत्यय

- **सुयोधनः** = सु + √युध् + युच् (अन)
- **दुःशासनम्** = दुर् + √शास् + युच् (अन) दुःशासन (द्वितीया एक.)

ल्युट्-प्रत्यय

- **पालनीम्** = पाल् + ल्युट् + ङीप्, द्वितीया एक.
- **दानम्** = दा + ल्युट् (अन)
- **कारणः** = √कृ + णिच् + ल्युट् (अन)
- **आस्थानम्** = आङ् + √स्था + ल्युट् (अन)
- **निकेतनम्** = नि + √कित् + ल्युट् (अन)
- **उपायनम्** = उप + √इण् + ल्युट् (अन)
- **उपमानम्** = उप + √मा + ल्युट् (अन)
- **आननम्** = आङ् + √अन् + ल्युट् (अन)

- **शासनम्** = √शास् + ल्युट् (अन)
- **अभिधानम्** = अभि + √धा + ल्युट् (अन)
- **सदनम्** = √सद् + ल्युट् (अन)
- **अनुशासनम्** = अनु + √शास् + ल्युट् (अन)
- **साधनम्** = √साध् + ल्युट्
- **चन्दनम्** = √चन्द् + ल्युट् (अन)
- **शयनम्** = √शीङ् + ल्युट् (अन), द्वितीया एक.
- **परिरक्षणम्** = परि + √रक्ष् + ल्युट् (अन)
- **दूषणम्** = √दुष् + णिच् + ल्युट् (अन)

टाप् – प्रत्यय

- **लब्धा** = √लभ् + क्त + टाप्
- **विरोधिता** = विरोधिन् + तल् + टाप्
- **सत्क्रिया** = सत् + √कृ + श + (रिङ् आदेश) + टाप्
- **कृष्णा** = √कृष् + नक् + अच् + टाप्
- **ततस्त्याः** = तद् + तसिल् = ततस्, "अव्ययात्त्यप्" सूत्र से त्यप् प्रत्यय, ततस् + त्यप् + टाप् = ततस्त्या, (द्वितीया बहु.)
- **क्षमा** = क्षम् + अङ् + टाप्
- **आत्मजा** = आत्मन् + √जन् + ड + टाप्
- **प्रमदा** = प्र + √मद् + अच् + टाप्
- **अपवर्जिता** = अप + √वृज् + णिच् + क्त + टाप्
- **अनुरक्ता** = अनु + √रञ्ज् + क्त + टाप्
- **कुलजा** = कुल + √जन् + ड + टाप्
- **मनोरमा** = मनस् + √रम् + अच् + टाप्
- **कठिनीकृता** = कठिन + च्वि + कृता। कृ + क्त + टाप् = कृता
- **शय्या** = √शीङ् + क्यप् + टाप्
- **हता** = √हन् + क्त + टाप्
- **स्पृहा** = स्पृह् + अङ् + टाप्
- **मनस्विता** = मनस्विन् + तल् + टाप्
- **प्रजासु** = प्र + √जन् + ड + टाप् (सप्तमी बहु.)
- **जिताम्** = √जि + क्त + टाप् (द्वितीया एक.)
- **अनुज्ञाम्** = अनु + √ज्ञा + अङ् + टाप् (द्वितीया. एक.)
- **जिगीषया** = √जि + सन् + अ + टाप् (तृतीया एक.)
- **उपस्नुता** = उप + √स्नु + क्त + टाप्
- **अगम्यरूपाम्** = अगम्य + √रूपप् + टाप् (द्वितीया एक.)
- **आर्द्रता** = आर्द्र + तल् + टाप्।
- **बन्धुताम्** = बन्धु + तल् + टाप् (द्वितीया एक.)

- **सत्क्रिया** = सत् + √कृ + श + रिङ् + इयङ् + टाप्
- **प्रशान्ताः** = प्र + √शम् + क्त + टाप् (द्वितीया बहु०)
- **अभिरक्षया** = अभि + √रक्ष् + अ + टाप् (तृतीया एक.)

क्तिन् – प्रत्यय

- **वृत्तिम्** = √वृत् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **रतिम्** = √रम् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **भूतिम्** = √भू + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **भक्तिम्** = √भज् + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **आयतिः** = आङ् + √यम् + क्तिन्
- **कीर्तिम्** = √कृ + क्तिन् (द्वितीया एक.)
- **प्रवृत्तिः** = प्र + √वृत् + क्तिन्
- **सिद्धिम्** = √सिध् + क्तिन्
- **आकृतिः** = आङ् + √कृ + क्तिन्
- **धृतिः** = √धृ + क्तिन्
- **स्तुतिः** = √स्तु + क्तिन्
- **शान्तिः** = √शम् + क्तिन्
- **गीतिः** = √गै + क्तिन्
- **निकृतिः** = नि + √कृ + क्तिन्
- **क्षितिः** = √क्षि + क्तिन्
- **दीप्तिः** = √दीप् + क्तिन्
- **द्विजातिः** = द्वि + √जन् + क्तिन्

तुमुन्-प्रत्यय

- **वेदितुम्** = √विद् + तुमुन्
- **प्रवक्तुम्** = प्र + √वच् + तुमुन्
- **विधातुम्** = वि + √धा + तुमुन्
- **जेतुम्** = √जि + तुमुन्
- **समीहितुम्** = सम् + √ईह् + तुमुन्
- **कर्तुम्** = √कृ + तुमुन्
- **विनियन्तुम्** = वि + नि + √यम् + तुमुन्
- **बाधितुम्** = √बाध् + तुमुन्

सर्वनाम–रूप

- **यम्** = 'यत्' सर्वनाम से पुंलिङ्ग में द्वितीया एक.
- **तत्र** = तद् सर्वनाम शब्द से सप्तमी के अर्थ में त्रल् प्रत्यय
  तद् + त्रल् = तत्र
- **ततः** = तद् सर्वनाम शब्द से, पञ्चमी के अर्थ में तसिल् प्रत्यय तद् + तसिल्

इनि-प्रत्यय

- **वर्णिलिङ्गी** = 'वर्णः प्रशस्तः अस्य' अस्ति इस अर्थ में वर्ण + इनि = वर्णिन् । वर्णिनः लिङ्गं चिह्नम् अस्य अस्ति सः वर्णिन् + लिङ्ग + इनि = वर्णिलिङ्गी
- **दन्तिन्** = √दन्त् + इनि
- **वशी** = वश् + इनि = वशिन् (प्रथमा एक.)
- **देहिनः** = देहि + इनि = देहिन् (प्रथमा बहु.)

क्त-प्रत्यय

- **विदितः** = √विद् + क्त (भावे नपुंसके) = विदितम् (वेदनम्) अस्य अस्ति इति विदितः, अर्शादिगण में आने वाले शब्दों के समान होने के कारण 'विदितम्' शब्द से 'अर्शादिभ्योऽच्' से मत्वर्थीय 'अच्' प्रत्यय होकर विदितः शब्द निष्पन्न हुआ।
- **रुतः** = रु + क्त
- **कृतः** = √कृ + क्त
- **निश्चित** = √निस् + चि + क्त
- **युक्तैः** = √युज् + क्त (तृतीया बहु.)
- **हितम्** = √धा + क्त। (नपुंसक लिङ्ग भावे क्त प्रत्यय)
- **उपनीतम्** = उप + √नी + क्त
- **चरितम्** = √चर् + क्त
- **निगूढः** = नि + √गुह् + क्त
- **अस्तम्** = √अस् + क्त
- **सन्ततम्** = सम् + √तन् + क्त
- **सक्तः** = √सञ्ज् + क्त
- **वर्जितम्** = √वृज् + क्त
- **उपदिष्टम्** = उप + √दिश् + क्त
- **निवृत्तम्** = नि + √वृत् + क्त
- **अनारतम्** = नञ् + आङ् + √रम् + क्त
- **लम्भिताः** = √लभ् + णिच् + क्त (प्रथमा बहु.)
- **परिबृंहितः** = परि + √बृह् + णिच् + क्त
- **कृष्टः** = √कृष् + क्त
- **अर्चितः** = √अर्च् + णिच् + क्त, अथवा अर्चा अस्य अस्ति अर्थ में अर्चा + इतच्
- **संहताः** = सम् + √हन् + क्त
- **भिन्नः** = √भिद् + क्त
- **रूषितः** = √रुष् + क्त

- **आलूनः** = आ + √लू + क्त
- **सच्चरितैः** = सत् + √चर् + क्त (तृतीया बहु.)
- **शेषितः** = शेष + णिच् + क्त
- **ईहितम्** = √ईह् + क्त
- **उद्यतम्** = उद् + √यम् + क्त (द्वितीया एक.)
- **उद्धतम्** = उद् + √हन् + क्त
- **इद्धम्** = √इन्ध् + क्त ।
- **खिन्नः** = √खिद् + क्त ।
- **अनुमतः** = अनु + √मन् + क्त
- **अनुस्मृतः** = अनु + √स्मृ + क्त
- **आत्तः** = आङ् + √दा + क्त
- **गते** = √गम् + क्त (सप्तमी एक.)
- **उदितः** = √वद् + क्त
- **निरस्तः** = निर् + √अस् + क्त
- **मूढः** = √मुह् + क्त
- **संवृतः** = सम् + √वृ + क्त
- **निशिताः** = नि + √शो + क्त (प्रथमा बहु.)
- **उदीरितः** = उद् + √ईर् + णिच् + क्त
- **शुष्कम्** = √शुष् + क्त (''शुषः कः'' सूत्र से 'क्त' को 'क' आदेश) (द्वितीया एक0)
- **जातः** = √जन् + क्त
- **आचितम्** = आङ् + √चि + क्त
- **अधिरूढः** = अधि + √रुह् + क्त
- **मग्नम्** = √मस्ज् + क्त

घञ् प्रत्यय

- **प्रणामः** = प्र + √नम् + घञ्
- **सारः** = √सृ + घञ्
- **विघाताय** = वि + √हन् + घञ् = विघात यहाँ ''भाववचनाच्च'' सूत्र द्वारा 'घञ्' प्रत्यय लगकर बने विघातः पद में ''तुमर्थाच्च भाववचनात्'' सूत्र से चतुर्थी वि. एक. ''विघाताय'' निष्पन्न हुआ।
- **निसर्गः** = नि + √सृज् + घञ्
- **बोधः** = √बुध + घञ् (प्रथमा एक.)

- **शेषः** = √शिष् + घञ्
- **अनुभावः** = अनुभूयते अर्थ में अनु + √भू + घञ्
- **अनुबन्धः** = अनु + √बन्ध् + घञ्
- **मानः** = √मन् + घञ्
- **गुणानुरागात्** = गुण + अनु + √रञ्ज् + घञ् (पञ्चमी एक.)
- **अनुरोधः** = अनु + √रुध् + घञ्
- **आकारः** = आङ् + √कृ + घञ्
- **अपवर्गः** = अप + √वृज् + घञ्
- **विनियोगः** = वि + नि + √युज् + घञ्
- **उपायाः** = उप + √अय् + घञ् (प्रथमा बहु.)
- **संघर्षः** = सम् + √घृष् + घञ्
- **उदारः** = उत् + √ऋ + घञ्
- **कोपः** = √कुप् + घञ्
- **प्रसङ्गः** = प्र + √सञ्ज् + घञ्
- **अधिक्षेपः** = अधि + √क्षिप् + घञ्
- **अभिमानः** = अभि + √मन् + घञ्
- **मर्षः** = √मृष् + घञ्
- **निकारम्** = नि + √कृ + घञ् (द्वितीया, एक.)
- **नियोगः** = नि + √युज् + घञ्
- **संहारः** = सम् + √हृ + घञ्
- **गाधः** = √गाध् + घञ्

शतृ-प्रत्यय

- **निवेदयिष्यतः** = नि + √विद् + णिच् + शतृ लृट् लकार के अर्थ में = निवेदयिष्यन् (षष्ठी एक.)
- **इच्छतः** = √इष् + शतृ (षष्ठी एक.)
- **भवतः** = √भू + शतृ (पञ्चमी एक.)
- **समुन्नयन्** = सम् + उत् + √नी + शतृ (प्रथमा एक.)
- **आराधयतः** = आङ् + √राध् + शतृ (षष्ठी एक.)
- **दधतः** = √धा + शतृ (प्रथमा बहु.)
- **वाञ्छन्** = वाञ्छ् + शतृ (प्रथमा एक.)

- **वितन्वति** = वि + √तन् + शतृ (सप्तमी एक.)
- **प्रशासत्** = प्र + √शास् + शतृ
- **चिन्वताम्** = √चि + शतृ (षष्ठी बहु.)
- **परिभ्रमन्** = परि + √भ्रम् + शतृ (प्रथमा एक.)
- **आहरन्** = आङ् + √हृ + शतृ (प्रथमा एक.)
- **विलोकयन्** = वि + √लोक् + शतृ
- **द्विषत्** = √द्विष् + शतृ

णिनि प्रत्यय

- **हितैषिणः** = हितम् इच्छन्ति इस अर्थ में हित + √इष् + णिनि ''सुप्यजातौ णिनिः ताच्छील्ये'' सूत्र से 'णिनि' प्रत्यय लगकर प्रथमा बहु. में ''हितैषिणः'' बनता है।
- **अनुजीविभिः** = अनु जीवितुं शीलं येषां ते अर्थ में अनु + जीव् + णिनि। तृतीया बहुवचन।
- **मनोहारि** = मनः हर्तुं शीलं यस्य तत् अर्थ में, मनस् + √हृ + णिनि, नपुंसकलिङ्ग में प्रथमा एकवचन
- **वनाधिवासिनः** = 'वनम् अधिवसति इति तस्मात्' अर्थ में वन + अधि + √वस् + णिनि, पञ्चमी एकवचन
- **विरोधिनः** = वि + √रुध् + णिनि (प्रथमा, बहु.)
- **वनसन्निवासिनाम्** = वन + सम् + नि + √वस् + णिनि (षष्ठी बहु.)
- **वन्यफलाशिनः** = वन्यफल + √अश् + णिनि (षष्ठी एक.)
- **मणिपीठशायिनौ** = मणिपीठ + √शी + णिनि (द्वितीया, द्विव०)

ल्यप्-प्रत्यय

- **अधिगम्य** = अधि + √गम् + ल्यप्
- **विभज्य** = वि + √भज् + ल्यप्
- **विरहय्य** = वि + √रह् + णिच् + ल्यप्
- **विधाय** = वि + √धा + ल्यप्
- **उपेत्य** = उप + √इण् + ल्यप्
- **निधाय** = नि + √धा + ल्यप्
- **प्रविश्य** = प्र + √विश् + ल्यप्

- **निशम्य** = नि + √शम् + ल्यप्
- **विजित्य** = वि + √जि + ल्यप्
- **अधिशय्य** = अधि + √शी + ल्यप्
- **विहाय** = वि + √हा + ल्यप्
- **अवधूय** = अव + √धू + ल्यप्
- **प्राप्य** = प्र + √आप् + ल्यप्
- **उदस्य** = उत् + √अस् + ल्यप्
- **ईरयित्वा** = √ईर् + णिच् + क्त्वा

ङीप्-प्रत्यय

- **सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्** = सौष्ठव + औदार्य + विशेष + शाल् + णिनि + ङीप् (द्वितीया एकवचन)
- **मानवीम्** = मनु + अण् + ङीप् (द्वितीया एक.)
- **विशेषशालिनी** = विशेष + √शाल् + णिनि + ङीप्
- **त्वदेष्यतीः** = √इण् (जाना) धातु से भविष्यत् काल में शतृ प्रत्यय होकर, इ + स्य + शतृ + ङीप् = एष्यतीः (द्वितीया, बहु.)
- **दीपिनी** = √दीप् + णिनि + ङीप् + (द्वितीया बहु०)
- **तावकीम्** = तव इयम् अर्थ में, युष्मद् + अण् + ङीप् युष्मद् शब्द को तवक आदेश होता है।
- **विचिन्तयन्ती** = वि + √चिन्त् + शतृ + ङीप्
- **स्थलीम्** = √स्थल् + अच् + ङीप् (द्वितीया एक.)

अण्

- **सौष्ठव** = सुष्ठु + अण्
- **कुरूणाम्** = कुरूणां निवासाः जनपदाः कुरवः। कुरु जाति के निवास स्थान जनपद कुरु कहलाते हैं, यहाँ जनपद अर्थ में ''तस्य निवासः'' सूत्र से अण् प्रत्यय होकर ''जनपदे लुप्'' सूत्र से उसका लोप हो जाता है। जनपद वाची शब्द बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं। अतः षष्ठी बहुवचन में 'कुरूणाम्''
- **समान** = सम् + अन् + अण्
- **चिराय** = चिर् + अय् + अण्
- **यौवन** = युवन् + अण्
- **हार्दः** = हृदय + अण् (हृदय को हृद आदेश होकर) = हार्द
- **मानसः** = मनस् + अण्

ष्यञ्

- **औदार्यम्** = उदार + ष्यञ्
- **माल्यम्** = माला + ष्यञ्
- **यौवराज्ये** = युवराज + ष्यञ् = यौवराज्य, (सप्तमी एक.)

ण्यत्

- **आर्य** = √ऋ + ण्यत्
- **प्राज्यम्** = प्र + √अज् + ण्यत्

अनीयर् प्रत्यय

- **वञ्चनीयाः** = √वञ्च् + अनीयर् (प्रथमा बहु.)
- **रामणीयकम्** = √रम् + अनीयर्
  'रमणीयस्य भावः' अर्थ में, रमणीय + वुञ् (अक) रामणीयकम्

अन्य प्रत्यय

- **अतः** = एतस्माद् अर्थ में एतत् + तसिल्
- **दुर्लभम्** = दुर् + √लभ् + खल्
- **साधु** = साध् + उण्
- **अमात्येषु** = अमा बुद्धिः तया सह वसनि अर्थ में अमा + त्यप् = अमात्य (सप्तमी बहु.)
- **दुर्बोधम्** = दुर् + √बुध् + खल् (कर्मणि)
- **विक्लवः** = वि + √क्लु + अच्
- **नयः** = नी + अच्
- **विशङ्कमानः** = वि + शङ्क् + शानच्
- **पराभवम्** = परा + √भू + अप् (द्वितीया, एक.)
- **सङ्गमः** = सम + गम् + अप्
- **जयः** = √जि + अच्
- **सुखम्** = सुख + अच्
- **पदवीम्** = पद + √अवि + ङीष् = पदवी (द्वितीया एक.)
- **प्रपित्सुना** = प्र + √पद् + सन् + उ = प्रपित्सुः (तृतीया एक.)
- **तन्द्रिः** = तन्द् + क्रिन्
- **सखीन्** = सह समानं ख्यायते अर्थ में सह + ख्या + डिन् = सखि (द्वितीया बहुवचन)
- **बन्धुभिः** = बन्ध् + उ = बन्धु (तृतीया बहु.)
- **स्मयः** = स्मि + अच्

- **सख्यम्** = 'सख्युर्भावः' अर्थ में 'सख्युर्यः'' सूत्र से 'य' प्रत्यय होकर सखि + य
- **ईयिवान्** = √इण् धातु से लिट्लकार में 'क्वसु' प्रत्यय होकर निपातन से ईयिवान् रूप बना।
- **निरत्ययम्** = निर् + अति + इ + अच् (द्वितीया एक.)
- **वसूनि** = √वस् + उ (प्रथमा बहु.)
- **मन्युना** = मन् + युच् (तृतीया एक.)
- **गुरु** = गॄ + कु, उत्वम्
- **दण्डः** = दण्ड् + अच्
- **विप्लवः** = वि + प्लु + अप्
- **रक्षान्** = √रक्ष् + अच् (द्वितीया बहु.)
- **परितः** = परि + तस्
- **शङ्कितः** = शङ्का + इतच्
- **राजन्य** = राजन् + यत्
- **अश्वः** = अश्व + क्वन्
- **रथः** = √रम् + क्यन्
- **तदीया** = तद् + छ (ईय)
- **वचांसि** = वचस् शब्द नपुंसकलिङ्ग (द्वितीया बहु.)
- **अजिर** = √अज् + किरन्
- **मदः** = मद + अप्
- **लभ्यः** = √लभ् + यत्
- **कृषीवलैः** = कृषि + वलच् (तृतीया, बहु0)
- **सस्य** = √सस् + क्यप्
- **उदयम्** = उत् + √इ + अच् (द्वितीया, एक0)
- **दयावतः** = दया + मतुप् (षष्ठी एक.)
- **प्रतीय** = प्रति + √इण् + यक्
- **धातुः** = √धा + तृच् (षष्ठी एक.)
- **नरः** = √नृ + अच् ।
- **मखेषु** = मख + घ (सप्तमी बहु.)
- **पुरोधसा** = पुरस् + √धा + असि (तृतीया एक.)
- **भूपालः** = भू + √पाल् + अच्
- **स्थिरः** = √स्था + किरच्
- **आयतिः** = आङ् + √या + इति
- **बलवद्** = बल + मतुप्
- **आखण्डलः** = आङ् + खण्ड् + डलच्

- **सूनुः** = सू + नुक्
- **विक्रमः** = वि + √क्रम + अच्
- **उरगः** = उरस् + √गम् + ड
- **जिह्मः** = 'हा' धातु + मन, औणादिक मन् प्रत्यय का लोप तथा ''ह्'' को जिह् आदेश होकर प्रथमा एक. में जिह्मः पद निष्पन्न होता है।
- **विधेयम्** = वि + √धा + यत्।
- **उत्तरम्** = उद् + √तृ + अप्
- **अनुजः** = अनु + √जन् + ड
- **सन्निधिः** = सम् + नि + √धा + कि
- **वचः** = √वच् + असुन्
- **तथा** = तद् + थाल्
- **नारी** = √नृ + अच् = नर + ङीन्
- **दुराधयः** = √दुर् + आङ् + धा + कि (प्रथमा बहु.)
- **तुल्यम्** = तुला + यत्
- **धामन्** = √धा + मनिन्
- **स्ववंशजः** = स्ववंश + √जन + ड
- **मही** = मह् + अच् + ङीष्
- **मतङ्गजः** = मतङ्ग + √जन + ड
- **मानिनाम्** =मान + इनि (षष्ठी बहु0)
- **स्त्रक्** = √सृज् + क्विन्
- **पराभवम्** = परा + √भू + अप्
- **मायाविषु** = माया + विनि ''अस्मायामेधास्त्रजो विनिः'' (5.2.121) सूत्र से विनि प्रत्यय = मायाविन्, (सप्तमी बहु.)
- **मायिनः** = माया + इनि ''माया'' शब्द से ''व्रीह्यादिभ्यश्च'' सूत्र से मत्वर्थीय 'इनि' प्रत्यय (प्रथमा बहु.)
- **इषवः** = √इष् + उ = इषु (प्रथमा बहु.)
- **एतर्हि** = 'अस्मिन् काले' अर्थ में इदम् शब्द से ''इदमोर्हिल्'' (5.3.16) सूत्र से र्हिल् प्रत्यय होकर इदम् + र्हिल् = यहाँ इदम् शब्द को एत आदेश होता है।
- **भवन्तम्** = √भा + डवतु = भवत् (द्वितीया एक.)
- **गर्हितः** = √गर्ह + क्त
- **विवर्तमानम्** = वि + वृत् + शानच्
- **वर्त्मनि** = वृत् + मनिन् = वर्त्मन्, (सप्तमी एक.)
- **मन्युः** = मन् + युच्

- **अग्निः** = अङ्ग + नि
- **बन्ध्यः** = बन्ध् + ण्यत्
- **विहन्तुः** = वि + √हन् + तृच् षष्ठी एक.
- **वश्याः** = वश् + यत्, प्रथमा बहु.
- **शून्यम्** = शूना + यत्
- **आदरः** = आङ् + दृ + अप् = आदर
- **जन्तुः** = √जन् + तुन्
- **लोहितः** = √रुह् + इतन् 'र' को 'ल' आदेश
- **पदातिः** = पाद + अत् + इण्
- **रेणुः** = री + नु
- **सत्यम्** = सत् + यत्
- **अकुप्यम्** = गुप् + क्यप् (ग को क आदेश होकर) कुप्य
- **वासांसि** = वस्यते आच्छाद्यते अनेन अर्थ में वस् + असुन् = वासम्, नपुंसकलिङ्ग में द्वितीया एक. = वासांसि
- **धनञ्जयः** = धनं जयति अर्थ में–धन + जि + खच् (मुम् का आगम)
- **कचः** = √कच् + अच्
- **अगजः** = अग + √जन् + ड
- **अगः** = न + √गम् + ड
- **गजः** = गज् + अच्
- **संयमः** = सम् + यम् + अप्
- **विचित्ररूपः** = विचित्र + रूपप्
- **आश्रयः** = आङ् + √श्रि + अच्
- **आधयः** = आङ् + √धा + कि, प्रथमा बहु.
- **अन्धसा** = अद् + असुन्, नुम् और ध होकर तृतीया एक. अन्धसा
- **कार्श्यम्** = कृष् + ष्यञ्
- **द्विजः** = द्वि + √जन् + ड
- **उत्सवः** = उत् + √सू + अप्
- **धामन्** = धा + मनिन् नपुंसकलिङ्ग - प्रथमा एक
- **शत्रुम्** = शद् + त्रुन् द्वितीया एक.
- **मुनिः** = मन् + इन् (अ को उ आदेश)
- **पुरस्** = पूर्व + असि
- **सरः** = सृ + अच्
- **धामवताम्** = धाम + मतुप् = धामवत्, षष्ठी का बहु.

- **दुस्सहः** = दुर् + सह् + खल्
- **आश्रयः** = आङ् + √श्रि + अच्
- **मनस्विन्** = मनस् + विनि
- **पतिः** = √पा + डति
- **लक्ष्मन्** = √लक्ष् + मनिन्
- **कार्मुकः** = कर्मन् + उकञ्
- **जटाधरः** = जटा + √धृ + अच्
- **पावकम्** = √पू + ण्वुल् (अक) द्वितीया एक.
- **समयः** = सम् + √इ + अच्
- **क्षमः** = क्षम् + अच्
- **अरिषु** = ऋ + इन् सप्तमी बहु.
- **विजयः** = वि + √जि + अच् = विजय
- **अर्थिनः** = अर्थ + इनि प्रथमा बहु.
- **उपधिः** = उप + √धा + कि
- **सन्धिः** = सम् + √धा + कि
- **विधिः** = वि + √धा + कि
- **पयोधिः** = पयस् + √धा + कि
- **रिपुः** = अनिष्टं रपति अर्थ में रप् + कु (अ को इ होकर)
- **तिमिरः** = तिम् + किरच्
- **उदीयमानम्** = उत् + √ईङ् + शानच् = उदीयमान, द्वितीया एक. (उदीयमानम्)
- **लक्ष्मीः** = लक्ष् + ई (मुट् का आगम)
- **भूयः** = बहु + ईयसुन् (बहु को भू आदेश और ईयसुन् को ईकार का लोप होकर) भू + यस्

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) में सन्धि

- **प्रभवोऽनुजीविभिः** = प्रभवस् + अनुजीविभिः विसर्गसन्धि एवं ''एङः पदान्तादति'' से पूर्वरूपसन्धि।
- **अतोऽर्हसि** = अतस् + अर्हसि, विसर्गसन्धि एवं ''एङःपदान्तादति'' से पूर्वरूपसन्धि।
- **सदानुकूलेषु** = सदा + अनुकूलेषु = दीर्घसन्धि
- **नृपेष्वमात्येषु** = नृपेषु + अमात्येषु = यण्सन्धि (इको यणचि)
- **तवानुभावः** = तव + अनुभावः = दीर्घसन्धि
- **तवानुभावोऽयमवेदि** = तवानुभावस् + अयमवेदि (विसर्ग सन्धि एवं पूर्वरूपसन्धि)
- **व्याख्या** – यहाँ पर ''ससजुषो रुः'' सूत्र से अनुभावस् के अन्त्य सकार को 'रु' आदेश होकर उपदेशेऽजनुनासिक इत् से ''उकार'' की इत्संज्ञा और ''तस्य लोपः'' से लोप, ''र्'' को ''अतो रोरप्लुतादप्लुते'' सूत्र से उकार आदेश, तवानुभाव + उ + अयमवेदि ''आद्गुणः'' से गुण होकर, तवानुभावो + अयमवेदि, पुनः ''एङः पदान्तादति'' सूत्र से पूर्वरूप सन्धि होकर, यहाँ सन्धिकार्य निष्पन्न हुआ अन्यस्थलों पर भी अध्येतागण ऐसा ही समझे।

- **नृपासनस्थोऽपि** = नृपासनस्थस् + अपि, विसर्गसन्धि एवं पूर्वरूपसन्धि।
- **भवज्जिगीषया** = भवत् + जिगीषया, ''झलां जशोऽन्ते'' सूत्र से ''जश्त्वसन्धि'' भवद् + जिगीषया पुनः ''स्तोः श्चुना श्चुः''. से श्चुत्व सन्धि।
- **कृतारिः** = कृत + अरिः (दीर्घसन्धि)
- **कृताधिपत्याम्** = कृत + आधिपत्याम् = (दीर्घसन्धि)
- **असक्तमाराधयतो यथायथम्** = असक्तमाराधयतः + यथायथम्, ''विसर्गसन्धि'' (''हशि च'' से उत्व ''आद्गुणः'' से गुण)
- **गुरूपदिष्टेन** = गुरु + उपदिष्टेन, (दीर्घसन्धिः)
- **क्रियापवर्गेष्वनुजीवि** = क्रियापवर्गेषु + अनुजीवि (यण्सन्धि)
- **फलन्त्युपायाः** = फलन्ति + उपायाः (यण्सन्धि)
- **नयत्ययुग्मः** = नयति + अयुग्मः (यण्सन्धि)
- **कुरवश्चकासति** = कुरवस् + चकासति ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (श्चुत्वसन्धि)
- **इत्येव** = इति + एव (यण्सन्धि)
- **वाञ्छन्त्यसुभिः** = वाञ्छन्ति + असुभिः (यण्सन्धि)
- **धातुरिवेहितम्** = धातुरिव + ईहितम् (गुणसन्धि)
- **मखेष्वखिन्नः** = मखेषु + अखिन्नः (यण्सन्धि)
- **चिन्तयत्येव** = चिन्तयति + एव (यण्सन्धि)
- **इवानुशासनम्** = इव + अनुशासनम् (दीर्घसन्धि)
- **त्वयात्महस्तेन** = त्वया + आत्महस्तेन (दीर्घसन्धि)
- **स्रगिवापवर्जिता** = स्रगिव + अपवर्जिता (दीर्घसन्धि)
- **शठास्तथाविधान्** = शठाः + तथाविधान् (विसर्गसन्धि)
- **इवेषवः** = इव + इषवः = गुणसन्धिः (आद् गुणः)
- **परैस्त्वदन्यः** = परैः + त्वदन्यः (विसर्गसन्धिः)
- **परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः** = परिभ्रमन् + लोहित - चन्दनोचितः, ''तोर्लि'' सूत्र से परसवर्णसन्धि (हल्सन्धि)
- **तवाधुनाहरन्** = तव + अधुना + आहरन्, (दीर्घसन्धि)
- **विष्वगिवागजौ** = विष्वगिव + अगजौ (दीर्घसन्धि)
- **उन्मूलयतीव** = उन्मूलयति + इव (दीर्घसन्धि)
- **भावादृशाश्चेत्** = भवादृशास् + चेत् ''स्तोः श्चुना श्चुः'' (श्चुत्वसन्धि)
- **उदस्योदीयमानम्** = उदस्य + उदीयमानम् (गुणसन्धि)
- **लक्ष्मीस्त्वाम्** = लक्ष्मीस् + त्वाम् (विसर्गसन्धि)

किरातार्जुनीयम् में समास

- **पालनीम्** = पाल्यतेऽनया इति पालनी, ताम् पालनीम्। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **वर्णिलिङ्गी** = वर्णः अस्य अस्ति वर्णी, तस्य लिङ्गम् अस्यास्तीति वर्णिलिङ्गी।
- **वनेचरः** = वने चरति इति वनेचरः। (सप्तमी अलुक् तत्पुरुषसमास)

- **युधिष्ठिरम्** = युधि स्थिरः तम् युधिष्ठिरम् ।
  (सप्तमी अलुक् तत्पुरुषसमास)
- **कृतप्रणामस्य** = कृतः प्रणामः येन तस्य कृतप्रणामस्य।
  (बहुव्रीहि समास)
- **सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्** = ''सौष्ठवं च औदार्यं च इति सौष्ठवौदार्ये तयोः विशेषः तेन शालते इति
  सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनी ताम्, सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीम्।
  (इतरेतरद्वन्द्व एवं षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **चारचक्षुषः** = चरन्ति इति चराः त एव चाराः, चाराः चक्षूंषि येषां ते चारचक्षुषः। (बहुव्रीहि समास)
- **किंसखा** = कुत्सितः सखा इति किंसखा (कर्मधारयसमास)
- **किंप्रभुः** = कुत्सितः प्रभुः (कर्मधारयसमास)
- **सर्वसम्पदः** = सर्वाः सम्पदः सर्वसम्पदः (कर्मधारयसमास)
- **अमात्येषु** = अमा सह भवाः अमात्याः तेषु
- **अनुकूलेषु** = कूलम् अनुगताः इत्यनुकूलाः तेषु (प्रादितत्पु. समास)
- **अबोधविक्लवाः** = अबोधेन विक्लवाः (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **नयवर्त्म** = नयस्य वर्त्म, नयवर्त्म (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **अनुभावः** = अनुगतो भावः इति (प्रादितत्पुरुष समास)
- **वनाधिवासिनः** = वनम् अधिवसति इति वनाधिवासी तस्मात् वनाधिवासिनः (उपपदतत्पुरुषसमास)
- **दुर्लभम्** = दुःखेन लभ्यते इति दुर्लभम्, (उपपद तत्पु. समास)
- **सुयोधनः** = सुखेन युद्ध्यते इति, सुयोधनः (उपपदतत्पुरुष समास)
- **दुरोदरच्छद्मजिताम्** = दुष्टम् उदरं यस्य तत् दुरोदरम्, तस्य छद्मना जितां तां ''दुरोदरच्छद्मजिताम्''। बहुव्रीहि एवं तृतीया तत्पुरुष समास
- **भवज्जिगीषया** = भवन्तं जेतुम् इच्छया, (द्वितीयातत्पुरुष समास)
  अथवा ''भवतः जिगीषा इति'' (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **गुणसम्पदा** = गुणानां सम्पत् तया, गुणसम्पदा। (षष्ठीतत्पुरुष समास)
- **षड्वर्गः** = षण्णां वर्गः, षड्वर्गः। अरीणां षड्वर्गः, अरिषड्वर्गः तस्य जयः अरिषड्वर्गजयः, कृतः अरिषड्वर्गजयः येन तेन कृतारिषड्वर्गजयेन।
  (षष्ठी तत्पुरुष एवं बहुव्रीहि समास)
- **मानवीम्** = इयम् इति मानवी ताम्, मानवीम्, (षष्ठी तत्पु0 समास)
- **अस्ततन्द्रिणा** = अस्ता तन्द्रिः आलस्यं यस्य तेन (बहुव्रीहि समास)
- **गतस्मयः** = गतः स्मयः यस्य सः गतस्मयः। (बहुव्रीहि समास)
- **बन्धुताम्** = बन्धूनां समूहः बन्धुता ताम्, बन्धुताम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **सुहृदः** = शोभनं हृदयं येषां ते, तान् सुहृदः (बहुव्रीहि समास)

- **कृताधिपत्याम्** = कृतम् आधिपत्यं यस्याः तां कृताधिपत्याम् (बहुव्रीहि समास)
- **समपक्षपातया** = पक्षे पातः पक्षपातः, समः पक्षपातः यस्यां तया, समपक्षपातया। (सुप्सुपासमास)
- **निरत्ययम्** = निर्गतः अत्ययः यस्मात् तम् निरत्ययम् (बहुव्रीहि समास)
- **निवृत्तकारणः** = निवृत्तं कारणं यस्मात् सः - निवृत्तकारणः। (बहुव्रीहि समास)
- **गुरूपदिष्टेन** = गुरुभिः उपदिष्टः तेन – गुरूपदिष्टेन (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **अगम्यरूपाम्** = अगम्यं रूपं यस्याः सा ताम् (बहुव्रीहि समास)
- **धर्मविप्लवम्** = धर्मस्य विप्लवः धर्मविप्लवः तम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **कृतज्ञताम्** = कृतं जानाति इति कृतज्ञः, तस्य भावः कृतज्ञता, ताम् कृतज्ञताम् (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **विनियोगसत्क्रियाः** = विनियोग एव सत्क्रिया येषां ते विनियोगसत्क्रियाः। (बहुव्रीहि समास)
- **अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम्** = अनेकेषां राजन्यानां रथाश्वेन सङ्कुलम्, अनेकराजन्यरथाश्वसङ्कुलम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **आस्थाननिकेतनाजिरम्** = आस्थानस्य निकेतनम्, आस्थान निकेतनं तस्य अजिरम् = आस्थाननिकेतनाजिरम्। (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **नृपोपायनदन्तिनाम्** = नृपाणाम् उपायनानि ये दन्तिनः तेषाम्। (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **अकृष्टपच्याः** = अकृष्टेन पच्यन्त इति अकृष्टपच्याः। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **अदेवमातृकाः** = देवः पर्जन्यः माता येषां ते देवमातृकाः, ते न भवन्ति इति अदेवमातृकाः। (बहुव्रीहि समास)
- **उदारकीर्तेः** = उदारा कीर्तिः यस्य स उदारकीर्तिः तस्य, उदारकीर्तेः, (बहुव्रीहि समास)
- **महौजसः** = महान्ति ओजांसि येषां ते महौजसः। (बहुव्रीहि समास)
- **मानधनाः** = मान एव धनं येषां ते मानधनाः, (बहुव्रीहि समास)
- **धनार्चिताः** = धनैः अर्चिताः धनार्चिताः। (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **लब्धकीर्त्तयः** = लब्धा कीर्तिः यैः ते = लब्धकीर्तयः, बहुव्रीहि समास
- **अशेषितक्रियः** = अशेषिताः क्रियाः येन सः अशेषितक्रियः। (बहुव्रीहि समास)
- **हितानुबन्धिभिः** = हितम् अनुबध्नन्ति इति
  हितानुबन्धीनि तैः हितानुबन्धिभिः।
  (उपपदतत्पुरुष समास)
- **सज्यम्** = सह ज्यया इति सज्यम् (बहुव्रीहि समास)
  तृतीयान्त शब्द के साथ तुल्ययोग होने पर ''सह'' शब्द के साथ बहुव्रीहि समास होता है।
- **कोपविजिह्मम्** = कोपेन विजिह्मं, कोपविजिह्म (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **नराधिपैः** = नराणाम् अधिपाः तैः, नराधिपैः, (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **नवयौवनोद्धतम्** = नवेन यौवनेन उद्धतः, नवयौवनोद्धतः तम्, = नवयौवनोद्धतम् (तृतीया तत्पुरुष समास)

- **दुःशासनम्** = दुःखेन शास्यते इति दुःशासनः तम् (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **इद्धशासनः** = इद्धं शासनं यस्य स इद्धशासनः (बहुव्रीहि समास)
- **हिरण्यरेतसम्** = हिरण्यं रेतो यस्य तं हिरण्यरेतसम् (बहुव्रीहि समास)
- **प्रलीनभूपालम्** = प्रलीनाः भूपालाः यस्मिन् तत् प्रलीनभूपालम् (बहुव्रीहि समास)
- **स्थिरायति** = स्थिरा आयतिः यस्य तत् स्थिरायति। (बहुव्रीहि समास)
- **अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः** = आखण्डलस्य सूनुः आखण्डलसूनुः, अनुस्मृतः आखण्डलसूनोः विक्रमो येन सः (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **महोदयैः** = महान् उदयः येभ्यः तानि महोदयानि तैः (बहुव्रीहि समास)
- **तवाभिधानात्** = तश्च वश्च तवौ तयोः अभिधानं यस्मिन् तस्मात् (बहुव्रीहि समास)
- **उरगः** = उरसा गच्छति इति (तृतीया तत्पुरुषसमास)
- **परप्रणीतानि** = परैः प्रणीतानि (तृतीया तत्पुरुषसमास)
- **प्रवृत्तिसाराः** = प्रवृत्तिः एव सारो यासां ताः (बहुव्रीहि)
- **आत्तसत्क्रिये** = आत्ता सत्क्रिया येन स आत्तसत्क्रियः तस्मिन् (बहुव्रीहि समास)
- **मन्युव्यवसायदीपिनी** = मन्युश्च व्यवसायश्च मन्युव्यवसायौ तयोः दीपिनीः ताः (इतरेतरद्वन्द्वसमासः) एवं (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **द्रुपदात्मजा** = आत्मनः जाता आत्मजा, द्रुपदस्य आत्मजा = (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **प्रमदाजनोदितम्** = प्रमदाजनेन उदितम् (तृतीया तत्पुरुष समास)
- **निरस्तनारीसमयाः** = निरस्तः नारीणां समयः याभ्यः ताः (षष्ठी तत्पुरुषसमास एवं बहुव्रीहि समास)
- **आखण्डलतुल्यधामभिः** = आखण्डलतुल्यः धामानि येषां तैः (बहुव्रीहि समास)
- **मदच्युता** = मदं च्योतति इति मदच्युत् तेन। (उपपद तत्पुरुष समास)
- **असंवृताङ्गान्** = न संवृतानि असंवृतानि, असंवृतानि अङ्गानि येषां ते असंवृताङ्गाः तान् (नञ् तत्पु. समास, एवं बहुव्रीहि समास)
- **अनुरक्तसाधनः** = अनुरक्तं साधनं यस्य, सः (बहुव्रीहि समास)
- **नराधिपः** = नराणाम् अधिपः इति नराधिपः (षष्ठी तत्पुरुष)
- **मनस्विगर्हिते** = मनस्विभिः गर्हिते। (तृतीया तत्पु.)
- **शमीतरुम्** = शमी चासौ तरुश्च शमीतरुः तम् (कर्मधारय)
- **उच्छिखः** = उद्गता शिखा यस्य स उच्छिखः। (बहुव्रीहि)
- **अबन्ध्यकोपस्य** = अबन्ध्यः कोपो यस्य तस्य अबन्ध्यकोपस्य (बहुव्रीहि समास)
- **अन्तर्गिरि** = गिरिषु अन्तः (सप्तमी तत्पुरुष समास)
- **रेणुरूषितः** = रेणुभिः रूषितः (तृतीया तत्पुरुष)
- **सत्यधनस्य** = सत्यम् एव धनं यस्य तस्य (बहुव्रीहि समास)
- **वृकोदरः** = वृकस्य उदरम् इव उदरं यस्य सः (षष्ठी तत्पुरुष समास, एवं बहुव्रीहि समास)

- **वासवोपमः** = वासवः उपमा यस्य सः (बहुव्रीहि समास)
- **धनञ्जयः** = धनं जयतीति (द्वितीया तत्पुरुष)
- **वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती** = वनान्तः एव शय्या इति वनान्तशय्या तस्यां कठिनीकृते आकृती ययोः तौ, अथवा वनान्तशय्यया कठिनीकृते आकृती ययोः तौ। (कर्मधारयसमास, तृतीया तत्पुरुषसमास, बहुव्रीहि समास)
- **धृतिसंयमौ** = धृतिश्च संयमश्च (द्वन्द्वसमास)
- **विचित्ररूपाः** = विचित्राणि रूपाणि यासां ताः (बहुव्रीहिसमास)
- **चित्तवृत्तयः** = चित्तस्य वृत्तयः (षष्ठी तत्पुरुष)
- **स्तुतिगीतिमङ्गलैः** = स्तुतयश्च गीतयश्च ता एव मङ्गलानि तैः (द्वन्द्वसमास एवं कर्मधारयसमास)
- **अदभ्रदर्भाम्** = अदभ्राः दर्भाः यस्यां सा अदभ्रदर्भा ताम् (बहुव्रीहि समास)
- **द्विजातिशेषेण** = द्विजातिभिः भुक्तं तस्य शेषः तेन (तत्पुरुष समास)
- **राजशिरःस्त्रजाम्** = राज्ञां शिरः राजशिरः तेषां स्रजः तासाम् (षष्ठी तत्पुरुष समास)
- **मृगद्विजालूनशिखेषु** = मृगाश्च द्विजाश्च मृगद्विजाः तैः आलूनाः शिखाः येषां तेषु (द्वन्द्वसमास एवं तत्पुरुष समास)
- **द्विषन्निमित्ता** = द्विषन्तो निमित्तं यस्याः सा, (बहुव्रीहि समास)
- **अपर्य्यासितवीर्यसम्पदाम्** = अपर्य्यासिता वीर्यसम्पत् येषां तेषाम् (बहुव्रीहि समास)
- **निःस्पृहाः** = निर्गता स्पृहा येभ्यः ते, (बहुव्रीहि समास)
- **पुरःसराः** = पुरः सरन्ति इति
- **यशोधनाः** = यश एव धनं येषां ते, (बहुव्रीहि समास)
- **निराश्रया** = निर्गतः आश्रयः यस्याः सा (बहुव्रीहि समास)
- **निरस्तविक्रमः** = निरस्तः विक्रमः येन सः (बहुव्रीहि समास)
- **जटाधरः** = धरतीति धरो, जटानां धरः (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **निकृतिपरेषु** = निकृतिः परं येषु तेषु, (बहुव्रीहि समास)
- **भूरिधाम्नः** = भूरि धाम यस्य तस्य (बहुव्रीहि समास)
- **दीप्तिसंहारजिह्मम्** = दीप्तेः संहारः तेन जिह्मः तम् दीप्तिसंहारजिह्मम्'' (षष्ठी तत्पुरुषसमास)
- **शिथिलवसुम्** = शिथिलं वसु यस्य सः तम्, ''शिथिलवसुम्'' (बहुव्रीहि समास)
- **आपत्पयोधौ** = आपत् एव पयोधिः तस्मिन् अथवा आपदः पयोधिः तस्मिन्, ''आपत्पयोधौ'' (उपमित समासः)
- **विधिसमयनियोगः** = विधिश्च समयश्च इति विधिसमयौ (द्वन्द्वसमासः) तयोः नियोगः इति विधिसमयनियोगः (षष्ठी तत्पुरुष)

किरातार्जुनीयम् में कारकप्रयोग

- ''**कुरूणामधिपस्य**'' में ''**षष्ठी शेषे**'' सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई।
- **महीभुजे** – यहाँ पर ''**महीभुजं निवेदयिष्यतः**'' ऐसा प्रयोग होना चाहिए था, किन्तु ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि व्याकरण का एक नियम है कि जब तुमुन् प्रत्यय से युक्त धातु का प्रयोग परोक्ष हो तो उसके कर्म में चतुर्थी विभक्ति होती है, उपर्युक्त प्रयोग में ''महीभुजं बोधयितुं निवेदयिष्यतः'' कहने से ही पूरा अर्थ निकलता है, किन्तु ''बोधयितुम्'' का प्रयोग प्रत्यक्षतः नहीं हुआ, फलतः इस क्रिया के कर्म अर्थात् महीभुजम् में चतुर्थी हो गई। सूत्र है – ``**क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः**''
- **द्विषाम्** = यहाँ ''**द्विषां विघाताय**'' में विघातशब्द में आने वाला घञ् प्रत्यय चूँकि कृत् प्रत्ययों में से एक है, तथा 'द्विषः' शब्द मूलतः उसका कर्म है (इसका अर्थ है – द्विषः विहन्तुम्) अतएव ''**कर्तृकर्मणोः कृति**'' सूत्र से कर्मणि षष्ठी का बहुवचन हुआ।
- **विघाताय** = विघाताय = विहन्तुमित्यर्थः यहाँ ''तुमर्थाच्च भाववचनात्'' सूत्र से चतुर्थी विभक्ति।
- **हितात्** – यहाँ पञ्चमी का विधान ''**आख्यातोपयोगे**'' तथा 'अपादाने पञ्चमी' सूत्र से हुआ है।
- **भवज्जिगीषया** = यहाँ पर ''**हेतौ**'' सूत्र से '**तृतीया**' विभक्ति का विधान होता है। ''गुणैर्भवन्तमाक्रमितुमिच्छतीत्यर्थः'' ''**हेतौ**'' इति **तृतीया**
- **महात्मभिः समम्** = यहाँ पर ''**सहयुक्तेऽप्रधाने**'' सूत्र से समम् के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **बन्धुभिः** = यहाँ सह के अर्थ में ''**सहयुक्तेऽप्रधाने**'' से तृतीया विभक्ति।
- **अनुजीविनः** = यहाँ ''**कर्तुरीप्सिततमं कर्म**'' सूत्र से कर्मसंज्ञा एवं ''**कर्मणि द्वितीया**'' से द्वितीया बहु. का प्रयोग।
- **गुणानुरागात्** = ''**विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्**'' इस नियम से यहाँ पञ्चमी विभक्ति हुई, सूत्रार्थ है, स्त्रीलिङ्ग से भिन्न लिङ्ग वाले गुणवाचक शब्दों में हेत्वर्थक पञ्चमी विभक्ति विकल्प से होती है।
- **गुणानुरोधेन विना** = यहाँ ''**पृथग्विनानानाभिस्तृतीयाऽन्यतरस्याम्**'' इस सूत्र से विना के योग में तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **मन्युना** = ''**हेतौ**'' सूत्र से तृतीया विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
- **दण्डेन** = यहाँ पर ''**हेतौ**'' से तृतीया विभक्ति।
- **क्रियापवर्गेषु** = कर्म समाप्तिषु अर्थात् कार्यों की समाप्ति होने पर ''**यस्य च भावेन भावलक्षणम्**'' सूत्र से सति सप्तमी का प्रयोग हुआ।

- **तस्मिन्** = "दुर्योधने", (उस दुर्योधन के द्वारा) इत्यर्थः , यहाँ पर **"यस्य च भावेन भावलक्षणम्"** से सति सप्तमी का प्रयोग।
- **सुखेन** = यहाँ "प्रकृत्यादिभ्यः उपसंख्यानम् (वा)" से तृतीया विभक्ति का प्रयोग।
- **तवाभिधानात्** = हेतु अर्थ में पञ्चमी विभक्ति
- **द्विषताम्** = यहाँ पर **"षष्ठी शेषे"** सूत्र से शेष अर्थ में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग हुआ है।
- **भवादृशेषु** = यहाँ अधिकरणे सप्तमी, **"सप्तम्यधिकरणे च"** इससे सप्तमी विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **व्यवसाययन्ति माम्** – माम् की यहाँ कर्मसंज्ञा है, और **"कर्मणि द्वितीया"** से द्वितीयाविभक्ति का प्रयोग हुआ। **("गति बुद्धि......." सूत्र से कर्मसंज्ञा)**
- **त्वदन्यः** = त्वत् + अन्यः = यहाँ पर "अन्य" शब्द के योग में "अन्यारादितरर्ते....." सूत्र से पञ्चमी विभक्ति का विधान होता है।
- **आपदाम्** = यहाँ पर कर्मणि षष्ठी हुई है, सूत्र है, **"कर्तृकर्मणोः कृति"** से **षष्ठी** विभक्ति का प्रयोग हुआ।
- **विचिन्तयन्त्याः मम चेतः रुजन्ति** = यहाँ पर **"रुजार्थानां भाववचनानामज्वरेः"** सूत्र से विचिन्तयन्त्याः में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग।
- **अधिरूढः शयनम्** = यहाँ पर **"अधिशीङ्स्थासां कर्म"** सूत्र से कर्म कारक एवं द्वितीया का प्रयोग।
- **अधिशय्य स्थलीम्** = यहाँ पर **"अधिशीङ्स्थासां कर्म"** सूत्र से कर्म कारक एवं द्वितीया का प्रयोग।
- **यशसा समम्** = **"सहयुक्तेऽप्रधाने"** सूत्र से समम् के योग में **'यशसा'** में तृतीयाविभक्ति का विधान किया गया।
- **वधाय** = **"क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः"** सूत्र से 'वधाय' में **चतुर्थी** विभक्ति हुई।
- **निकृतिपरेषु** = "सति सप्तमी" का प्रयोग **"यस्य च भावेन भावलक्षणम्"** सूत्र से।
- **अरिषु** = शत्रुषु, शत्रुविषयक, **'विषयाधिकरणे सप्तमी'**।

किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) में छन्द

- किरातार्जुनीयमहाकाव्य के प्रथमसर्ग में प्रथमश्लोक **"श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्"** से लेकर 44वें श्लोक **"अथ क्षमामेव निरस्तविक्रमः"** तक वंशस्थ छन्द है। जिसका लक्षण है– **"जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ"**

  अर्थात् जिस छन्द के प्रत्येक चरण में क्रमशः जगण, तगण जगण और रगण आता है, उसे 'वंशस्थ' छन्द कहते हैं। इसके प्रत्येकचरण में 12 वर्ण होते हैं और पादान्त में यति होती है।

- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के 45वें श्लोक **"न समयपरिरक्षणं क्षमं ते"** में **पुष्पिताग्रा छन्द** है; जिसका लक्षण है–

  "अयुजि नयुगरेफतो यकारो, युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा"

  अर्थात् जब प्रथम एवं तृतीय चरण में क्रमशः नगण नगण रगण यगण (12 अक्षर) और द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में नगण जगण जगण रगण और एक गुरु (13 अक्षर) वर्ण हों तो वहाँ **'पुष्पिताग्रा'** छन्द होता है।
- किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के अन्तिम 46वें **"विधिसमयनियोगाद् दीप्तिसंहारजिह्मम्"** इस श्लोक में "मालिनीछन्द" है; जिसका लक्षण है – **"ननमयययुतेयं मालिनीभोगिलोकैः"**

  अर्थात् जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः नगण नगण मगण यगण और यगण हों, और आठवें तथा सातवें वर्ण में यति (विराम) हो, उसे 'मालिनी छन्द' कहते हैं। इस छन्द के प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं।
- इस प्रकार महाकवि भारवि ने सर्गान्त में छन्दपरिवर्तन करके महाकाव्य के लक्षण का पूर्णतया पालन किया है। **'श्री' शब्द से** इस महाकाव्य का **आरम्भ** तथा **'लक्ष्मी' शब्द से सर्ग का अन्त** करते हुए महाकवि भारवि ने एक नयी परम्परा का प्रारम्भ किया, जो परवर्ती माघ आदि कवियों द्वारा उसका अनुपालन किया गया।

किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ – **'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'**

किरातार्जुनीयम् का सर्गान्त **'दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः'**

किरातार्जुनीयम् में अलङ्कार

श्लोक-1 – श्रियः .... वनेचरः॥

प्रस्तुत श्लोक में वृत्यनुप्रास नामक अलङ्कार है, क्योंकि 'पालनीम्' एवं 'प्रजासु' में 'प्' की 'वृत्तिम्' 'वेदितुम्' 'वर्णिलिङ्गी' तथा 'विदितः' में 'व्' की और 'वने वनेचरः' में वने की आवृत्ति हो रही है। इसका लक्षणा है

अनेकस्यैकधा साम्यमसकृद्वाप्यनेकधा । एकस्य सकृदप्येष वृत्यनुप्रास उच्चते" (सा. द.)

श्लोक-2 – कृतप्रणामस्य .... हितैषिणः ॥

प्रस्तुत श्लोक में, प्रथम की तीन पंक्तियों में एक विशेष कथन का उपन्यास किया गया है, और चौथी पंक्ति में विद्यमान एक सामान्य बात से उसका समर्थन किया गया है, फलतः यहाँ **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है। लक्षण इस प्रकार है–

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते,

यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा

श्लोक-3 – द्विषां विघाताय .... वाचमाददे ॥

उपर्युक्त श्लोक में वृत्यनुप्रास नामक अलङ्कार है, क्योंकि 'विघाताय विधातुम् विनिश्चितार्थाम्, विशेषः और वाचम्' इत्यादि में 'व' की आवृत्ति हो रही है। आचार्य मम्मट के अनुसार अनुप्रास का लक्षण है – 'वर्णसाम्यमनुप्रासः'।

श्लोक-4 – क्रियासु .... दुर्लभं वचः।

प्रस्तुत श्लोक में प्रथम तीन चरण में कही गयी, एक विशेष बात का समर्थन चतुर्थ चरण में कही गयी सामान्य बात से होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है, काव्यप्रकाश के अनुसार इसका लक्षण श्लोक सं. 2 में देखें।

श्लोक-5 – स किंसखा .... सर्वसम्पदः।

प्रस्तुत श्लोक में राजाओं और अमात्यों को एक दूसरे के अनुकूल रहने रूप कारण का सम्पूर्ण सम्पत्तियों की प्राप्ति रूप कार्य से समर्थन हो रहा है। अतः **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है।

श्लोक-6 – निसर्गदुर्बोध .... विद्विषाम्॥

इस पद्य में 'अज्ञान से युक्त प्राणी' और छिपे हुए रहस्यों वाले नीति मार्ग का प्रयोग करने वाले राजाओं का दुर्बोध चरित इन दोनों परस्पर अत्यन्त भिन्न स्थितियों वाले पदार्थों का एक साथ प्रयोग होने से **विषम अलङ्कार** है, इसका लक्षण है,

''क्वचिद्यदति वैधर्म्यान्नश्लेषो घटनामियात् .... इत्यादि (काव्यप्रकाशः)।

श्लोक-7 – विशङ्कमानो .... सुयोधनः।

इस श्लोक में ''दुरोदरच्छद्मजिताम्'' इस विशेषण पद का अर्थ - जुए के द्वारा छल से जीती गयी पृथ्वी को 'नयेनजेतुम्' के अर्थ नीति से जीतने के लिए - का कारण होने से **काव्यलिङ्ग** नामक अलङ्कार है।

इसका लक्षण है - हेतोर्वाक्यपदार्थत्वे काव्यलिङ्गं निगद्यते (सा. द.)

श्लोक-8 – तथापि .... महात्मभिः।

इस श्लोक में कुटिल स्वभाव वाले दुर्योधन के द्वारा युधिष्ठिर को जीतने के लिये अपनी निर्मल कीर्ति का विस्तार करना - इस विशेष बात का समर्थन दुष्टों की सङ्गति की अपेक्षा ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला महापुरुषों का विरोध श्रेयस्कर है –

इस सामान्य कथन से करने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** नामक अलङ्कार है। इसमें **काव्यलिङ्ग** नामक अलङ्कार भी है, क्योंकि ''भूतिं समुन्नयन् (ऐश्वर्य को बढ़ाने के लिए) इस कारण पद से ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः''

(महापुरुषों का विरोध दुष्ट सङ्गति की अपेक्षा कुछ अच्छा होता है)

श्लोक-9 – कृतारिषड् .... पौरुषम्।

उपर्युक्त पद्य में ''नयेन पौरुषं वितन्यते'' (नीति से पौरुष का विस्तार किया जा रहा है) इस अर्थ के ज्ञान का हेतु - 'कृतारिषड्वर्गजयेन अगम्यरूपाम् मानवीं पदवीं प्रपित्सुना' तथा ''नक्तन्दिवं विभज्य अस्ततन्द्रिणा'' आदि है, अतएव इसमें **काव्यलिङ्ग अलङ्कार** है। इसका लक्षण, श्लोक सं. 7 में देखें।

श्लोक-10 – सखीनिव .... बन्धुताम्।

उपर्युक्त पद्य में **''रशनोपमा''** नामक अलङ्कार है, क्योंकि क्रमशः पहले के वाक्यों में वर्णित उपमेय आगे के वाक्यों में उपमान हो जाते हैं, आचार्य विश्वनाथ के अनुसार इसका लक्षण है–

कथिता रशनोपमा यथोर्ध्वमुपमेयस्य यदि स्याद् उपमानता।।

श्लोक 11 – असक्त .... परस्परम्।

इस श्लोक में 'सख्यमीयिवान् इव' इत्यादि शब्दों से उपमेय की उपमान के साथ सम्भावना होने के कारण **उत्प्रेक्षा** अलङ्कार है, जिसका लक्षण है –

''सम्भावनामथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत्'' (काव्यप्रकाशः)

श्लोक-12 – निरत्ययं .... सत्क्रिया।

इस पद्य में पूर्व-पूर्व वाक्य के विशेषण के रूप में उत्तर-उत्तर वाक्य की स्थापना होने के कारण **एकावली** नामक अलङ्कार है, इसका लक्षण इस प्रकार है,

● स्थाप्यतेऽपोह्यते वापि यथापूर्व परं परम्। विशेषणतया वस्तु यत्र सैकावली द्विधा'' (काव्यप्रकाश)

श्लोक-13 – वसूनि वाञ्छन्न .... धर्मविप्लवम्॥

प्रस्तुत श्लोक में 'नकार' का अनेक बार उच्चारण होने से **''वृत्यनुप्रासालङ्कार''** है।

श्लोक-14 – विधाय रक्षान् .... सम्पदः।

इस श्लोक में 'न शङ्कि' तथा 'कृ' इत्यादि की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** नामक शब्दालङ्कार है।

श्लोक-15 – अनारतं तेन .... सम्पदः।

यद्यपि साम, दान, दण्ड और भेद, ये परस्पर कभी स्पर्धा नहीं करते, फिर भी प्रस्तुत श्लोक में अर्थ की सुन्दरता को अभिव्यक्त करने के लिए उनमें प्रतिस्पर्धा की सम्भावना की गयी है। अतः इसमें **''उत्प्रेक्षा''** नामक अलङ्कार है, श्लोक का इव शब्द उत्प्रेक्षा को व्यञ्जित कर रहा है।

मन्ये शङ्के ध्रुवं प्रायो नूनमित्येवमादयः, उत्प्रेक्षा व्यञ्जकाः शब्दा इव शब्दोऽपि तादृशः''

श्लोक-16 – अनेकराजन्य .... मदः।

इस श्लोक में 'उदात्त' नामक अलङ्कार है, क्योंकि इसमें दुर्योधन की लोकोत्तर समृद्धि का वर्णन किया गया है। 'अलङ्कारसूत्र' के अनुसार इसका लक्षण है –

''समृद्धिमद्वस्तुवर्णनमुदात्तः''

श्लोक-17 – सुखेन लभ्या .... चकासति।

उपर्युक्त श्लोक में **उत्प्रेक्षा** अलङ्कार है जिसका लक्षण है, ''सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् (काव्यप्रकाशः)

श्लोक-18 – उदारकीर्ते .... मेदिनी।

उपर्युक्त पद्य में प्रस्तुत उपमेय ''पृथ्वी'' पर अप्रस्तुत उपमान ''गाय'' के दोहन रूप कार्य का आरोप होने के कारण **समासोक्ति अलङ्कार** है, लक्षण है –

''समासोक्तिः समैर्यत्र कार्यलिङ्गविशेषणैः, व्यवहारसमारोपः प्रस्तुतेऽन्यस्य वस्तुनः (सा. द.)

श्लोक-19 –महौजसो .... समीहितुम्।

इस पद्य में **काव्यलिङ्ग** और **'परिकर'** ये दो अलङ्कार हैं। साथ ही इन दो अलङ्कारों की 'संसृष्टि' भी है।

श्लोक-20 – महीभृतां .... फलैः।

इस पद्य में दुर्योधन के कार्यों की समानता विधाता के कार्यों से करने के कारण **'उपमा'** अलङ्कार है।

श्लोक-21 – न तेन .... शासनम्।।

प्रस्तुत श्लोक में ''माल्यम् इव'' यह अंश दुर्योधन की आज्ञा और माला में साधर्म्य है। अतः **उपमा अलङ्कार** है।

श्लोक-22 – स यौवराज्ये .... हिरण्यरेतसम्।।

प्रस्तुत श्लोक में ''उद्धतम्'' ''निधाय'' ''पुरोधसा'' ''धिनोति'' इत्यादि में ध् वर्ण की, ''दुःशासनः'' ''इद्धशासनः'' में 'श्' वर्ण की तथा ''हव्येन हिरण्यरेतसम्'' में ''ह'' वर्ण की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** अलङ्कार है।

श्लोक-23 – प्रलीन .... बलवद्विरोधिता।

इस श्लोक में ''दुरन्ताबलवद्विरोधिता'' इस सामान्य कथन का ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः'' इस विशेष कथन से समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है,

श्लोक-24 – कथाप्रसङ्गेन .... पदादिवोरगः

इस पद्य में श्लेषानुप्राणित पूर्णोपमा अलङ्कार है ''कथाप्रसङ्गेन'' ''अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः'' तवाभिधानात्'' इत्यादि श्लिष्टपद हैं। सः (दुर्योधनः) उपमेय, 'उरगः' उपमान। 'इव' वाचक शब्द तथा ''नताननः व्यथते'' साधारण धर्म सभी स्पष्टतया प्रतिपादित हैं अतः **पूर्णोपमा अलङ्कार** है।

श्लोक-25 – तदाशु कर्तुं .... मादृशां गिरः

उपर्युक्त पद्य में उत्तरार्द्ध के दूसरों के द्वारा कहे गये कथनों का संग्रह करने वाली मुझ जैसों की बातें केवल वृत्तान्त मात्र वाली होती है, इस सामान्य कथन का समर्थन पूर्वार्द्ध के तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्ममुद्यते विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्'' इस विशेष कथन से होने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** नामक अलङ्कार है।

श्लोक-26 – इतीरयित्वा .... सन्निधौ वचः

प्रस्तुत श्लोक में ''अनुप्रास अलङ्कार है, क्योंकि इसके पूर्वार्द्ध में ''न'' वर्ण की तथा चतुर्थ चरण में ''च'' वर्ण की आवृत्ति हुई है।

श्लोक-27 – निशम्य सिद्धिं .... गिरः।

अलङ्कार – उपर्युक्त श्लोक के द्वितीय चरण ''ततस्ततस्त्याः'' में 'त' वर्ण की कई बार आवृत्ति होने से **'अनुप्रास अलङ्कार'** है।

श्लोक-28 – भवादृशेषु .... दुराधयः।

अलङ्कार – उपर्युक्त श्लोक के पूर्वार्द्ध में **''उपमा''** अलङ्कार है, और उत्तरार्द्ध में वाक्यार्थहेतुक ''काव्यलिङ्ग'' अलङ्कार है।

श्लोक-29 – अखण्ड .... वर्जिता।

अलङ्कार – इस श्लोक में उपमेय ''मही'' एवं उपमान ''स्रक्'' के सादृश्य को ''इव'' वाचक शब्द से कहा गया है। इसलिए इसमें **उपमा** अलङ्कार है।

श्लोक-30 – व्रजन्ति ते .... इवेषवः॥

अलङ्कार – इस श्लोक में **उपमा** एवं **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है, साथ ही दोनों अलङ्कारों की तिलतण्डुलवत् संसृष्टि भी है। ''ये मायाविषु मायिनः न भवन्ति ते पराभवं व्रजन्ति'' इस सामान्य कथन का ''शठा'' ''असंवृताङ्गान् तथाविधान्'' निशिता ''इषवः इव'' प्रविश्य घ्नन्ति हि'' इस विशेष कथन से समर्थन होने के कारण **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है।

श्लोक-31 – गुणानुरक्ता .... श्रियम्।

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''आत्मवधू'' उपमेय और ''श्री'' उपमान का 'गुणानुरक्ताम्' आदि समानधर्म से कथन है, ''इव'' उपमा वाचक शब्द है। इस प्रकार इसमें **पूर्णोपमा** अलङ्कार है। इसका लक्षण है, ''साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्य उपमा द्वयोः'' (सा. द.)

श्लोक-32 – भवन्तमेतर्हि .... रुच्छिखः।

अलङ्कार – इस पद्य में ''सूखे हुए शमी के वृक्ष को प्रज्वलित कर देने वाले अग्नि की तरह आपका क्रोध क्यों नहीं उद्दीप्त होता या भड़क उठता? इस अंश में युधिष्ठिर के क्रोध की उपमा सूखे हुए शमी के वृक्ष के अन्तःस्थित अग्नि से दी गयी है, अतः इसमें **उपमा अलङ्कार** है। ''अग्नि और मन्यु'' में उपमानोपमेय भाव है।

श्लोक-33 – अबन्ध्यकोपस्य .... विद्विषादरः।

अलङ्कार – इस पद्य में व, ज, द और न् वर्णों की बार-बार आवृत्ति होने से **''अनुप्रास''** अलङ्कार है। इसके अतिरिक्त इसमें ''विद्विषादरः'' शब्द का ''विद्विषा + आदरः'' तथा ''विद्विषा + दरः'' इन दो प्रकारों से पदच्छेद होने के कारण **'सभङ्गश्लेष'** अलङ्कार भी है।

श्लोक-34 – परिभ्रमँल्लोहित .... वृकोदरः।

अलङ्कार – 'लोहितचन्दनोचितः' रेणुरूषितः' 'महारथः' 'पदातिः' इत्यादि विशेषण जो वृकोदर अर्थात् भीम के लिए प्रयुक्त हुए हैं, उनका एक विशेष अभिप्राय है। अतः इसमें परिकर नाम अलङ्कार है, जिसका लक्षण है,

''विशेषणैर्यत्साकूतैरुक्तिः परिकरस्तु सः'' इति (काव्यप्रकाश)

श्लोक-35 – ''विजित्य यः .... धनञ्जयः॥

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''अनुप्रास'' अलङ्कार है।

श्लोक-36 – 'वनान्तशय्या .... न बाधितुम्।

अलङ्कार – ''कृताकृती'' 'कचाचितौ' इत्यादि में **अनुप्रास** तथा ''अगजौ गजौ'' एवं ''धृतिसंयमौ यमौ'' में ''गजौ गजौ'' व ''यमौ यमौ'' अंश में **यमक** अलङ्कार है।

श्लोक-37 – इमामहं वेद .... ममाधयः

प्रस्तुत श्लोक पूर्वार्द्ध में ''विचित्ररूपाः खलुचित्तवृत्तयः'' - इस सामान्य कथन से 'अहं तावकीं धियं न वेद' इस विशेष कथन का समर्थन होने के कारण सामान्य से विशेष का समर्थन रूप ''**अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार'' है, श्लोक के उत्तरार्द्ध में वाक्यार्थ हेतुक **''काव्यलिङ्ग''** अलङ्कार भी है।

श्लोक-38 – पुराधिरूढः ....शिवारुतैः।

अलङ्कार – ''महाधनं शयनम्'' और अदभ्रदर्भां स्थलीम् अधिशय्य एवं ''स्तुतिगीतिमङ्गलैः विबोध्यसे और ''अशिवैः शिवारुतैः निद्रां जहासि'' इन विरुद्ध पदार्थों का वर्णन होने से

'विषम' अलङ्कार है।

श्लोक-39 – पुरोपनीतं .... समं वपुः।।

अलङ्कार – इस पद्य में **''सहोक्ति अलङ्कार''** है जिसका लक्षण है, ''सा सहोक्तिः सहार्थस्य बलादेकं द्विवाचकम्'' (का. प्र.)

श्लोक-40 – अनारतं यौ .... बर्हिषाम्।

अलङ्कार – मणिजटित पीठ पर रहने वाले और राजाओं के शिरोमाल्यों के पराग से रञ्जित होने वाले चरण तथा मृगों और तपस्वियों के द्वारा छिन्न कुशों के वनों में पड़ने वाले चरण इन दो विरुद्ध पदार्थों का प्रयोग होने से **'विषम' नामक अलङ्कार** है,

इसके अतिरिक्त ''मणिपीठशायिनौ'' 'मृगद्विजालूनशिखेषु' इत्यादि पदों के विशेष अभिप्राय से प्रयुक्त होने के कारण यहाँ **परिकर अलङ्कार** भी है।

श्लोक-41 – द्विषन्निमित्ता .... मानिनाम्।।

अलङ्कार – राजा युधिष्ठिर की यह ''दुर्दशा'' उनके दुर्भाग्यवशात् नहीं है, प्रत्युत शत्रुजन्य है, अतः वह असहनीय है, इसके समर्थन में वैधर्म्यपूर्वक सामान्य दिया गया है – ''परैरपर्यासितवीर्यसम्पदां पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' अतः यहाँ **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार** है। ''इव'' शब्द के द्वारा मन के उन्मूलन की सम्भावना होने से **उत्प्रेक्षा अलङ्कार** भी है। साथ ही पूर्वार्द्ध में 'म' वर्ण तथा उत्तरार्द्ध में र वर्ण की आवृत्ति होने से **अनुप्रास अलङ्कार** भी है।

श्लोक-42 – ''विहाय शान्तिं .... न भूभृतः''।

अलङ्कार – इस पद्य में **''अर्थान्तरन्यास''** और **''अनुप्रास''** अलङ्कार की संसृष्टि है। शत्रुओं को नष्ट करने के लिए शम को त्याग कर अपने विख्यात तेज को धारण कीजिए - इस विशेष कथन का समर्थन ''शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः'' रूपी सामान्य कथन से होने के कारण **अर्थान्तरन्यास** अलङ्कार है। पूर्वार्द्ध में 'वकार' की एवं उत्तरार्द्ध में 'नकार' की आवृत्ति होने से **अनुप्रास** अलङ्कार भी है।

श्लोक-43 – पुरः सरा .... मनस्विता।

अलङ्कार– प्रस्तुत श्लोक में **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है।

श्लोक-44 – अथ क्षमामेव .... पावकम्।

अलङ्कार – प्रस्तुत श्लोक में ''लक्ष्मीपतिलक्ष्म'' में 'ल', 'क्ष्' एवं 'म' की आवृत्ति होने के कारण **छेकानुप्रास** है।

श्लोक-45 – न समय .... सन्धिदूषणानि।।

अलङ्कार – 'ते समय परिरक्षणं न क्षमम्' इस विशेष कथन का 'विजयार्थिनः क्षितीशाः अरिषु सन्धिदूषणानि सोपधि विदधति' इस सामान्य कथन से समर्थन होने के कारण **''अर्थान्तरन्यास''** अलङ्कार है, इसके अतिरिक्त ''परेषु-परेषु'' में **यमक** तथा पूर्वार्द्ध में रकार एवं उत्तरार्द्ध में धकार इत्यादि वर्णों की आवृत्ति होने से **'अनुप्रास'** भी है।

श्लोक-46 – विधिसमय .... समभ्येतु भूयः।

अलङ्कार – इस श्लोक में उपमा के चारों अवयव विद्यमान हैं। अतः **पूर्णोपमा अलङ्कार** है। इसमें द्वितीयान्त पद ''त्वाम्'' (युधिष्ठिर) उपमेय ''दिनकृतम्'' (सूर्य) उपमान ''दीप्तिसंहार- जिह्मम्'' शिथिलवसुम् आपत्पयोधौ, मग्नम् एवम् उदीयमानम् इत्यादि साधारणधर्म तथा ''इव'' वाचक शब्द है।

4. प्रश्नमीमांसा

1. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ में आयी है? **TGT-1999, 2001**

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में **(B) किरातार्जुनीयम् में**
(C) नीतिशतकम् में (D) मेघदूतम् में

व्याख्या

* 'श्रिया दुरापः कथमीप्सितो भवेत्' अभिज्ञानशाकुन्तलम्
* 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' (किरातार्जुनीयम् 1/4)– वनेचर, हस्तिनापुर से लौटने के पश्चात् युधिष्ठिर से कहता है कि–हितकारी और प्रियवाणी दुर्लभ होती है।
* ''विभूषणं मौनमपण्डितानाम्''–नीतिशतकम् 7 से
* 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'– (मेघदूतम् 20) से

अतः विकल्प `B' सही है।

2. 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' यह किसकी उक्ति है? **TGT-1999**

(A) वनेचर की **(B) द्रौपदी की**
(C) युधिष्ठिर की (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या

* 'वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी'– वनेचर
* 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' (किरातार्जुनीयम् 1/43)– द्रौपदी युधिष्ठिर को उलाहना देते हुए कहती है कि–यदि आप जैसे लोग दुःसह अपमान को सहन कर लेंगे, तो मानवता आश्रयहीन होकर नष्ट हो जायेगी।
* किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर की एक भी उक्ति नहीं है। वह केवल श्रोता है। **अतः विकल्प `B' सही है।**

3. ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' यह किसके द्वारा कहा गया है? **TGT-1999**

(A) द्रौपदी द्वारा **(B) वनेचर द्वारा**
(C) दुर्योधन द्वारा (D) युधिष्ठिर द्वारा

व्याख्या

* ''विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्, कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः''–द्रौपदी द्वारा
* ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' (किरात. 1/5)–प्रस्तुत पद्य

में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि राजाओं और मन्त्रियों के परस्पर अनुकूल होने पर राज्य में सारी समृद्धियाँ अनुराग करती हैं।

* किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में दुर्योधन और युधिष्ठिर के द्वारा एक भी उक्ति नहीं कही गयी है। * प्रथमसर्ग में केवल वनेचर एवं द्रौपदी की उक्ति है।

अतः विकल्प `B' सही है।

4. 'स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह किसके विषय में कहा गया है? **TGT-1999**

(A) दुर्योधन के विषय में (B) वनेचर के विषय में
(C) युधिष्ठिर के विषय में (D) दुःशासन के विषय में

व्याख्या

* 'स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' (किरातार्जुनीयम् 1/23)– वनेचर, युधिष्ठिर से कहता है कि–वह (दुर्योधन) आप की ओर से आने वाली विपत्तियों को सोचता ही है (क्योंकि) अहो! बलशाली से विरोध करना दुःखमय परिणाम वाला होता है। इसलिए यह कथन दुर्योधन के विषय में कहा गया है।
* 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–वनेचर के विषय में
* 'मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्' युधिष्ठिर के विषय में
* 'निधाय दुःशासनमिद्धशासनः' दुःशासन की चर्चा

अतः विकल्प `A' सही है।

5. 'अदेवमातृकाः'' शब्द का प्रयोग किस ग्रन्थ में है? **TGT-1999**

(A)किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में
(B)अभिज्ञानशाकुन्तलम् के चतुर्थ अङ्क में
(C) उत्तररामचरितम् के तृतीय अङ्क में
(D) कादम्बरी (शुकनासोपदेश) में

व्याख्या

* 'वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति' (किरातार्जुनीयम् 1/17) प्रस्तुत पद्य में 'अवेदमातृकाः' शब्द का प्रयोग हुआ है जिसका अर्थ है–वर्षा के जल पर निर्भर न रहने वाले (कुरुदेशवासी)।
* 'क्षौमं' = रेशमीवस्त्र (अभिज्ञानशाकुन्तलम् 4/5)
* 'स्तनयित्नोः'=बादल के (उत्तररामचरितम् 3/7)
* 'अनार्या'–लक्ष्मी के लिए आया है– कादम्बरी शुकनासोपदेश में।

अतः विकल्प `A' सही है।

6. किरातार्जुनीयम् महाभारत के किस पर्व से लिया गया है? **TGT-2001**

(A) वनपर्व से (B) आदिपर्व से
(C) भीष्मपर्व से (D) सभापर्व से

व्याख्या

ग्रन्थ		**उपजीव्य**
(A) किरातार्जुनीयम्	–	वनपर्व (महाभारत)
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	आदिपर्व (महाभारत)
(C) गीता	–	भीष्मपर्व (महाभारत)
(D) शिशुपालवधम्	–	सभापर्व (महाभारत)

अतः विकल्प (A) सही है।

7. किरातार्जुनीयम् में कुल कितने सर्ग हैं? **TGT-2001**

(A) 18 (B) 19
(C) 20 (D) 22

व्याख्या

महाकाव्य सर्ग		**महाकाव्य सर्ग**
(A) किरातार्जुनीयम्	–	18
(B) रघुवंशमहाकाव्यम्	–	19
(C) शिशुपालवधम्	–	20
(D) नैषधीयचरितम्	–	22

अतः विकल्प (A) सही है।

8. 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' –
यह उक्ति किसकी है? **TGT-2001**

(A) वनेचर की (B) दुर्योधन की
(C) द्रौपदी की (D) युधिष्ठिर की

व्याख्या

* 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' (किरात. 1/6)– वनेचर, युधिष्ठिर से कहता है कि – गुप्त रहस्यों वाला नीतिमार्ग जो मेरे द्वारा जाना गया वह आपका प्रभाव है।
* 'शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः' – द्रौपदी

नोट – किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में दुर्योधन एवं युधिष्ठिर की एक भी उक्ति नहीं है।

अतः विकल्प (A) सही है।

9. 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः'– यह श्लोकांश किस ग्रन्थ से लिया गया है? **TGT-2001**

(A) मेघदूतम् से **(B) किरातार्जुनीयम् से**

(C) नीतिशतकम् से (D) शिवराजविजय से

व्याख्या–

* 'ह्रीमूढानां भवति विफलप्रेरणा चूर्णमुष्टिः'–(उत्तरमेघ)
* 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः (किरात. 1/28)– प्रस्तुत पद्य में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है कि – नारी की मर्यादा को नष्ट करने वाली दुष्ट मनोव्यथाएँ मुझे कुछ कहने के लिए उद्यत कर रही हैं।
* 'दुर्जनः परिहर्तव्यो विद्ययाऽलंकृतोऽपि सन्' – (नीतिशतकम्)
* 'सत्यः पात्यन्ते, सन्तश्च सन्ताप्यन्ते'–(शिवराजविजयम्) **अतः विकल्प (B) सही है।**

10. ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'' – इस श्लोक में 'वर्णिलिङ्गी' शब्द का अर्थ है? **TGT-2003**

(A) ब्रह्मचारी (B) ब्राह्मण

(C) राजा लोग (D) आत्मीयजन

व्याख्या

(A) वर्णिलिङ्गी – ब्रह्मचारी (B) द्विजः – ब्राह्मण

(C) क्षितीशाः – राजा लोग (D) परेतरान् – आत्मीयजन

अतः विकल्प (A) सही है।

11. 'किरातार्जुनीयम्' काव्य में दुर्योधन अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए जो आचरण करता है वह आचरण/नीति निर्धारित है – **TGT-2003**

(A) बृहस्पति के द्वारा (B) नारद के द्वारा

(C) मनु के द्वारा (D) कामन्दक के द्वारा

व्याख्या – ''कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीमगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना'' (किरात. 1/9) अर्थात् छः शत्रुओं के समुदाय पर विजय प्राप्त करने वाला वह दुर्योधन मनु द्वारा प्रतिपादित आचरण का पालन करता है। **अतः विकल्प (C) सही है।**

12. दुर्योधन कुरु की प्रजा को प्रसन्न करने के लिए जो विशेष व्यवस्था करता है, वह सम्बन्धित है – **TGT-2003**

(A) करों को उदार बनाने में

(B) उपहार बाँटने में

(C) कृष्ण के साथ सम्बन्धों को सुधारने में

(D) सिंचाई व्यवस्था को उन्नत करने में

व्याख्या–
'वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति' (किरात. 1/17) अर्थात् वर्षा के जल पर ही निर्भर न रहने वाले कुरुदेशवासी (नदी, नहर से सिंचाई करने की व्यवस्था दुर्योधन द्वारा की गई है) धान्य आदि सम्पत्ति को धारण करते शोभित होते हैं।
अतः विकल्प (D) सही है।

13. 'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा, धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्' – प्रस्तुत श्लोक में 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ है? **TGT-2003**
(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) कुबेर (D) ब्रह्मा

व्याख्या – वनेचर, दुर्योधन के विषय में कहता है कि – पुरोहित की आज्ञा के अनुसार बिना थके हुए यज्ञों में हव्य के द्वारा अग्नि को प्रसन्न करता है। (किरात. 1/22)

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
(A) हिरण्यरेताः	–	अग्नि	(B) वासवः	–	इन्द्र
(C) वसुः	–	कुबेर	(D) स्रष्टा	–	ब्रह्मा

अतः विकल्प (A) सही है।

14. किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन की तुलना की गयी है? **TGT-2004**
(A) उरग से (B) शुक से
(C) द्विप से (D) सिंह से

व्याख्या
''स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः'' (किरात-1/24) के अनुसार दुर्योधन की तुलना उरग (साँप) से की गयी है। **अतः विकल्प `A' सही है।**

15. किरातार्जुनीयम् में गुप्तचर किस वेष में जाता है? **TGT-2004**
(A) सैनिक (B) संन्यासी
(C) ब्रह्मचारी (D) मन्त्री

व्याख्या–'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ'(किरात० 1/1) अर्थात् वह ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर लौट आया।
अतः विकल्प 'C' सही है।

16. द्वैतवन में गुप्तचर किसके पास लौट आया? **TGT-2004**
(A) दुर्योधन **(B) युधिष्ठिर**
(C) कृष्ण (D) भीष्म

व्याख्या–'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ, युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'(किरात० 1/1) अर्थात् ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। **अतः विकल्प `B' सही है।**

17. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'–यहाँ 'मादृशां' से तात्पर्य है? **TGT-2004**

(A) भीम (B) युधिष्ठिर
(C) गुप्तचर (D) द्रौपदी

व्याख्या– 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' (किरात0 1/25) प्रस्तुत पंक्ति में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि–हम जैसों की वाणी केवल बात बताने वाली है। **अतः विकल्प `C' सही है।**

18. धन जीतकर युधिष्ठिर को कौन देता था? **TGT-2004**

(A) भीम (B) नकुल
(C) सहदेव **(D) अर्जुन**

व्याख्या–''विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान्, कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः'' (किरात0 1/35) द्रौपदी के इस कथन से ज्ञात होता है, कि अर्जुन ने उत्तर कुरु प्रदेश को जीतकर प्रचुर मात्रा में सोना-चाँदी रूपी धन युधिष्ठिर को दिया था। **अतः विकल्प `D' सही है।**

19. ''विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः''– **TGT-2004**

यह सुभाषित किस ग्रन्थ से है?

(A) मेघदूतम् से **(B) किरातार्जुनीयम् से**
(C) उत्तररामचरितम् से (D) शिवराजविजय से

व्याख्या

* ''एकः सूते सकलमबलामण्डनं कल्पवृक्षः''–मेघदूतम् से
* ''विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः''–किरातार्जुनीयम् से
* ''ननु लाभो हि रुदितम्''–उत्तररामचरितम् से
* ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातयेयम्''–शिवराजविजय से।

अतः विकल्प `B' सही है।

20. 'किरातार्जुनीयम्' ग्रन्थ में किस विषय का चमत्कारित्व है? **TGT-2004**

(A) अर्थगौरव का (B) उपमा का
(C) पदलालित्य का (D)उपर्युक्त तीनों का

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध है।

	कवि		प्रसिद्धि
(A)	भारवि	–	अर्थगौरव
(B)	कालिदास	–	उपमा
(C)	दण्डी	–	पदलालित्य
(D)	माघ	–	अर्थगौरव, उपमा, पदलालित्य

अतः विकल्प (A) सही है।

21. 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' – **TGT-2004**

यह श्लोकांश कहाँ से उद्धृत है?

(A) किरातार्जुनीयम् से (B) प्रतिमानाटकम् से
(C) मालविकाग्निमित्रम् से (D) शिशुपालवधम् से

व्याख्या – 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' (किरात. 1/1) अर्थात् प्रजाओं के व्यवहार को जानने के लिए युधिष्ठिर ने जिसको (वनेचर) नियुक्त किया था, वह द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। **अतः विकल्प (A) सही है।**

22. 'वनेचर' शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द होगा? **TGT-2004**

(A) ब्रह्मचारी **(B) गुप्तचर**
(C) वर्णिलिङ्गी (D) दूत

व्याख्या – वने चरतीति वनेचरः (वन में विचरण करने वाला) किरातार्जुनीयम् में 'वनेचर' शब्द गुप्तचर के लिए प्रयुक्त है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

23. 'किरातार्जुनीयम्' में अर्जुन को कौन-सा **TGT-2004**

प्रसिद्ध अस्त्र प्राप्त हुआ है?

(A) गाण्डीव **(B) पाशुपतास्त्र**
(C) अग्निबाण (D) जृम्भकास्त्र

व्याख्या –

* किरातार्जुनीयम् के 18 वें सर्ग में अर्जुन को शिव से 'पाशुपत अस्त्र' की प्राप्ति होती है।
* 'गाण्डीव' अर्जुन के धनुष का नाम है।
* 'अग्निबाण' अग्निदेवता से सम्बन्धित है। * 'जृम्भकास्त्र' कुश और लव को जन्मजात प्राप्त था। **अतः विकल्प (B) सही है।**

24. 'किरातार्जुनीयम्' में किरात है? **TGT-2004**

(A) गणेश **(B) शिव**
(C) राहु (D) युधिष्ठिर

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् में किरातवेशधारी भगवान् 'शिव' हैं। जिनका अर्जुन के साथ इन्द्रकील पर्वत पर घनघोर युद्ध होता है। और बाद में प्रसन्न होकर वह अर्जुन को 'पाशुपत अस्त्र' प्रदान करते हैं। **अतः विकल्प (B) सही है।**

25. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' **TGT-2004**

इस वाक्य का हिन्दी में अनुवाद होगा?

(A) हठपूर्वक कार्य करें (B) हठपूर्वक कार्य न करें
(C) सहसा कार्य करें **(D) सहसा कार्य न करें**

व्याख्या – 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' – यह भारवि की उक्ति है, जिसका अर्थ है– अचानक (सहसा) कार्य न करें। **अतः विकल्प (D) सही है।**

26. 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था जानने के लिए किसे भेजा गया था? **TGT-2004**

(A) भीम को (B) अर्जुन को
(C) सहदेव को **(D) वनेचर को**

व्याख्या – भारवि कृत 'किरातार्जुनीयम्' में दुर्योधन की शासन व्यवस्था को जानने के लिए युधिष्ठिर ने वनेचर को नियुक्त किया था। "श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं".... 'युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः' (किरात0 1/1) **अतः विकल्प (D) सही है।**

27. "नारिकेलफलसम्मितं वचः" किस कवि के बारे में कहा गया है? **TGT-2004, 2009**

(A) कालिदास **(B) भारवि**
(C) भवभूति (D) बाणभट्ट

व्याख्या

* 'कविकुलगुरुः कालिदासो विलासः' कालिदास के बारे में जयदेव की प्रशस्ति है।
* 'नारिकेलफलसम्मितं वचः' – भारवि के विषय में मल्लिनाथ की प्रशस्ति है।
* 'साम्बा पुनातु भवभूतिपवित्रमूर्तिः'–भवभूति
* 'वश्यवाणी कविचक्रवर्ती' – बाणभट्ट के विषय में हर्षवर्धन की प्रशस्ति है।

अतः विकल्प (B) सही है।

28. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'– यह उक्ति किसकी है? **TGT-1999, 2001, 2004**

(A) वनेचर की (B) द्रौपदी की
(C) युधिष्ठिर की (D) दुर्योधन की

व्याख्या– किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में
वनेचर की उक्ति - (1) प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः (1/2)
(2) हितं मनोहरि च दुर्लभं वचः (1/4)
द्रौपदी की उक्ति = पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम् (1/41)
दुर्योधन, युधिष्ठिर दोनों लोगों की उक्ति नहीं है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

29. किरातार्जुनीयम् में 'अदेवमातृका' कौन है? **TGT-2005**

(A) नदी जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वाले
(B) बादलों की वर्षा पर निर्भर रहने वाले
(C) देवताओं की कृपा प्राप्ति के लिए यज्ञानुष्ठान करने वाले
(D) राक्षसी शक्तियों के भरोसे कार्य सिद्धि करने वाले

व्याख्या–

* "वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति" (किरात0 1/17) अर्थात् वर्षा के जल पर ही निर्भर न रहने वाले कुरुदेशवासी (नदी, जलाशय, एवं नहरों से सिंचाई करने वाले) अदेवमातृक हैं।
* नदी, जलाशय एवं नहरों से सिंचाई करने वालों को अदेवमातृक कहा जाता है।
* वर्षा के जल पर निर्भर रहने वाले देवमातृक की श्रेणी में आते हैं।

अतः विकल्प (A) सही है।

30. वनेचर की बात सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे? **TGT-2005**

(A) अपने विश्रामगृह में **(B) द्रौपदी के समीप**
(C) व्यास के समीप (D) हिमालय पर्वतपर

व्याख्या– * 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा, तदाचचक्षेऽनुज-सन्निधौ वचः' अर्थात् राजा युधिष्ठिर वनेचर से सारा समाचार जानकर द्रौपदी के आवास में प्रविष्ट होकर छोटे भाइयों के समीप सम्पूर्ण वृत्तान्त द्रौपदी से कहते हैं।–(किरात0 1/26) * यहाँ 'कृष्णा' शब्द द्रौपदी के लिए प्रयुक्त है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

31. किस प्रकार के वचन दुर्लभ होते हैं? **TGT-2005**

(A) प्रिय किन्तु असत्य **(B) हितकारी और मनोहर**
(C) हानिकर एवं कठोर (D) सत्य और अप्रिय

व्याख्या– "हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः" (किरात0 1/4) वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि हितकारी और मनोहर (प्रिय) वचन दुर्लभ होते हैं। **अतः विकल्प (B) सही है।**

32. 'कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ विलोकयन्नुत्सहसे न बाधितुम्' इस श्लोक में 'धृतिसंयमौ' किस युग्म के लिए प्रयुक्त है? **TGT-2005**

(A) राम-लक्ष्मण **(B) नकुल-सहदेव**
(C) भीम-अर्जुन (D) बलराम-कृष्ण

व्याख्या– यह श्लोकांश द्रौपदी का कथन है जिसमें युधिष्ठिर को लक्ष्य करके वह कहती है कि–इन दोनों (नकुल/सहदेव) को देखते हुए आप धैर्य और संयम छोड़ने के लिए क्यों नहीं साहस करते? (किरात0 1/36) **अतः विकल्प (B) सही है।**

33. महापुरुषों के साथ कैसा विरोध भी अच्छा होता है? **TGT-2005**

(A) महापुरुषों को पराजित करने वाला
(B) धन-सम्पत्ति दिलाने वाला
(C) उन्नति कराने वाला
(D) मित्रता बढ़ाने वाला

व्याख्या– "समुन्नयन्भूतिमनार्यसङ्गमाद्वरं, विरोधोऽपि समं महात्मभिः!" अर्थात् ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए मनुष्य के लिए नीचों के संग की अपेक्षा महापुरुषों के साथ विरोध करना भी अच्छा (उन्नति कराने वाला) होता है। (किरात0 1/8)

अतः विकल्प (C) सही है।

34. दुर्योधन यज्ञ कार्य में कैसे लगा रहता है? **TGT-2005**
(A) चारों ओर सैनिक नियुक्त करके
(B) शत्रुओं को कैद करके
(C) मित्रों को उपकृत करके
(D) दुःशासन को युवराज पद पर बैठा करके

व्याख्या– 'स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं विधाय दुःशासनमिद्धशासनः' (किरात 1/22) नवयौवन के कारण अति गर्विष्ठ दुःशासन को युवराज के पद पर नियुक्त कर पुरोहित की आज्ञा के अनुसार बिना थके हुए यज्ञों में हव्य के द्वारा अग्नि को दुर्योधन प्रसन्न करता है। **अतः विकल्प (D) सही है।**

35. महाकवि भारवि किस शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं? **TGT-2005**
(A) सरल (B) कठोर
(C) अर्थगौरव (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– *महाकवि भारवि अर्थगौरव शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं यथा–
उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्। दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः''– उद्भट। **अतः विकल्प (C) सही है।**

36. दुर्योधन कब भयभीत हो जाता है? **TGT-2005**
(A) श्रीकृष्ण की माया शक्ति सोचकर **(B) युधिष्ठिर का नाम सुनकर**
(C) पाण्डवों की दैवीय शक्ति से (D) विदुर के उपदेश सुनकर

व्याख्या– ''तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः।'' अर्थात् अति असह्य मन्त्रपद रूप आपके (युधिष्ठिर) नाम से तथा अर्जुन के पराक्रम को स्मरण करके नीचे मुख किए (वह दुर्योधन) पीड़ा का अनुभव करता है। –(किरात 1/24) **अतः विकल्प (B) सही है।**

37. वनेचर किस वन में युधिष्ठिर के पास आया? **TGT-2009**
(A) विन्ध्याटवी में (B) दण्डकारण्य में
(C) द्वैतवन में (D) पञ्चवटी में

व्याख्या– * ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।'' (किरात० 1/1) अर्थात् वह ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला वनेचर सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। **अतः विकल्प (C) सही है।**
* विन्ध्याटवी' का वर्णन कादम्बरी में है, तथा दण्डकारण्य एवं पञ्चवटी का वर्णन उत्तररामचरितम् में है।

38. 'कुरूणामधिपः' का तात्पर्य है? **TGT-2009**
(A) अर्जुन (B) भीम
(C) दुर्योधन (D) दुःशासन

व्याख्या–

* 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं' (किरात० 1/1) अर्थात् कुरुदेश के राजा (दुर्योधन) के प्रजापालन के व्यवहार को जानने के लिए........।

* यहाँ 'कुरूणामधिपः' शब्द दुर्योधन के लिए आया है। भारवि दुर्योधन के लिए सुयोधन शब्द का भी प्रयोग करते हैं। **अतः विकल्प (C) सही है।**
* किरातार्जुनीयम् में 'वृकोदरः' शब्द भीम के लिए तथा 'धनञ्जयः' शब्द अर्जुन के लिए प्रयुक्त है।

39. 'महीभुजे' में कौन-सी विभक्ति है? **TGT-2009**

(A) प्रथमा **(B) चतुर्थी**
(C) षष्ठी (D) सप्तमी

व्याख्या– * ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे, जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः'' (किरात0 1/2) अर्थात् प्रणाम करने के बाद शत्रु द्वारा जीती गई पृथ्वी का वृत्तान्त महाराज युधिष्ठिर से वर्णन करते हुए .....।

* यहाँ 'महीभुजे' में चतुर्थी विभक्ति का विधान –''क्रियार्थोपपदस्य च कर्मणि स्थानिनः'' सूत्र से हुआ है। **अतः विकल्प (B) सही है।**

40. किरातार्जुनीयम् का प्रथम पद्य किस छन्द में है? **TGT-2009**

(A) वंशस्थ (B) स्रग्धरा
(C) अनुष्टुप् (D) मन्दाक्रान्ता

व्याख्या

(A) 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं'–किरातार्जुनीयम् के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें 'वंशस्थ छन्द' है।

(B) ''या सृष्टिः स्रष्टुराद्या वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री'' अभिज्ञानशाकुन्तलम् के इस पद्य में आशीर्वादात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें स्रग्धराछन्द है।

(C) 'नत्त्वा सरस्वतीं देवीं शुद्धां गुण्यां करोम्यहम्'–लघुसिद्धान्तकौमुदी के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक/नमस्कारात्मक मङ्गलाचरण और अनुष्टुप् छन्द है।

(D) 'कश्चित् कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः''–मेघदूतम् के इस पद्य में वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण है जिसमें मन्दाक्रान्ता छन्द है। **अतः विकल्प (A) सही है।**

41. ''सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः'' **TGT-2009**

किस कवि का प्रिय श्लोक है?

(A) भारवि का (B) कालिदास का
(C) बाणभट्ट का (D) माघ का

व्याख्या– 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः (बिना विचार किये किसी भी कार्य को सहसा नहीं करना चाहिए) यह भारवि का प्रिय श्लोक है।

अतः विकल्प (A) सही है।

42. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रत्येक सर्ग का अन्तिम पद है? **TGT-2009**

(A) लक्ष्मी (B) विष्णु
(C) शिव (D) श्री

व्याख्या– * ''दिनकृतमिव लक्ष्मीस्त्वां समभ्येतु भूयः'' (किरात० 1/46) किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग की अन्तिम पंक्ति है, इसमें 'लक्ष्मी' पद का प्रयोग हुआ है।
* इसीप्रकार किरातार्जुनीयम् के प्रत्येकसर्ग का अन्तिम पद लक्ष्मी है।
अतः विकल्प (A) सही है।

43. ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' **TGT-2004, 2009**

किस कवि के बारे में कहा जाता है?

(A) महाकवि बाण (B) कालिदास
(C) भास **(D) भारवि**

व्याख्या– प्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ ने भारवि की रचना की उपमा नारियल के फल से दी है। जो ऊपर से कठोर, किन्तु अन्दर से कोमल और सरस होता है। ''नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः सपदि तद् विभज्यते''–मल्लिनाथ।
अतः विकल्प (D) सही है।

44. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' **TGT-2009**

यह कथन किसका है।

(A) द्रौपदी का (B) वनेचर का
(C) दुर्योधन का (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या– प्रस्तुत सूक्ति में द्रौपदी, युधिष्ठिर को उलाहना देते हुए कहती है कि– निष्काम तपस्वीजन शान्ति के द्वारा (काम, क्रोध आदि) शत्रुओं को जीतकर सिद्धि प्राप्त करते हैं, राजा नहीं। (किरात० 1/42) **अतः विकल्प (A) सही है।**

45. 'भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः' पंक्ति का भावसाम्य **TGT-2011**

निम्नलिखित में से किसके साथ बैठता है?

(A) जैसी करनी, वैसी भरनी
(B) जैसे के संग तैसा
(C) जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी
(D) इनमें से किसी के साथ नहीं

व्याख्या – द्रौपदी युधिष्ठिर को शत्रुओं के प्रति उत्तेजित करते हुए कहती हैं कि – मूढबुद्धि वाले वे लोग पराभव प्राप्त करते हैं, जो मायावियों के विषय में स्वयं मायावी नहीं होते। **व्रजन्ति वे मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः॥** (कि. 1/30) स्पष्ट है कि इन पंक्तियों का भावसाम्य ''जैसे के संग तैसा'' से मिलता है,
अतः विकल्प (B) सही है।

46. भारवि का आश्रयदाता था? **TGT-2010**

(A) पुलकेशिन का भाई (B) हर्ष
(C) यशोवर्मा (D) पुलकेशिन

कवि		राज्याश्रय
* भारवि	–	पुलकेशिन द्वितीय का भाई (विष्णुवर्धन)
* बाणभट्ट	–	सम्राट् हर्षवर्द्धन
* भवभूति	–	यशोवर्मा
* रविकीर्ति	–	पुलकेशिन द्वितीय

अतः विकल्प (A) सही है।

47. भारवि थे– **TGT-2010**

(A) दाक्षिणात्य (B) औदीच्य
(C) पश्चिमी भारत के (D) पूर्वी भारत के

व्याख्या– 'आतपत्र भारवि' दक्षिण भारत के एलिचपुर (अचलपुर) नामक स्थान के निवासी थे। अतः सभी विद्वान् उन्हें एक मत होकर दाक्षिणात्य मानते हैं।

अतः विकल्प (A) सही है।

48. किरातार्जुनीयम् का गुप्तचर किस वेष में हस्तिनापुर जाता है? **TGT-2010**

(A) संन्यासी (B) मन्त्री
(C) ब्रह्मचारी (D) सैनिक

व्याख्या– ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।'' (किरात0 1/1) अर्थात् वह ब्रह्मचारी का वेश धारण करने वाला सारा वृत्तान्त जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास लौट आया। **अतः विकल्प (C) सही है।**

49. ''कृतप्रणामः'' में कौन-सा समास है? **TGT-2010**

(A) तत्पुरुष (B) कर्मधारय
(C) द्वन्द्व **(D) बहुव्रीहि**

व्याख्या–

पद		समास
(A) **षड्वर्गः**	–	षष्ठीतत्पुरुष (षण्णां वर्गः)
(B) **सत्क्रिया**	–	कर्मधारय (सती क्रिया)
(C) **नक्तन्दिवम्**	–	द्वन्द्व (नक्तं च दिवा च)
(D) **कृतप्रणामः**	–	बहुव्रीहि (कृतः प्रणामः येन सः)

अतः विकल्प (D) सही है।

50. किस महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया गया है? **TGT-2010**

(A) रघुवंशम् (B) शिशुपालवधम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) नैषधीयचरितम्

व्याख्या–

* कालिदास कृत रघुवंशमहाकाव्य 19 सर्गों तथा 1569 श्लोकों में विभक्त है।

* माघ कृत शिशुपालवधमहाकाव्य के प्रत्येक सर्ग का प्रारम्भ 'श्री' शब्द से और अन्त भी 'श्री' शब्द से होता है। इस पर मल्लिनाथ की 'सर्वङ्कषा' नाम की टीका है।
* किरातार्जुनीय महाकाव्य के प्रत्येक सर्ग का आरम्भ 'श्री' शब्द से तथा अन्त 'लक्ष्मी' शब्द से होता है। अतः इसे 'लक्ष्मीपदाङ्क' भी कहा जाता है। मल्लिनाथ ने इस पर 'घण्टापथ' नामक टीका लिखी है।
* श्रीहर्ष कृत 'नैषधीयचरितम्' 22 सर्गों तथा 2830 श्लोकों में विभक्त है इस महाकाव्य के नायक नल (धीरोदात्त कोटि) के हैं। इसके प्रत्येक सर्ग के अन्त में 'आनन्द' पद का प्रयोग है, अतः इसे ''आनन्दाङ्क महाकाव्य'' भी कहते हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

51. 'वीररस' प्रधानकाव्य है? **TGT-2010**

(A) उत्तररामचरितम् (B) नैषधीयचरितम्
(C) कुमारसम्भवम् **(D) किरातार्जुनीयम्**

व्याख्या

ग्रन्थ	लेखक	प्रधानरस
* उत्तररामचरितम्	भवभूति	करुणरस
* नैषधीयचरितम्	श्रीहर्ष	शृङ्गाररस
* कुमारसम्भवम्	कालिदास	शृङ्गाररस
* किरातार्जुनीयम्	भारवि	वीररस

अतः विकल्प (D) सही है।

52. किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द में प्रयुक्त गण है– **TGT-2013**

(A) जगण तगण जगण रगण
(B) जगण तगण जगण दो गुरुवर्ण
(C) तगण तगण जगण गुरु गुरु
(D) तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु

व्याख्या

(A) किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में कुल 46 श्लोक हैं। जिसके अन्तिम 46वें श्लोक में मालिनी छन्द, तथा 45वें श्लोक में पुष्पिताग्रा छन्द है। शेष प्रथम श्लोक से लेकर 44वें श्लोक तक वंशस्थ है। अतः किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग में सर्वाधिक प्रयुक्त छन्द 'वंशस्थ' होगा। जिसका लक्षण है– ''जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ'' अर्थात् ''जगण तगण जगण रगण'' गणों वाला छन्द वंशस्थ कहा जाता है, इसके प्रत्येक चरण में 12 अक्षर होते हैं।

यथा– ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'' (किरात0 1/1)

अतः विकल्प `A' सही है।

(B) ''जगण तगण जगण दो गुरुवर्ण'' से युक्त छन्द 'उपेन्द्रवज्रा' कहा जाता है, इसका लक्षण निम्नवत् है– ''उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ''
अर्थात् उपेन्द्रवज्रा के प्रत्येक चरण में जगण, तगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। यथा– ''त्वमेव माता च पिता त्वमेव''

(C) ''तगण, तगण, जगण गुरु गुरु'' – इन गणों से युक्त छन्द 'इन्द्रवज्रा' कहा जाता है– ''स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः'' इसके प्रत्येक चरण में 11वर्ण होते हैं।
यथा– ''अर्थो हि कन्या परकीय एव''

(D) ''तगण भगण जगण जगण गुरु गुरु'' इन गणों से युक्त छन्द को 'वसन्ततिलका' कहते हैं। इसका लक्षण है–
''उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः'' इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं। यथा– ''न्याय्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः'' – नीतिशतकम्

53. ''वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः'' **TGT-2013**

यह उक्ति किस ग्रन्थ में किसने कही है?
(A) शिवराजविजय में, सेनापति ने
(B) किरातार्जुनीय में, वनेचर ने
(C) किरातार्जुनीय में, युधिष्ठिर ने
(D) शिवराजविजय में, शिवाजी ने

व्याख्या

* एहि, एहि, समये समायातोऽसि (शिवराजविजय, चतुर्थनिःश्वास) आओ, आओ, ठीक समय पर आ गये – दुर्गाध्यक्ष (सेनापति)
* वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः (किरात०-1/8) – वनेचर
* युधिष्ठिर की किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में कोई कथन नहीं है।
* ''प्राणाः यान्तु न च धर्मः'' (शिवराजविजय द्वितीय निःश्वास) – शिववीरः (शिवाजी) अर्थात् प्राण भले ही चलें जाय, पर धर्म न जाय। **अतः विकल्प `B' सही है।**

54. किरातार्जुनीयम् (प्रथमसर्ग) के कथानक में किसका वर्णन नहीं है? **TGT-2013**

(A) द्वैतवन में पाण्डवों का निवास
(B) गुप्तचर द्वारा दुर्योधन का वृत्तान्त
(C) द्रौपदी का क्रोध
(D) द्रौपदी के क्रोध का युधिष्ठिर द्वारा समर्थन

व्याख्या

* ''स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः'' किरातार्जुनीयम् की इस पंक्ति से स्पष्ट है कि युधिष्ठिर आदि पाण्डव द्वैतवन में निवास करते थे।
* 'दुरोदरच्छद्मजितां समीहते, नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' 'तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' आदि पंक्तियों से स्पष्ट है कि वनेचर रूपी गुप्तचर द्वारा युधिष्ठिर दुर्योधन का वृत्तान्त जानते हैं।
* (i) नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः, (ii) तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः, इत्यादि कथनों से स्पष्ट है कि दुर्योधन के उत्कर्ष को सुनकर द्रौपदी द्वारा युधिष्ठिर के ऊपर क्रोध किया जाता है।
* द्रौपदी के क्रोध करने पर युधिष्ठिर न तो उसके क्रोध का समर्थन करते हैं और न ही विरोध। किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में युधिष्ठिर केवल एक शान्तचित्त श्रोता के रूप में पहले वनेचर द्वारा हस्तिनापुर का समाचार सुनते हैं, बाद में द्रौपदी की क्रोधपूर्ण फटकार। **अतः विकल्प `D' सही है।**

55. किरातार्जुनीयम् का नायक कौन है? **TGT-2013**

(A) युधिष्ठिर **(B) अर्जुन**
(C) शिव (किरातवेशधारी) (D) भीम

व्याख्या–

- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के नायक अर्जुन हैं, क्योंकि पाशुपतास्त्र की प्राप्ति इस ग्रन्थ का प्रयोजन है, और यह अस्त्र किरातवेशधारी शिव से अर्जुन को प्राप्त हुआ है। इन्द्रकील पर्वत पर तपस्या करने भी अर्जुन ही जाते हैं। किरातवेषधारी शिव से युद्ध भी अर्जुन ही करते हैं। इस ग्रन्थ का नामकरण भी किरातवेषधारी शिव और अर्जुन के नाम पर किया गया है इससे सिद्ध होता है कि इस महाकाव्य के नायक अर्जुन ही हैं।
- युधिष्ठिर पाँचों पाण्डवों में सबसे बड़े हैं और प्रथमसर्ग में वनेचर की बातों को सुनते हैं, किन्तु ये नायक नहीं हैं।
- किरातवेषधारी शिव किरातार्जुनीयम् के सहनायक हैं।
- भट्टनारायण विरचित वेणीसंहारम् के भीम धीरोद्धत कोटि के नायक हैं।

अतः विकल्प (B) सही है।

56. ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' **TGT-2013**

यह वचन किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है–

(A) उत्तररामचरितम् (B) नीतिशतकम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

ग्रन्थ **सूक्ति**

* उत्तररामचरितम् (2.26) - ''पुराभूतः शोको विकलयति मां नूतन इव''
* नीतिशतकम् (दैवपद्धति)-''प्रायो गच्छति यत्र भाग्यरहितः तत्रैव यान्त्यापदः''
* किरातार्जुनीयम् (1/41) -''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' (7/35)
* अभिज्ञानशाकुन्तलम्-''प्रवर्ततां प्रकृतिहिताय पार्थिवः, सरस्वती श्रुतमहतां महीयताम्''

अतः विकल्प `C' सही है।

57. किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस क्या है? **TGT-2013**

(A) शृङ्गाररस (B) करुणरस
(C) वीररस (D) शान्तरस

व्याख्या–

* **शृङ्गाररस प्रधानग्रन्थ–**
  (i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ii) नैषधीयचरितम्
  (iii) मृच्छकटिकम् (iv) स्वप्नवासवदत्तम्
  (v) रत्नावली
* **करुणरस प्रधानग्रन्थ–**
  (i) उत्तररामचरितम् (ii) कुन्दमाला (iii) वाल्मीकीयरामायणम्
* **वीररस प्रधानग्रन्थ–**
  (i) किरातार्जुनीयम् (ii) शिशुपालवधम्
  (iii) शिवराजविजयः (iv) मुद्राराक्षसम्
  (v) महावीरचरितम्
* **शान्तरस प्रधानग्रन्थ–**
  (i) महाभारतम् (ii) बुद्धचरितम्
  (iii) शारिपुत्रप्रकरणम्

अतः विकल्प `C' सही है।

58. किरातार्जुनीयम् शब्द में कौन सा तद्धित प्रत्यय लगता है? **TGT-2013**

(A) फ (B) घ
(C) ख **(D) छ**

व्याख्या–

किरातार्जुन + छ
किरातार्जुन + ईय (आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' किरातार्जुनीयम् से 'छ' के स्थान पर 'ईय' आदेश) **अतः विकल्प `D' सही है।**

(A) गार्ग्य + फ (आयन) = गार्ग्यायणः
(B) क्षत्र + घ (इय) = क्षत्रियः
(C) ग्राम + खञ् (ईन) = ग्रामीणः
(D) किरातार्जुन + छ (ईय) = किरातार्जुनीयम्

59.''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'' **TGT-2014**

किस प्रकार का मङ्गलाचरण है-

(A) आशीर्वादात्मक (B) नमस्कारात्मक

(C) वस्तुनिर्देशात्मक (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

व्याख्या–

ग्रन्थ -उपास्य देवता-मंगलाचरण -छन्द

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् –अष्टमूर्तिशिव –आशीर्वादात्मक–स्रग्धरा

(B) कादम्बरी–त्रिगुणात्मक ब्रह्म – नमस्कारात्मक –वंशस्थ

(C) किरातार्जुनीयम् – मूलतः शैव – वस्तुनिर्देशात्मक – वंशस्थ

अतः विकल्प (C) सही है।

60. भारवि की शैली में कौन सा तत्त्व प्रधान है – **TGT-2014**

(A) ओजप्रधान्यता (B) वैदर्भीरीति की प्रधानता

(C) गौडीरीति की प्रधानता **(D) अर्थगौरवता**

व्याख्या –

ग्रन्थ/ग्रन्थकार				**विशेषताएँ**
(A) अनर्घराघव (मुरारि)	–	गौडीरीति,	–	ओजगुण
(B) अभिज्ञानशाकुन्तलम्	–	वैदर्भीरीति,	–	प्रसादगुण ''वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते''
(C) वेणीसंहार	–	गौडीरीति,	–	ओजगुण
(D) किरातार्जुनीयम्	–	अर्थगौरवता,	–	रीतिवादी या अलंकृतकाव्यशैली के जन्मदाता ''भारवेरर्थगौरवम्''

अतः विकल्प (D) सही है।

61.'अर्थगौरवता' का अर्थ है – **TGT-2014**

(A) गौरव गरिमा से युक्त बातें कहना

(B) शब्द से ज्यादा अर्थ पर जोर देना

(C) **थोड़े से शब्दों में ज्यादा अर्थ कह देना**

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

व्याख्या – समालोचकों ने कवियों की प्रशंसा में कहा है कि-

''उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।

दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः।।''

1. उपमा अलङ्कार की दृष्टि से कालिदास अद्वितीय कवि हैं।
2. अर्थगौरव अर्थात् थोड़े से शब्दों में ज्यादा अर्थ कह देना यह भारवि की विशेषता है।
3. पदों में लालित्य के लिए दण्डी प्रसिद्ध हैं।
4. महाकवि माघ में उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य-ये तीनों गुण विद्यमान हैं।

अतः विकल्प (C) सही है।

62. किरातार्जुनीयम् के रचनाकार हैं – **TGT-2014**

(A) भारवि (B) भवभूति
(C) कालिदास (D) श्रीहर्ष

व्याख्या –

	ग्रन्थकार	ग्रन्थ	शैली
*	भारवि	किरातार्जुनीयम्	पाण्डित्य
	प्रधान	अलङ्कृत	शैली के जन्मदाता
*	भवभूति	उत्तररामचरितम्	वैदर्भी
	उत्तररामचरितम्	भवभूति गौड़ी	रीति के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं।

* कालिदास (i) रघुवंशम् (ii) कुमारसम्भवम् वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते।
* श्रीहर्ष नैषधीयचरितम्

अतः विकल्प (A) सही है।

63. 'किरातार्जुनीयम्' शीर्षक में प्रयुक्त 'किरात' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है – **TGT-2014**

(A) चाण्डाल जाति के लिए
(B) किरात नामक पात्र के लिए
(C) शिव जो किरात वेषधारी हैं
(D) अर्जुन जो किरात वेषधारी हैं।

व्याख्या – 'किरातार्जुनीयम्' शीर्षक में प्रयुक्त 'किरात' शब्द भगवान् शिव के लिए प्रयुक्त हुआ है। नायक अर्जुन किरातवेषधारी भगवान् शिव से अमोघ 'पाशुपत अस्त्र' प्राप्त करता है, जो महाकाव्य का फल भी है।

* किरातश्च अर्जुनश्च इति किरातार्जुनौ (द्वन्द्व समास)
* किरातार्जुन + छ ''शिशुक्रन्दयमसभ द्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छः''सूत्र से 'छ' प्रत्यय
* 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनाम्' सूत्र से 'छ' को 'ईय' आदेश होकर किरातार्जुनीय बना। ग्रन्थवाची शब्द होने के कारण नपुंसकलिङ्ग होकर 'किरातार्जुनीयम्' शब्द बना।
* मल्लिनाथ ने 'किरातार्जुनीयम्' की 'घण्टापथ' नामक टीका की है।
* इसका कथानक महाभारत के वनपर्व से लिया गया है।
* कुल 18 सर्ग हैं। 18वें सर्ग में अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति होती है।
* भारवि दाक्षिणात्य थे। इनका समय छठीं शताब्दी उत्तरार्द्ध या सातवीं शताब्दी का पूर्वार्द्ध माना जाता है।
* 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' – किरातार्जुनीयम् (2/27)

अतः विकल्प (C) सही है।

64. 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथम सर्ग के आधार पर पाण्डव कहाँ निवास कर रहे थे। **TGT-2014**

(A) खाण्डववन में (B) अद्वैतवन में
(C) वृन्दावन में **(D) द्वैतवन में**

व्याख्या – भारवि विरचित 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथमसर्ग के आधार पर पाण्डव द्वैतवन में निवास कर रहे थे –

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं
प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्तवेदितुम्।
स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ
युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।।1/1

अतः विकल्प (D) सही है।

65. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' का अर्थ है – **TGT-2011**

(A) हितकारी वचन दुर्लभ होता है।
(B) मनोहारि वचन दुर्लभ होता है
(C) हितकारी और प्रियवचन दुर्लभ होता है
(D) दुर्लभ वचन ही हितकारी होता है।

व्याख्या – महाकवि भारवि वनेचर से युधिष्ठिर को लक्षित करके कहलवाते हैं कि–

क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो न
वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधुसाधु वा हितं
मनोहारि च दुर्लभं वचः।। (कि. 1/4)

हे राजन्! करणीय कार्यों में स्वामी द्वारा नियुक्त किये गये सेवकों को चाहिए कि वे गुप्तचररूपी नेत्रों वाले प्रभुओं को धोखा न दें। अतएव मेरे अप्रिय अथवा प्रिय कथन को आप सहन करें क्योंकि 'हितकारिणी के साथ ही साथ मनोहारिणी वाणी भी दुर्लभ होती है।' **अतः विकल्प (C) सही है।**

66. ब्रह्मचारी विप्र का वेषधारण करने वाला गुप्तचर था – **TGT-2011**

(A) यक्ष **(B) वनेचर**
(C) ब्राह्मण (D) वैश्य

व्याख्या –

* यक्ष – यक्ष कालिदास कृत 'मेघदूतम्' नामक खण्डकाव्य का नायक है।
* वनेचर – 'किरातार्जुनीयम्' में भारवि ने उस वर्णी या ब्रह्मचारी के लिङ्ग अर्थात् चिह्न (वेशभूषा) से युक्त व्यक्ति को वर्णिलिङ्गी कहा है। यह वनेचर के लिए प्रयुक्त हुआ है, जो युधिष्ठिर के गुप्तचर के रूप में ब्रह्मचारी के वेष में हस्तिनापुर जाता है। 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः।। (कि. 1/1)

* ब्राह्मण – संस्कृत रूपकों में विदूषक पात्र ब्राह्मण होता है।
* वैश्य – प्रकरण का नायक ब्राह्मण, मन्त्री अथवा वैश्य होता है।
अतः विकल्प (B) सही है।

67. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' के अनुसार खलजनों के सम्पर्क की अपेक्षा श्रेष्ठ होता है – **TGT-2011**

(A) साधुजनों का साथ **(B) साधुजनों का विरोध**
(C) दुष्टजनों का साथ (D) मूर्ख लोगों का विरोध

व्याख्या – किरातार्जुनीयम् में वनेचर युधिष्ठिर को बताता है कि कुटिल प्रवृत्तिवाला दुर्योधन आपको जीत लेने की लालसावश अपनी गुण सम्पत्ति से कीर्ति का विस्तार कर रहा है, क्योंकि ऐश्वर्य का अभ्युत्थान करने वाला, महापुरुषों के साथ किया गया विरोधभाव भी दुष्टों के संसर्ग की अपेक्षा अच्छा है।'

अतः विकल्प (B) सही है।

68. राजाओं का स्वभाव होता है – **TGT-2011**

(A) दुर्विज्ञेय (B) विज्ञेय
(C) अप्रत्यक्ष (D) प्रत्यक्ष

व्याख्या – वनेचर के लिए दुर्योधन की दुरुह नीतियों को समझना कोई सामान्य बात नहीं है, फिर भी इस दुष्कर कार्य को पूरा करने वाला अहङ्कारहीन वह वनेचर विनम्रतापूर्वक इस शत्रु राजनीति को जानने का श्रेय युधिष्ठिर को देता है।
'निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाःक्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः।
तवानुभावोऽयमवेदियन्मया निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्।। (कि.1/6)
कहाँ स्वाभाविक रूप से बहुत कठिनाई पूर्वक समझ में आने वाला राजाओं का चरित्र और अज्ञान से विकल मुझ जैसे प्राणी कहाँ? फिर भी जो मेरे द्वारा गुप्त रहस्यों वाला नीतिमार्ग जान लिया गया वह निश्चित रूप से आपका प्रभाव ही है। अतः "निसर्गदुर्बोधं.... भूपतीनां चरितम् " से स्पष्ट है कि राजाओं का स्वभाव ही दुर्विज्ञेय होता है।
विकल्प (A) सही है।.

69. 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' में कृष्णा का तात्पर्य है – **TGT-2011**

(A) कृष्ण से **(B) द्रौपदी से**
(C) कुन्ती से (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या – वार्ता का निवेदन करने के उपरान्त पारितोषिक लेकर वनेचर के चले जाने पर राजा युधिष्ठिर द्वारा द्रौपदी भवन में प्रवेश करके भाइयों के समीप यह वृत्तान्त वर्णित किया गया–
इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये गतेऽथ पत्यौ वनसन्निवासिनाम्।
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा तदाचचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः।। (कि. 1/26)
यहाँ कृष्णासदनम् = द्रौपदी के भवन में, महीभुजा = युधिष्ठिर के द्वारा, प्रविश्य = प्रवेश करके **अतः विकल्प (B) सही है।**

70. किरातार्जुनीयम् में सर्ग हैं- **UP TET-2013**

(A) उन्नीस **(B) अठारह**
(C) सत्रह (D) सोलह

व्याख्या-

ग्रन्थ		सर्ग		ग्रन्थकार
1. किरातार्जुनीयम्	-	18	-	भारवि
2. रघुवंशम्	-	19	-	कालिदास
3. कुमारसम्भवम्	-	17	-	कालिदास
4. शिशुपालवधम्	-	20	-	माघ
5. हरविजयम्	-	50	-	रत्नाकर
6. रावणवध (भट्टिकाव्य)	-	22	-	भट्टि
7. बुद्धचरितम्	-	28	-	अश्वघोष
8. नैषधीयचरितम्	-	22	-	श्रीहर्ष
9. जानकीहरणम्	-	20-25	-	कुमारदास
10. सौन्दरानन्दम्	-	18	-	अश्वघोष

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में 18 सर्ग हैं जो भारवि की रचना है। **अतः विकल्प 'B' सही है।**

71. अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं- **UP TET-2013**

(A) भारवि (B) कालिदास
(C) बाणभट्ट (D) दण्डी

व्याख्या-

उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥

अर्थात् कालिदास उपमा के लिए, भारवि अर्थगौरव के लिए, दण्डी पदलालित्य के लिए एवं माघ उपमा, अर्थगौरव और पदलालित्य इन तीनों के लिए प्रसिद्ध हैं।

* बाणभट्ट के लिए प्रसिद्धि है- बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्। वाणी बाणो बभूव ह। कविताकामिनी कौतुकाय।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त व्याख्या से स्पष्ट है कि अर्थगौरव के लिए भारवि प्रसिद्ध हैं। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

72. 'कीदृशं वचः दुर्लभम्' भवति— **UP TET-2014**

(A) सत्यम् (B) प्रियम्
(C) हितं मनोहारि च (D) मनोहारि

व्याख्या- उपर्युक्त पंक्ति भारवि द्वारा रचित किरातार्जुनीयम् महाकाव्य के प्रथमसर्ग से उद्धृत है जिसमें वनेचर दुर्योधन की राजव्यवस्था को जानकर वापस आकर युधिष्ठिर से कहता है-

क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो
न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा
हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥ (किरात. 1/4)

कार्यों में नियुक्त किये गये अनुचरों के द्वारा गुप्तचररूपी नेत्रों वाले स्वामी लोग ठगे नहीं जाने चाहिये। प्रशंसा के द्वारा गुप्तचरों को अपने राजा को कभी भी ठगना नहीं चाहिए। इसलिए मेरा (वनेचर का) वचन अप्रिय हो अथवा प्रिय, आप क्षमा करने योग्य हैं क्योंकि परिणाम में कल्याण करने वाला तथा तुरन्त ही प्रिय मधुर लगने वाला वचन इस संसार में दुर्लभ होता है। **'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'** अर्थात् हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि 'हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।' **अतः विकल्प 'C' सही है।**

73. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में प्रयुक्त छन्द है- **UP TET-2016**

(A) अनुष्टुप् (B) जगती
(C) वंशस्थ (D) उपजाति

व्याख्या-

- किरातार्जुनीयम् महाकवि भारवि की रचना है जिसमें 18 सर्ग हैं।
- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य की गणना बृहत्त्रयी के अन्तर्गत की जाती है। बृहत्त्रयी के महाकाव्य हैं- किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम्।
- किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है- वंशस्थ छन्द का लक्षण है- जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ
- नैषधीयचरितम् और शिशुपालवध के प्रथमसर्ग में भी वंशस्थ छन्द का प्रयोग किया गया है।
- वाल्मीकि रामायण अनुष्टुप् छन्द में निबद्ध है।
- जगती छन्दों का प्रयोग प्रायः वेदों में हुआ है।
- नैषधीयचरितम् के द्वितीय सर्ग में उपजाति छन्द का प्रयोग है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

74. 'किरातार्जुनीयम्' में अर्जुन भगवान् शङ्कर से किस अस्त्र की प्राप्ति करता है? **UP TET-2016**

(A) पाशुपत (B) चक्र
(C) गदा (D) इनमें से कोई नहीं

व्याख्या-

- किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में अर्जुन को 18वें सर्ग में शिव जी के द्वारा पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति होती है।
  'ज्वलदनलपरीतं रौद्रमस्त्रं दधानं धनुरुपपदमस्मै वेदमभ्यादिदेश'
  (किरात 18/44)
- उत्तररामचरितम् में राम के पुत्र होने के कारण लव को जृम्भक अस्त्र और वारुण अस्त्र प्राप्त होता है।
- उत्तररामचरितम् में ही लक्ष्मण के पुत्र चन्द्रकेतु के पास आग्नेय अस्त्र रहता है।
- हनुमान् जी के पास हमेशा गदा रहता था। इनका अस्त्र गदा ही था।
- विष्णु जी अपने हाथों में सुदर्शन नाम का चक्र लिये रहते थे। इसीलिये इन्हे 'चक्रपाणिः' भी कहा जाता है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति अर्जुन को होती है। **अतः विकल्प 'A' सही है।**

75. ''पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' इस सूक्ति के रचयिता हैं- **PGT-2002**

(A) कालिदास (B) माघ
(C) भारवि (D) भर्तृहरि

व्याख्या-

A. कालिदासकृत रघुवंश महाकाव्य के दूसरे सर्ग में नन्दिनी गाय की सेवा करने के विषय में राजा दिलीप कहते हैं कि- ''**स्ववीर्यगुप्ता हि मनोः प्रसूतिः।**'' रघुवंशम् (2/4) 'मनुवंशी अपनी रक्षा स्वयं करते हैं।'

B. शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथमसर्ग में नारदमुनि श्रीकृष्ण से कहते हैं कि-
''**सतीव योषित्प्रकृतिः सुनिश्चला पुमांसमभ्येति भवान्तरेष्वपि॥**''
(शिशु. 1.72)
मनुष्य की प्रकृति सती स्त्री की भाँति अगले जन्म में इसी रूप से प्राप्त होती है।

C. द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि ''**पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।**'' (किरात. 1.41) 'स्वाभिमानी के लिए पराभव (पराजय) भी उत्सव के समान होता है।'
अतः विकल्प C सही है।

D. नीतिशतकम् के अर्थपद्धति में भर्तृहरि राजा को उपदेशित करते हुए कहते हैं-
''**नानाफलं फलति कल्पलतेव भूमिः।**''(नीति. श्लोक-38)
कल्पवृक्ष की भाँति भूमि अनेक फलों को देने वाली है। अर्थात् प्रजा के सुखी रहने पर यह पृथ्वी कल्पलता की भाँति अनेक मनोरथों को पूर्ण कर देती है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/41) रामसेवक दुबे, पेज-138

76. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह कथन किससे सम्बन्धित है- **PGT-2002,2013**

(A) अभिज्ञानशाकुन्तलम् **(B) किरातार्जुनीयम्**
(C) नैषधीयचरितम् (D) मेघदूतम्

व्याख्या–

A. अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई के अवसर पर शार्ङ्गरव कहता है-"**न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम।**"(अभि.शा. अङ्क- 4) बुद्धिमानों के लिए कोई भी विषय अज्ञात नहीं है।

B. भारवि कृत किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है कि- "**हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः।**" हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं। (किरात. 1/4)

C. नैषधीयचरितम् के पाँचवें सर्ग में नल इन्द्र से कहता है कि-
'**आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः।**' (नैष. 5 /103)
कुटिल (धूर्त) व्यक्ति के प्रति सरल होना यह नीति नहीं है।

D. उत्तरमेघ में यक्ष मेघ से कहता है कि -
"**सूर्यापाये न खलु कमलं पुष्यति स्वामभिख्याम् ।**" (मेघदूत उत्तरमेघ श्लोक 17)
सूर्य के अस्त होने पर कमल अपनी शोभा को नहीं प्राप्त होता है।

अतः विकल्प (B) सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/4)- रामसेवक दुबे, पेज-50

77. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह उक्ति किसने कही है- **PGT-2002**

(A) भीम (B) द्रौपदी
(C) दुर्योधन **(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं**

व्याख्या–

A. "अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता" यह सूक्ति किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग के 23 वें श्लोक में वनेचर ने युधिष्ठिर को बताया कि दुर्योधन अर्जुन एवं भीम के पराक्रम का स्मरण कर दुःखी होता है क्योंकि वह जानता है कि "बलवानों से किया गया विरोध दुःखान्त होता है।" उपर्युक्त तीनों विकल्पों में कोई भी पात्र इस सूक्ति से सम्बन्धित नहीं है।

अतः विकल्प (D) सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/23)- रामसेवक दुबे, पेज-98

78. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है- **PGT-2002**

(A) उत्तररामचरितम् (B) मेघदूतम्
(C) किरातार्जुनीयम् (D) कादम्बरी

व्याख्या–

A. उत्तररामचरितम् के द्वितीय अङ्क में वासन्ती आत्रेयी से कहती है-
"**लोकोत्तराणां चेतांसि को नु विज्ञातुमर्हसि।**" (उत्तर02/7)
'महापुरुषों के चित्त को भला कौन जान सकता है?'

B. पूर्वमेघ में यक्ष मेघ से कहता है कि-
"**याच्ञा मोघा वरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा।**" (मेघदूतम् 1/6)
गुणवान् व्यक्ति के विषय में याचना विफल होने पर भी कुछ अच्छा है परन्तु नीच व्यक्ति से की गई याचना सफल होने पर भी अच्छी नहीं है।

C. किरातार्जुनीयम् में वनेचर युधिष्ठिर से दुर्योधन के विषय में बताता है कि-
" **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः**" (किरात. 1/8)
महात्माओं से किया गया विरोध भी श्रेयस्कर होता है।

D. कादम्बरी कथामुख के शुकशावक निपातवर्णन में शुक राजा से कहता है कि-
"**किमिव हि दुष्करमकरुणानाम्।**" (कादम्बरी कथामुखम्)
करुणारहित व्यक्ति के लिए कौन सा कार्य दुष्कर है?
अतः विकल्प (C) सही है।
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/8)- राजेन्द्र मिश्र, पेज-50

79. संस्कृत साहित्य में अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं- **PGT-2002,2010**

(A) श्रीहर्ष (B) माघ
(C) भारवि (D) दण्डी

व्याख्या–

* 'श्रीहर्ष' के 'नैषधीयचरितम्' की प्रशंसा में किसी विद्वान् ने कहा है कि-
'उदिते नैषधे काव्ये क्व माघः क्व च भारविः।'
अर्थात् श्रीहर्ष द्वारा नैषधीयचरितम् लिखे जाने पर भारवि और माघ का भी स्थान नहीं ठहरता।।
* महाकवि माघ उपमा, अर्थगौरव एवं पदलालित्य इन तीनों गुणों में सिद्धहस्त हैं। इन कवियों की प्रशंसा में उद्भट ने लिखा है-

"**उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थगौरवम्।**
दण्डिनः पदलालित्यं माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥"

संस्कृत साहित्य में कालिदास उपमा के लिए प्रसिद्ध हैं।
* संस्कृत साहित्य में महाकवि भारवि 'अर्थगौरव' के लिए प्रसिद्ध हैं।
* संस्कृत साहित्य में महाकवि दण्डी पदलालित्य के लिए प्रसिद्ध हैं। जबकि माघ में ये तीनों गुण विद्यमान हैं। **अतः विकल्प 'C' सही है।**
स्रोत- किरातार्जुनीयम्- राजेन्द्र मिश्र, पेज-24

80. बृहत्त्रयी के अन्तर्गत नहीं है- **PGT-2016**

(A) किरातार्जुनीयम् (B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशम् (D) नैषधीयचरितम्

व्याख्या-

☆ किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् और नैषधीयचरितम् ये बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आते हैं।

☆ लघुत्रयी- रघुवंशम्, कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास- उमाशंकर शर्मा 'ऋषि', पेज- 208

81. 'किरातार्जुनीयम्' में 'कुरूणामधिपस्य' शब्द प्रयुक्त किया गया है- **PGT-2010**

(A) युधिष्ठिर के लिए (B) अर्जुन के लिए

(C) दुर्योधन के लिए (D) भीम के लिए

व्याख्या-

किरातार्जुनीयम्	पात्रों के लिए प्रयुक्त शब्द
1. युधिष्ठिर के लिए	युधिष्ठिरः
2. अर्जुन के लिए	सव्यसाची, गुडाकेशः, धनञ्जयः
3. दुर्योधन के लिए	कुरूणामधिपः,सुयोधनः ....
4. भीम के लिए	वृकोदरः

नोट- ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं'' में 'कुरूणामधिपस्य' पद दुर्योधन के लिए प्रयुक्त है। **अतः विकल्प C सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/1)- रामसेवक दुबे, पेज-55

82. 'कृषीवल' से तात्पर्य है- **PGT-2010**

(A) कृषि से **(B) किसान से**

(C) सिंचाई के साधन से (D) वृष्टि से

व्याख्या-

* भारविकृत 'किरातार्जुनीयम्' के प्रथमसर्ग में दुर्योधन ने कुरुराज्य के किसानों को समृद्ध बनाने के लिए उल्लेखनीय कार्य किया जिसे वनेचर युधिष्ठिर से बताता है-

सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैः-
अकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।
वितन्वति क्षेममदेवमातृका-
श्चिराय तस्मिन् कुरवश्चकासति॥ (कि० 1/17)

चिरकाल से प्रजा के कल्याण के लिए यत्नशील उस राजा दुर्योधन के कारण नदियों एवं नहरों आदि की सिंचाई की सुविधा से समन्वित कुरुप्रदेश की भूमि मानों वहाँ के किसानों के बिना अधिक परिश्रम उठाए हुए ही बड़ी सुविधा के साथ स्वयं प्राप्त होने वाले अन्नों की समृद्धि से सुशोभित हो रही है ।

अतः विकल्प B सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/17)- रामसेवक दुबे, पेज-84

83. 'निरस्तनारीसमया' में 'समया' से तात्पर्य है-
(A) समान (B) माया वाली
(C) समय **(D) मर्यादा**

व्याख्या-

* किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में स्त्रियोचित मर्यादा को छोड़कर द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि मेरी विकृत मनोव्यथाएँ ही मुझे आप के समक्ष ऐसा करने के लिए बाध्य कर रही हैं।
तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां
निरस्तनारीसमया दुराधयः।। (कि0 1/28)
इस श्लोक में 'समया' पद से तात्पर्य है- मर्यादा। **अतः विकल्प D सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/28)- रामसेवक दुबे, पेज-110

84. 'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्' सूक्ति उद्धृत है-
(A) मृच्छकटिकम् में **(B) किरातार्जुनीयम् में**
(C) अभिज्ञानशाकुन्तलम् में (D) नीतिशतकम् में

व्याख्या-

A. शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् के चतुर्थ अङ्क में मदनिका शर्विलक से कहती है-
'न चन्द्रादातपो भवति' (मृच्छ. अङ्क-4) अर्थात् चन्द्रमा से गर्मी नहीं होती।

B. भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में दुर्योधन के पुरुषार्थ का वर्णन करते हुए वनेचर युधिष्ठिर से कहता है-
'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्।' (किरात0 1/11)
त्रिगण अर्थात् धर्म, अर्थ, काम एक दूसरे को बाधित नहीं करते हैं बल्कि मित्रवत् व्यवहार करते हैं।
अतः विकल्प 'B' सही है।

C. कालिदास विरचित अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त शकुन्तला के विषय में अपने मन में कहता है-
'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करणप्रवृत्तयः।' (अभि0 1/22)
सन्देहास्पद विषयों में सज्जनों के अन्तः करण की प्रवृत्तियाँ ही प्रमाण होती हैं।

D. भर्तृहरि नीतिशतकम् के अर्थपद्धति में धन की तीन गति को स्वीकार करते हुए कहते हैं-
'दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य' (नीतिशतकम् श्लोक- 34)
जो व्यक्ति न धन का दान करता है और न स्वयं भोग करता है उसके धन की तीसरी गति अर्थात् नष्ट ही समझना चाहिए।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/11)- रामसेवक दुबे, पेज-69

85. 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' यह किस काव्य से सम्बद्ध है ?
(A) शिशुपालवधम् **(B) किरातार्जुनीयम्**
(C) नैषधीयचरितम् (D) रघुवंशम्

व्याख्या-

A. माघ विरचित शिशुपालवधम् के द्वितीयसर्ग में उद्धव जी ने बलराम से कहा कि-
'नैकमोजः प्रसादो वा रसभावविदः कवेः।' (शिशु० 2/83)
रसभाव के ज्ञाता अर्थात् शृङ्गारादि रस के विषय को जानने वाले कवि के लिए ओजगुणयुक्त या प्रसाद गुणयुक्त ही प्रबन्ध की रचना करने का नियम नहीं है।

B. भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के द्वितीय सर्ग में युधिष्ठिर भीम को प्रसन्न करने के लिए कहते हैं कि-
'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' (किरात० 2/27)
वाक्य में प्रयोग किए गए पदों के द्वारा अर्थ की सुस्पष्टता का परित्याग नहीं किया गया है और अर्थगौरव को स्वीकार नहीं किया ऐसी बात नहीं है।
अतः विकल्प B सही है।

C. हर्ष विरचित नैषधीयचरित के चतुर्थ सर्ग में राजा नल दमयन्ती के विषय में कहते हैं कि-
'झटिति पराशयवेदिनो हि विज्ञाः' (नैषध० 4/118)
चतुर समझदार व्यक्ति तुरन्त ही दूसरे के आशय को समझ जाते हैं।

D. महाकवि कालिदास विरचित रघुवंशम् के तीसरे सर्ग में रघु के बल से सन्तुष्ट होकर इन्द्र ने कहा-
'पदं हि सर्वत्रगुणैर्निधीयते।' (रघु० 3/62)
गुणों से ही सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है।
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (2.27)- रामसेवक दुबे,भू०पेज-28

86. 'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' यह कथन किसको कहा गया है ?
(A) युधिष्ठिर (B) अर्जुन
(C) भीम (D) दुर्योधन

व्याख्या-

A. भारवि विरचित किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में द्रौपदी युधिष्ठिर के प्रति कहती हैं कि यदि क्षमा को ही चिरकाल तक सुख का साधन समझते हैं तो-
'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' (किरात० 1/44)
जटाधारण करके इसी वन में अग्नि में हवन कीजिए। **अतः विकल्प A सही है।**

B. किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में द्रौपदी अर्जुन के विषय में युधिष्ठिर से कहती हैं कि-
'करोति मन्युं न कथं धनञ्जयः' (किरात. 1/35)

आपके लिए वृक्षों की छाल (वल्कल वस्त्रों) को लाते हुए अर्जुन को देखकर आपको क्रोध क्यों नहीं आता?

C. भीम के विषय में द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती हैं कि-
'दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः' (किरात0 1/34)
पैदल ही पर्वतों पर घूमते हुए धूलि से धूसरित यह भीम, मुझे लगता है कि आपके मन को व्यथित नहीं करता?

D. दुर्योधन के विषय में वनेचर युधिष्ठिर से कहता है-
'नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' (किरात0 1/7)
छल से जीती गई पृथ्वी को नीति से जीतना चाहता है।
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/44) - रामसेवक दुबे, पेज-144

87. किरातार्जुनीयम् प्रथमसर्ग के अधोलिखित अन्तिम श्लोक में कौन छन्द है? 'विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मम्'
(A) उपजाति (B) वंशस्थ
(C) वसन्ततिलका **(D) मालिनी**

व्याख्या-

A. **उपजाति-** 'अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः'। (वृत्त0 3/0)
उपजाति के प्रत्येक पाद में 11 वर्ण होते हैं यह इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा दोनों के मिश्रण से बनता है।
उदा0- स्वप्नो नु माया नु .... मनोरथा नाम तटप्रपाताः।।

B. **वंशस्थ-** 'जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।' (वृत्त.3/46)
वशंस्थ में प्रत्येक पाद में 12 वर्ण होते हैं इसमें जगण, तगण, जगण, रगण होता है।
उदाहरण- श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्
किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में 1 से 44 तक वंशस्थ, 45 वाँ पुष्पिताग्रा तथा अन्तिम 46 वें पद्य में भारवि ने मालिनी छन्द का प्रयोग किया है।

C. **वसन्ततिलका-** 'उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः' (वृत्त0 3/79)
वसन्ततिलका छन्द के प्रत्येक पाद में 14 वर्ण होते हैं इसमें तगण, भगण, जगण, जगण तथा दो गुरु वर्ण होते हैं।
जैसे- यात्येकतोऽस्तशिखरं----------इवात्मदशान्तरेषु।।

D. **मालिनी-** 'ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।' (वृत्त0 3.87)
मालिनी छन्द के प्रत्येक पाद में 15 वर्ण होते हैं दो नगण,एक मगण, दो यगण,तथा 8वें और 7वें वर्णों पर यति होती है।
उदाहरण- विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं, शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
अतः विकल्प D सही है ।
स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/46)- रामसेवक दुबे, पेज-149

88. न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा तेन विजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यतेन
राधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्।।
अस्मिन् श्लोके प्रशंसा वर्तते?
(A) युधिष्ठिरस्य (B) वनेचरस्य
(C) दुर्योधनस्य (D) अर्जुनस्य

(UGC-25, D 2019)

व्याख्या- महाकवि भारवि द्वारा प्रणीत बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित अष्टादशसर्गात्मक महाकाव्य किरातार्जुनीयम् है।
इस ग्रन्थ के प्रथम सर्ग में वनेचर हस्तिनापुर से दुर्योधन के राज्य वृत्तान्त को जानकर द्वैतवन में युधिष्ठिर के पास आकर उस वृत्तान्त को कहता है -

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम् ।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ॥1/21॥

दुर्योधन के मित्र राजाओं की स्थिति के विषय में वनेचर दुर्योधन की प्रशंसा का वर्णन कर रहा है -
उस दुर्योधन के द्वारा कहीं पर भी चढ़ी हुयी प्रत्यञ्चा वाला धनुष नहीं उठाया गया अथवा क्रोध के कारण मुख टेढ़ा नहीं किया गया। राजाओं के द्वारा गुणों के प्रति प्रेम के कारण उसकी आज्ञा को माला के समान शिरोधार्य किया जाता है।

किरातार्जुनीयम् की महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ-

* **अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता (1/23)**
वनेचर का कथन है- अहो (आश्चर्य है कि) बलवानों से विरोध बड़ा ही दुःखान्त होता है।
* **प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः (1/25)**
वनेचर युधिष्ठिर से कहता है- दूसरे लोगों के द्वारा कहे गये वचनों का सङ्ग्रह करने वाले मुझ जैसों की बातें तो वृत्तान्तमात्र पर्यवसायिनी होती हैं।
* **प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्**
असंवृताङ्गान्निशिता इवेषवः ॥1/30॥
द्रौपदी का कथन युधिष्ठिर से- धूर्त लोग बिना ढके हुए अङ्गों वाले उन जैसे लोगों को तीक्ष्ण बाणों के समान भीतर प्रविष्ट होकर मार डालते हैं।
* **शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः ॥1/32॥**
द्रौपदी का कथन है- आपको सूखे हुए शमी के वृक्ष को जला देने वाली प्रज्वलित अग्नि के समान उद्दीप्त क्रोध क्यों नहीं क्रोधित करता?

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि 'न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः ....' यह वनेचर का कथन है जिसमें दुर्योधन की प्रशंसा हो रही है।
अतः विकल्प 'C' सही है। स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/21)

89.(A) स किंसखा साधु न शास्ति यो नृपम्। **(UGC-25, D 2019)**

इयं पंक्तिः भारवेः किरातार्जुनीयादुद्धृतोऽस्ति।

(R) वनेचरः युधिष्ठिरं प्रति दुर्योधनस्य सत्यं वृत्तान्तमवबोध-यितुं वदति अधोलिखितेषु उचितं कारणं लिखत-

(A)(A) कथनं मित्रस्य साधुशीलतां प्रमाणी करोति
(R) कथनं वनेचरस्य स्वामिनः वञ्चनां निषेधयति

(B) (A) कथने नृपस्य स्वरूपं वर्णितमस्ति
(R) कथने दुर्योधनं प्रति वनेचरस्य सहृदयता ज्ञायते

(C) (A) कथने सः पदेन वनेचरः नृपम् पदेन सुयोधनं कथितमस्ति।
(R) कथनेन सुयोधनं प्रति सेवाभावोऽस्ति।

(D) (A) कथने सखा वनेचर अस्ति
(R) वनेचरः युधिष्ठिरं सत्यं वृत्तान्तं न कथयति

व्याख्या- महाकवि भारविप्रणीत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित अठारह सर्गों वाला महाकाव्य है। जिसके नायक अर्जुन और नायिका द्रौपदी है। राजा युधिष्ठिर के द्वारा नियुक्त ब्रह्मचारी वेश वाला वनेचर दुर्योधन के राज्यकार्यों को जानकर आया है और कहता है-

स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपं
हितान्न यः संश्रृणुते स किम्प्रभुः।
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं
नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः (॥1/5॥)

जो राजा को समुचित उपदेश नहीं देता है क्या वह मित्र है? (कभी नहीं) अथवा वह कुत्सित मित्र है। इसी प्रकार जो शुभाकांक्षी व्यक्ति से सदुपदेश नहीं सुनता है क्या वह प्रभु है? (कभी नहीं) अथवा वह निन्दनीय नरेश है। क्योंकि राजाओं तथा सचिवों के परस्पर अनुकूल रहने पर ही समग्र सम्पत्तियाँ सदैव अनुराग करती हैं। (अन्यथा नहीं)

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त पंक्ति से स्पष्ट होता है कि वनेचर कथन (A) में मित्र की साधुशीलता को प्रमाणित कर रहा है। और कथन (R) में स्वामी को धोखा नहीं देना चाहिये या झूठ नहीं बोलना चाहिये। धोखा देने का निषेध कर रहा है।

अतः विकल्प 'A' सही है।

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/5)

90. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' इति केनोक्तम्? **(UGC 25, J 2019)**

(A) विशाखदत्तेन (B) दण्डिना

(C) भासेन **(D) भारविणा**

व्याख्या- भारविकृत एकमात्र ग्रन्थ किरातार्जुनीयम् महाकाव्य, जो बृहत्त्रयी के अन्तर्गत परिगणित है, जिसमें 18 सर्ग हैं। प्रथम सर्ग में युधिष्ठिर द्वारा भेजा गया वनेचर दुर्योधन के राजकार्यों को जानकर द्वैतवन में आया है और युधिष्ठिर से कहता है–

क्रियासु युक्तैर्नृप! चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥ (1/4)

हे राजन्। किसी कार्य को करने के लिए नियुक्त किए गए सेवकों के द्वारा स्वामी (झूठी तथा प्रिय बातें बताकर) नहीं ठगे जाने चाहिये। इसलिए मैं अप्रिय अथवा प्रिय बाते करूँ, उन्हें आप क्षमा करेंगे, क्योंकि मधुर तथा परिणाम में कल्याण देने वाली वाणी दुर्लभ होती है।

अन्य प्रमुख सूक्तियाँ- • **हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः** (1/4) मधुर तथा परिणाम में कल्याण देने वाली वाणी दुर्लभ होती है • **न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः** (1/2) कल्याण चाहने वाले लोग मिथ्याभूत मधुर वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।

- **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः** (1/8) महापुरुषों के साथ किया गया विरोधभाव भी दुष्टों के संसर्ग की अपेक्षा अच्छा है।
- **अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता** (1/23) बलवान् के साथ किया गया वैर विरोध अनर्थपर्यवसायी होता है।

⇒ **विशाखदत्त-** विशाखदत्तकृत मुद्राराक्षस सात अङ्कों का नाटक है।

⇒ मुद्राराक्षस की प्रमुख सूक्तियाँ-

- **न हि खलु सर्वं जानाति।**
  प्रथम अङ्क में गुप्तचर कहता है, ''सभी लोग सब कुछ नहीं जानते हैं।''
- **अत्यादरः शङ्कनीयः।**
  प्रथम अङ्क में चाणक्य के घर जाकर चन्दनदास मन में सोचता है, ''आज अत्यधिक आदर किया जाना शङ्कनीय है।
- **पुरन्ध्रीणां प्रज्ञा पुरुषगुणविज्ञानविमुखी (2/7)।**
  राक्षस कहता है, कासपुष्प के अग्रभाग के समान स्त्रियों की बुद्धि ही पुरुषों के शौर्यादि गुणों की जानकारी से पराङ्मुख होती है।

⇒ **दण्डी-** दण्डी कृत ग्रन्थ दशकुमारचरितम् है, जिसमें आठ उच्छ्वास हैं। इसके नायक राजवाहन और नायिका अवन्तिसुन्दरी है।

* दशकुमारचरितम् की प्रमुख सूक्तियाँ-

- **दुष्करसाधनं प्रज्ञा इति**
  मित्रगुप्त कहता है कि जो कार्य करना कठिन है, उसके करने का उपाय बुद्धि है।
- **गृहिणः प्रियहिताय दारगुणाः इति**
  मित्रगुप्त कहता है कि पत्नी के गुण गृहस्थ के प्रिय और हित के लिये होते हैं।
- **दैव्याः शक्तेः पुरो न बलवती मानवी शक्तिः।**
  विश्रुत कहता है कि ईश्वरीय ताकत के आगे आदमी की ताकत बली नहीं है।

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह सूक्ति किरातार्जुनीयम् से उद्धृत है। **अतः विकल्प 'D' सही है।**

स्रोत- किरातार्जुनीयम् (1/4)

91. कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः। तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः।। अत्र कोऽलङ्कारः- **(UGC 25, J. 2019)**

(A) लुप्तोपमा (B) मालोपमा
(C) श्लिष्टोपमा (D) उत्प्रेक्षा

व्याख्या- भारवि प्रणीत किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में 18 सर्ग हैं जिसकी गणना संस्कृत बृहत्त्रयी में होती है। महाकाव्य के नायक अर्जुन तथा प्रधान रस वीर है।

किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में दुर्योधन अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके नतमस्तक होकर दुःखी हो उठता है। इस प्रसंग को वनेचर युधिष्ठिर के समक्ष सर्प से उपमा देते हुए कहता है-

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृताद्
अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
तवाभिधानाद् व्यथते नताननः
स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः।। (किराता.1.24)

वार्तालाप में प्रसंगवश आप लोगों के सम्बन्ध में चर्चा चलने पर अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके जैसे श्रेष्ठ विष वैद्यों द्वारा उच्चारण किए गये गरुड और वासुकि के नामों से युक्त अत्यन्त दुःसह मन्त्र से गरुड के पादविक्षेप का स्मरण कर नीचा मुख किए सर्प व्यथित होता है, वैसे ही नीचा मुख किए हुए दुःखित होता है। इस श्लोक के दो-दो अर्थ हैं एक दुर्योधन पक्ष में और दूसरा सर्पपक्ष में-

1. कथाप्रसङ्गेन जनैः-
   दुर्योधनपक्ष में- बातचीत के प्रसङ्ग में लोगों के द्वारा
   सर्प पक्ष में- विषवैद्यों में श्रेष्ठ लोगों के द्वारा।
2. तवाभिधानात्-
   दुर्योधनपक्ष में- आप (युधिष्ठिर) के नाम से।
   सर्पपक्ष में- वासुकि और गरुड़ के नाम से

3 अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः-
दुर्योधन पक्ष में- इन्द्र के पुत्र अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके।
सर्पपक्ष में-स्मरण कर लिया गया है इन्द्र के सूनु (अनुज) अर्थात् विष्णु के पक्षी।
स्पष्टीकरण- उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि इस श्लोक के श्लिष्ट दो-दो अर्थ उपमा के द्वारा निर्देशित हैं। अतः श्लेषानुप्राणित (श्लिष्टोपमा) अलङ्कार है।
अतः विकल्प (C) सही है।
स्रोत- किरातार्जुनीयम् - रामसेवक दुबे, पेज 103

92. किरातार्जुनीयस्य प्रधानो रसोऽस्ति- **(UGC 25, J2018)**
(A) शृङ्गारः **(B) वीरः**
(C) शान्तः (D) अद्भुतः

व्याख्या- महाकवि भारवि प्रणीत 'किरातार्जुनीयम्' 18 सर्गों का वीर रस प्रधान महाकाव्य है। इसका उपजीव्य महाभारत का वनपर्व है। इस महाकाव्य में अर्जुन द्वारा भगवान् शिव की तपस्या से पाशुपतास्त्र की प्राप्ति का वर्णन है।

भारवि के काव्य में (किरातार्जुनीयम् में) प्रधान रस के रूप में 'वीर' रस का प्रयोग किया गया है। वीर रस की अभिव्यक्ति काव्य के प्रथम सर्ग से ही प्रारम्भ हो जाती है। जब द्रौपदी युधिष्ठिर के उत्साह को प्रबोधित करने और शत्रुओं से प्रतिशोध लेने के लिए ओज से भरे शब्दों को कहती है-

अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः॥

अर्थ- अनिष्फल क्रोध करने वाले और शत्रुओं का विनाश करने वाले व्यक्ति के वश में प्राणी स्वयं ही हो जाते हैं। व्यक्ति के क्रोध से हीन होने पर उसका न तो मित्रगण ही आदर करते हैं और न ही उससे शत्रु भय करते हैं।

संस्कृत ग्रन्थों के अंगी रस			
अभिज्ञानशाकुन्तलम्	शृङ्गाररस	जानकीहरणम्	शृङ्गाररस
मेघदूतम्	विप्रलम्भशृङ्गार	शिवराजविजय	वीररस
उत्तररामचरितम्	करुणरस	नागानन्द	शान्तरस/वीररस
शिशुपालवधम्	वीररस	प्रबोधचन्द्रोदय	करुण/वीर
रघुवंशम्	वीररस	महाभारतम्	शान्तरस
बुद्धचरितम्	शान्तरस	गीतगोविन्दम्	शृङ्गाररस
रावणवध (भट्टिकाव्य)	वीररस	रत्नावली	शृङ्गाररस

स्पष्टीकरण- उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् का प्रधान रस वीर है।
अतः विकल्प B सही है।
स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'- पेज 244

93. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य कथावस्तु कुतः गृहीतम्? **(UGC 25 J 2016)**

(A) महाभारतस्य आदिपर्वतः
(B) महाभारतस्य भीष्मपर्वतः
(C) महाभारतस्य वनपर्वतः
(D) रामायणमहाकाव्यात्

व्याख्या-

ग्रन्थकार	ग्रन्थ	उपजीव्य ग्रन्थ
भारवि	किरातार्जुनीयम्	महाभारत का वनपर्व
माघ	शिशुपालवधम्	महाभारत का सभापर्व
श्रीहर्ष	नैषधीयचरितम्	महाभारत का वनपर्व
कालिदास	रघुवंशम्	वाल्मीकीय रामायण/पद्मपुराण
कालिदास	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	महाभारत का आदिपर्व एवं पद्मपुराण
भट्टनारायण	वेणीसंहारम्	महाभारत का सभापर्व
शूद्रक	मृच्छकटिकम्	भासकृत चारुदत्तम् नाटक
बाणभट्ट	कादम्बरी	गुणाढ्य की बृहत्कथा सुमनस् वृत्तान्त
अश्वघोष	बुद्धचरितम्	'ललितविस्तर' बौद्धग्रन्थ
भास	स्वप्नवासवदत्तम्	इतिहासप्रसिद्ध उदयन- विषयक लोककथायें
भवभूति	उत्तररामचरितम्	उत्तरकाण्ड (42 से97 सर्ग तक)

स्पष्टीकरण-उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि किरातार्जुनीयम् की कथावस्तु महाभारत के वनपर्व से ली गयी है।

अतः विकल्प 'C' सही है।

स्रोत- संस्कृत साहित्य का इतिहास-उमाशङ्करशर्मा ऋषि, पेज-243

सम्भावित प्रश्न

1. किरातार्जुनीयम् इति महाकाव्यस्य रचनाकारः कः?
   (A) माघः (B) कालिदासः
   (C) श्रीहर्षः (D) **भारविः**

2. ''किरातार्जुनीयम्'' महाभारतस्य कस्मात् पर्वणः उद्धृतम्?
   (A) आदिपर्वणः
   (B) वनपर्वणः
   (C) सभापर्वणः
   (D) विराट्पर्वणः

3. किरातार्जुनीये कति सर्गाः सन्ति?
   (A) 15 (पञ्चदश)
   (B) 20 (विंशतिः)
   (C) 18 (अष्टादश)
   (D) 22 (द्वाविंशतिः)

4. किरातार्जुनीयस्य प्रथमपद्ये किं छन्दः वर्तते?
   (A) वंशस्थः (B) उपजातिः
   (C) आर्या (D) मालिनी

5. वनेचरः कस्मिन् वने युधिष्ठिरस्य समीपम् आगतवान्?
   (A) विन्ध्याटवीवने
   (B) द्वैतवने
   (C) दण्डकारण्ये
   (D) पञ्चवटीवने

6. किरातार्जुनीये 'कुरूणामधिपस्य' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
   (A) अर्जुनाय (B) भीमाय
   (C) दुर्योधनाय (D) दुःशासनाय

7. किरातार्जुनीयस्य प्रतिसर्गस्य अन्तिमं पदमस्ति?
   (A) लक्ष्मीः (B) विभुः
   (C) शिवः (D) श्रीः

8. 'किरातार्जुनीयम्' शब्दे कः प्रत्ययः?
   (A) 'छ' – प्रत्ययः
   (B) 'ङीप्' – प्रत्ययः
   (C) 'ल्युट्' – प्रत्ययः
   (D) 'युच्' – प्रत्ययः

9. 'किरातार्जुनीयस्य' नायकः कः?
   (A) युधिष्ठिरः **(B) अर्जुनः**
   (C) शिवः (D) भीमः

10. किरातार्जुनीयस्य प्रधानरसः कः?
    (A) शृङ्गाररसः (B) करुणरसः
    (C) वीररसः (D) शान्तरसः

11. 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' इति कीदृशं मङ्गलाचरणम्?
    (A) आशीर्वादात्मकम्
    (B) नमस्कारात्मकम्
    (C) वस्तुनिर्देशात्मकम्
    (D) एतेषु न कोऽपि

12. 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' एतत् कस्याः वचनम्?
   (A) वनेचरस्य
   (B) द्रौपद्याः
   (C) युधिष्ठिरस्य
   (D) एतेषु न कोऽपि

13. 'सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः' उक्तिरियं केन कथिता?
   (A) द्रौपद्या **(B) वनेचरेण**
   (C) दुर्योधनेन (D) युधिष्ठिरेण

14. किरातार्जुनीये दुर्योधनस्य शासन-व्यवस्थां ज्ञातुं युधिष्ठिरः कं प्रेषितवान् आसीत्?
   (A) सहदेवम् **(B) वनेचरम्**
   (C) नकुलम् (D) धृष्टद्युम्नम्

15. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' इत्यत्र 'मादृशां' इति पदेन कस्य बोधः?
   (A) भीमस्य (B) युधिष्ठिरस्य
   (C) गुप्तचरस्य (D) द्रौपद्याः

16. 'वनेचरस्य कृते किं पदं प्रयुक्तं किरातार्जुनीये?
   (A) ब्रह्मचारी (B) गुप्तचरः
   (C) वर्णिलिङ्गी (D) दूतः

17. किरातार्जुनीये 'अदेवमातृकाः' के?
   (A) नदीजलाशयाश्रिताः
   (B) देवकृपाप्राप्त्यै मातृपूजकाः
   (C) देवकृपाप्राप्त्यै यज्ञानुष्ठातारः
   (D) दैवकृपया वर्षाजलाश्रिताः

18. कीदृशानि वचनानि दुर्लभानि भवन्ति?
   (A) प्रियमसत्यम् च
   (B) सत्यं प्रियं च
   (C) अहितमनोहारि च
   (D) हितं मनोहारि च

19. 'विघाताय' पदे धातुः वर्तते?
   (A) धा (B) तन्
   (C) हन् (D) गम्

20. 'कृतप्रणामः' पदे समासः वर्तते?
   (A) तत्पुरुषः (B) कर्मधारयः
   (C) द्वन्द्वः **(D) बहुव्रीहिः**

21. 'वनेचरः' इत्यत्र कः प्रत्ययः?
   (A) घञ् (B) स्यन्
   (C) ट (D) मनिन्

22. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य अन्तिमे श्लोके किं छन्दः वर्तते?
   (A) उपजातिः
   (B) वशस्थः
   (C) वसन्ततिलका
   (D) मालिनी

23. 'कृषीवलः' अस्याभिप्रायः वर्तते?
   (A) कृषिकार्यम् **(B) कृषकः**
   (C) जलसिञ्चनम्(D) वृषभः

24. 'नारीसमया' इत्यत्र 'समया' इत्यस्य तात्पर्यम् अस्ति?
   (A) सामग्री (B) मायायुक्ता
   (C) कालः **(D) मर्यादा**

25. 'यमौ' कौ स्तः?
(A) युधिष्ठिरार्जुनौ
(B) भीमार्जुनौ
(C) नकुलसहदेवौ
(D) अर्जुननकुलौ

26. तवाभिधानाद् व्यथते नताननः, स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः' इत्यत्र 'नताननः' कः?
(A) सुयोधनः (B) धर्मराजः
(C) वनेचरः (D) भीमसेनः

27. 'कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः, शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः।' इत्युक्त्या कः प्रेरितः?
(A) अर्जुनः **(B) युधिष्ठिरः**
(C) वनेचरः (D) सुयोधनः

28. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' इत्यत्र 'खलु' अव्ययस्य अर्थः अस्ति?
(A) अनुनयः (B) जिज्ञासा
(C) निग्रहः **(D) निश्चयः**

29. ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्। तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः।।'' पद्येऽस्मिन् 'मां' इति पदेन कस्याः बोधो जायते?
(A) द्रौपद्याः (B) शकुन्तलायाः
(C) सीतायाः (D) लक्ष्म्याः

30. 'स वल्कवासांसि तवाधुनाहरन्' कः?
(A) अर्जुनः (B) भीमः
(C) नकुलः (D) सहदेवः

31. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य कथानकेषु किं नास्ति?
(A) द्वैतवन-निवासः
(B) गुप्तचरेण दुर्योधनस्य वृत्तान्तकथनम्
(C) द्रौपद्याः कोपः
(D) द्रौपद्याः कोपस्य युधिष्ठिरेण प्रत्युत्तरम्।

32. ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' इयं सूक्तिः प्राप्यते?
(A) मृच्छकटिके
(B) किरातार्जुनीये
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) नीतिशतके

33. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' इति वचनं वर्तते?
(A) वनेचरस्य (B) नारदस्य
(C) युधिष्ठिरस्य (D) द्रौपद्याः

34. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' इति कस्मिन् काव्ये उक्तम्?
(A) शिशुपालवधे
(B) भट्टिकाव्ये
(C) किरातार्जुनीये
(D) कुमारसम्भवे

35. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।' कस्याः इदं वचनम् ?
(A) द्रौपद्याः
(B) वनेचरस्य
(C) दुर्योधनस्य
(D) न एतेषु कोऽपि

36. "जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्" कथनमिदं कः कं प्रति वदति?
(A) द्रौपदी युधिष्ठिरम् प्रति
(B) वनेचरः अर्जुनं प्रति
(C) द्रौपदी भीमं प्रति
(D) वनेचरः दुर्योधनं प्रति

37. "वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि" इति कस्योक्तिः?
(A) कालिदासस्य (B) भवभूतेः
(C) भारवेः (D) श्रीहर्षस्य

38. 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः' इत्यत्र अलङ्कारः कः?
(A) उपमालङ्कारः
(B) उत्प्रेक्षालङ्कारः
(C) काव्यलिङ्गालङ्कारः
(D) अर्थान्तरन्यासालङ्कारः

39. भारविः कस्योपासकः आसीत्?
(A) ब्रह्मणः **(B) शिवस्य**
(C) विष्णोः (D) सूर्यस्य

40. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे कति श्लोकाः सन्ति?
(A) 46 (B) 48
(C) 45 (D) 49

41. कवीनां समुचितः उत्तरोत्तरः कालक्रमः कः?
(A) माघ-भारवि-श्रीहर्षाः
(B) भास-भारवि-अश्वघोषाः
(C) भास-माघ-कालिदासाः
(D) वाल्मीकि-भास-भारविकवयः

42. भारवेः प्रिय अलङ्कारः वर्तते?
(A) उपमा
(B) उत्प्रेक्षा
(C) रूपकः
(D) अर्थान्तरन्यासः

43. वनवासकाले वनान्तशय्यायां कौ शयनं कुरुतः?
(A) अर्जुन –वनेचरौ
(B) नकुल –सहदेवौ
(C) युधिष्ठिर –कृष्णौ
(D) दुर्योधन –दुःशासनौ

44. 'अवन्तिसुन्दरीकथानुसारं' भारविः आसीत्?
(A) दक्षिणभारतस्य
(B) उत्तरभारतस्य
(C) मध्यप्रदेशस्य
(D) पूर्वीभारतस्य

45. द्रौपद्याः चारित्रिकी विशेषता नास्ति?
(A) वीरक्षत्राणी
(B) कुशलराजनीतिज्ञा
(C) तेजस्विनी
(D) कुलटा

46. "विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे" इत्यनेन कः वाचमाददे-
(A) युधिष्ठिरः **(B) वनेचरः**
(C) दुर्योधनः (D) द्रौपदी

47. 'वञ्चनीयाः' पदे प्रत्ययोऽस्ति?
(A) तव्यत् **(B) अनीयर्**
(C) ल्यप् (D) तुमुन्

48. ''शास्ति'' इतिपदे लकार-पुरुष-वचनञ्चास्ति?
(A) लट्, प्रथमपुरुषः, एक.
(B) लृट्, प्रथमपुरुषः, एक.
(C) लिट्, प्रथमपुरुषः,एक.
(D) लोट्, प्रथमपुरुषः,एक.

49. ''अतोर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा'' इत्यत्र कः कं वदति?
(A) दुर्योधनः, युधिष्ठिरम्।
(B) वनेचरः, युधिष्ठिरम्।
(C) अर्जुनः किरातम्।
(D) द्रौपदी, युधिष्ठिरम्।

50. ''स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्'' सूक्तिरियं केनोक्ता?
(A) युधिष्ठिरेण (B) दुर्योधनेन
(C) वनेचरेण (D) द्रौपद्या

51. ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' इति कः कं वदति?
(A) वनेचरः द्रौपदीम्।
(B) वनेचरः युधिष्ठिरम्।
(C) द्रौपदी युधिष्ठिरम्।
(D) न एतेषु कोऽपि

52. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्' द्रौपदी कं प्रति वदति?
(A) युधिष्ठिरम् (B) वनेचरम्
(C) द्रौपदीम् (D) दुर्योधनम्

53. ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः'' इत्यनेन द्रौपदी कस्य दुर्दशायाः वर्णनं करोति?
(A) युधिष्ठिरस्य (B) दुर्योधनस्य
(C) वनेचरस्य **(D) भीमस्य**

54. ''दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः'' अत्र 'वृकोदरः' कः?
(A) युधिष्ठिरः **(B) भीमः**
(C) दुर्योधनः (D) वनेचरः

55. ''क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न..... प्रभवोऽनुजीविभिः'' रिक्तस्थानं पूरयतु–
(A) रक्षणीयाः
(B) वञ्चनीयाः
(C) प्रेषणीयाः
(D) पालनीयाः

56. 'प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्'' इत्यत्र 'घ्नन्ति' पदे धातुः वर्तते?
(A) घन् **(B) हन्**
(C) नन् (D) नी

57. 'परिभ्रमन्' पदे प्रत्ययः अस्ति?
(A) शतृ (B) शानच्
(C) ल्युट् (D) घञ्

58. ''भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' इति कः केन सह वदति?
(A) भीमः, धृतराष्ट्रेन सह
(B) वनेचरः, युधिष्ठिरेण सह
(C) द्रौपदी, युधिष्ठिरेण सह
(D) वनेचरः, दुर्योधनेन सह

59. 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्तवेदितुम्' इत्यत्र 'यम्' पदेन कः सङ्केतितः-
(A) दुर्योधनः (B) युधिष्ठिरः
(C) अर्जुनः **(D) वनेचरः**

60. "निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' इति कस्य उक्तिः?
(A) यक्षस्य
(B) वनेचरस्य
(C) युधिष्ठिरस्य
(D) द्रौपद्याः

61. भारवेः जन्मस्थानं वर्तते?
(A) दक्षिणभारतस्य ज्ञानपुरम्
(B) दक्षिणभारतस्य अचलपुरम्
(C) पूर्वीभारतस्य सीतापुरम्
(D) मध्यभारतस्य शिवपुरम्

62. किरातार्जुनीयमहाकाव्ये श्लोकानां संख्या वर्तते?
(A) 1050 (B) 1250
(C) 1040 (D) 1150

63. भारवेः आश्रयदाता आसीत्?
(A) श्रीहर्षः
(B) विक्रमादित्यः
(C) पुलकेशिनस्य भ्राता विष्णुवर्धनः
(D) समुद्रगुप्तः

64. "नारिकेलफलसम्मितं वचः" सूक्तिः कस्मै प्रयुज्यते?
(A) श्रीहर्षाय (B) माघाय
(C) भारवये (D) दण्डिने

65. 'द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः' इत्यत्र 'द्विषां' पदे विभक्तिः वर्तते?
(A) द्वितीया **(B) षष्ठी**
(C) प्रथमा (D) सप्तमी

66. अर्जुनः कुत्र तपस्यामकरोत्?
(A) रैवतके
(B) इन्द्रकीलपर्वते
(C) विन्ध्याचले
(D) चित्रकूटे

67. मनोरथस्य पिता आसीत्?
(A) भवभूतिः **(B) भारविः**
(C) भर्तृहरिः (D) कालिदासः

68. 'महाकाव्ये' न्यूनातिन्यूनाः सर्गाः भवेयुः?
(A) अष्ट (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) सप्त

69. "प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्" इत्यत्र 'यं' पदे का विभक्तिः?
(A) प्रथमा (B) तृतीया
(C) द्वितीया (D) चतुर्थी

70. "हितैषिणः प्रियं प्रवक्तुं न इच्छन्ति" इति कस्य कथनम्?
(A) युधिष्ठिरस्य
(B) सुयोधनस्य
(C) वनेचरस्य
(D) द्रौपद्याः

71. "रहस्यनुज्ञामधिगम्य भूभृतः" इत्यत्र 'भूभृतः' पदे विभक्तिरस्ति?
(A) पञ्चमीविभक्तिः एकवचनम्
(B) षष्ठीविभक्तिः एकवचनम्
(C) द्वितीयाविभक्तिः एकवचनम्
(D) चतुर्थीविभक्तिः एकवचनम्

72. 'प्रभवः' कैः न वञ्चनीयाः?
(A) रक्षकैः **(B) अनुजीविभिः**
(C) राजभिः (D) मन्त्रिभिः

73. केषां चरित्रं दुर्बोधेन विज्ञेयः भवति?
(A) मन्त्रिणाम्
(B) अनुजीविनाम्
(C) राज्ञाम्
(D) गुप्तचराणाम्

74. 'अबोधविक्लवः' कोऽस्ति?
(A) वनेचरः (B) सुयोधनः
(C) युधिष्ठिरः (D) किरातः

75. ''वरं विरोधोऽपि......महात्मभिः''
रिक्तस्थानं पूरयतु?
(A) सह (B) साकम्
(C) समम् (D) शुभ्रम्

76. मानवीम् अगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुः कः?
(A) दुर्योधनः (B) युधिष्ठिरः
(C) वनेचरः (D) अर्जुनः

77. 'गतस्मयः सः' इत्यनेन कस्य बोधो जायते?
(A) युधिष्ठिरस्य
(B) वनेचरस्य
(C) अर्जुनस्य
(D) सुयोधनस्य

78. ''तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्'' इत्यत्र 'तदीयम्' पदेन बोध्यते?
(A) युधिष्ठिरः (B) रक्षकः
(C) दुर्योधनः (D) न कोऽपि

79. 'महौजसो मानधना धनार्चिता' इति कस्मै प्रयुक्तम्?
(A) दुर्योधनाय
(B) युधिष्ठिराय
(C) वनेचराय
(D) धर्नुर्धारिसेनायै

80. ''कोपविजिह्ममाननम्'' पदमिदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(A) युधिष्ठिराय (B) द्रौपद्ये
(C) दुर्योधनाय (D) धनञ्जयाय

81. कस्मै स्त्रीजनवचनम् अपमानमिव भवति?
(A) युधिष्ठिराय (B) सुयोधनाय
(C) भीष्माय (D) द्रौपद्यै

82. ''तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां'' इत्यत्र 'मां' पदेन कस्य ग्रहणं भवति?
(A) वनेचरस्य (B) दुर्योधनस्य
(C) युधिष्ठिरस्य **(D) द्रौपद्याः**

83. 'कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः' इत्यत्र ''वासवोपमः'' कस्य विशेषणं वर्तते?
(A) वृकोदरस्य **(B) धनञ्जयस्य**
(C) युधिष्ठिरस्य (D) वनेचरस्य

84. ''वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती'' इति कस्य सन्दर्भे प्रयुक्तम्?
(A) अर्जुनस्य
(B) नकुल-सहदेवयोः
(C) युधिष्ठिरस्य
(D) द्रौपद्याः

85. पराभवः केषां कृते उत्सव इव भवति?
(A) शत्रूणाम् (B) राज्ञाम्
(C) मानिनाम् (D) कुरूणाम्

86. ''न समयपरिरक्षणं क्षमं ते'' इत्यत्र किं छन्दः?
(A) वंशस्थ **(B)** मालिनी
(C) वियोगिनी **(D) पुष्पिताग्रा**

87. ''न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः'' इत्यत्र 'तेन' पदेन कस्य बोधः?
(A) दुर्योधनस्य (B) भीमस्य
(C) युधिष्ठिरस्य (D) अर्जुनस्य

88. 'विहाय' पदे प्रकृतिप्रत्ययः वर्तते?
(A) वि + हा + यत्
(B) वि + हा + ल्यप्
(C) वि + हा + ण्यत्
(D) वि + हा + क्त

89. 'अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः' इत्यत्र वर्णनमस्ति?
(A) अर्जुनस्य पराक्रमस्य
(B) द्रौपद्याः पराक्रमस्य
(C) दुर्योधनस्य कृषिव्यवस्थायाः
(D) दुर्योधनस्य सैन्यव्यवस्थायाः

90. 'अबन्ध्यकोपस्य' इति पदस्य अर्थः वर्तते?
(A) अकोपेन युक्तः
(B) कोपेन रहितः
(C) सफलकोपेन युक्तः
(D) न कोऽपि

91. 'चित्तवृत्तयः' इत्यत्र समासः वर्तते?
(A) षष्ठीतत्पुरुषः
(B) तृतीयातत्पुरुषः
(C) द्वितीयातत्पुरुषः
(D) चतुर्थीतत्पुरुषः

92. 'शास्ति' पदे धातुरस्ति?
(A) अकर्मकः (B) सकर्मकः
(C) द्विकर्मकः (D) न कोऽपि

93. किरातार्जुनीयस्य केन सर्गेण 'भारविः' आतपत्रोपाधिना विभूषितः?
(A) पञ्चमसर्गेण
(B) षष्ठसर्गेण
(C) तृतीयसर्गेण
(D) एकादशसर्गेण

94. 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्'' इत्यत्र अलङ्कारः वर्तते?
(A) उत्प्रेक्षा (B) रूपकः
(C) परिसंख्या **(D) अर्थान्तरन्यासः**

95. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' इत्यस्य श्रोता वर्तते?
(A) वनेचरः (B) दुर्योधनः
(C) युधिष्ठिरः (D) द्रौपदी

96. 'विहाय लक्ष्मीपतिलक्ष्मकार्मुकम्' इत्यत्र 'कार्मुकम्' पदस्य अर्थः वर्तते?
(A) शरः
(B) भल्लः
(C) शरस्य प्रत्यञ्चा
(D) धनुः

97. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य फलमस्ति?
(A) पाण्डवानां कृते राज्यप्राप्तिः
(B) पाशुपतास्त्रस्य प्राप्तिः
(C) इन्द्रकीलपर्वतस्य यात्रा
(D) शूकरेण सह युद्धः

98. 'रहसि' पदे प्रकृतिप्रत्ययः वर्तते?
(A) रह् + असुन्
(B) रम् + असि
(C) रम् + असुन्
(D) रह + असि

99. 'भवज्जिगीषया' इति पदे समासः वर्तते?
(A) केवलसमासः
(B) द्वन्द्वसमासः
(C) तृतीयातत्पुरुषः
(D) षष्ठीतत्पुरुषः

100. 'विधाय रक्षान् परितः परेतरान्' इत्यस्यां पङ्क्त्यां वनेचरः कस्य वर्णनं करोति?
(A) अर्जुनस्य युद्धकौशलस्य
(B) दुर्योधनस्य भेदनीतेः
(C) युधिष्ठिरस्य गुणगौरवस्य
(D) भीमस्य शरीरसौष्ठवस्य

101. 'तवाभिधानात् व्यथते नताननः' अत्र 'नताननः' कः?
(A) वनेचरः (B) युधिष्ठिरः
(C) अर्जुनः **(D) दुर्योधनः**

102. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे का रीतिः प्राप्यते?
(A) गौडीरीतिः (B) पाञ्चालीरीतिः
(C) लाटीरीतिः **(D) वैदर्भीरीतिः**

103. 'महाभारतस्य वनपर्वणि' आधारितः ग्रन्थः कः?
(A) रघुवंशम्
(B) किरातार्जुनीयम्
(C) दशकुमारचरितम्
(D) बुद्धचरितम्

104. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य प्रथमे सर्गे सर्वाधिकाः श्लोकाः कस्मिन् छन्दसि वर्तन्ते?
(A) वसन्ततिलकायाम्
(B) उपेन्द्रवज्रायाम्
(C) वंशस्थछन्दसि
(D) उपजातौ

105. 'किरातार्जुनीयम्' इत्यत्र 'किरात' पदेन कस्य बोधः भवति?
(A) गणेशस्य **(B) शिवस्य**
(C) राहोः (D) युधिष्ठिरस्य

106. युधिष्ठिरस्य समीपम् द्वैतवने कः आगतवान्?
(A) अर्जुनः **(B) वनेचरः**
(C) भीमः (D) सुयोधनः

107. वीररसप्रधानं काव्यमस्ति?
(A) उत्तररामचरितम्
(B) नैषधीयचरितम्
(C) कुमारसम्भवम्
(D) किरातार्जुनीयम्

108. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे वनेचरः वार्तालापं करोति?
(A) दुर्योधनेन सह
(B) युधिष्ठिरेण सह
(C) अर्जुनेन सह
(D) नकुलेन सह

109. किरातः कस्य महाकाव्यस्य पात्रम् अस्ति?
(A) रघुवंशस्य
(B) किरातार्जुनीयस्य
(C) नैषधस्य
(D) बुद्धचरितस्य

110. 'किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य' उपजीव्यमस्ति -
(A) श्रीमद्भागवतम्
(B) विष्णुपुराणम्
(C) महाभारतम्
(D) रामायणम्

111. द्वैतवने गुप्तचरः कस्य समीपं समाययौ?
(A) दुर्योधनस्य
(B) युधिष्ठिरस्य
(C) गुप्तचरस्य
(D) द्रौपद्याः

112. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' सूक्तिरियं कुत्र प्राप्यते?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तले
(B) किरातार्जुनीये
(C) नीतिशतके
(D) मेघदूते

113. 'अदेवमातृकाः' इति पदप्रयोगः कस्मिन् ग्रन्थे?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तलस्य चतुर्थेऽङ्के
(B) किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे
(C) उत्तररामचरितस्य तृतीये अङ्के
(D) कादम्बर्य्याः शुकनासोपदेशे

114. 'स वर्णिलिङ्गी ....वनेचरः' श्लोकेऽस्मिन् 'वर्णिलिङ्गी' इत्यस्य कोऽभिप्रायः?
(A) ब्रह्मचारी (B) किरातः
(C) देवयोनिविशेषः (D) विपरीतलिङ्गी

115. किरातार्जुनीये दुर्योधनस्य शासन-व्यवस्थां ज्ञातुं कं प्रेषितवान् आसीत्?
(A) सहदेवम् **(B) वनेचरम्**
(C) नकुलम् (D) धृष्टद्युम्नम्

116. दुर्योधनः कुरुदेशस्य प्रजां प्रसीदयितुं यां व्यवस्थां करोति, सा सम्बन्धिता अस्ति–
(A) करव्यवस्थायां औदार्येण
(B) उपहारवितरणेन
(C) कृष्णेन सह सम्बन्धसुस्थापनेन
(D) सिञ्चनव्यवस्थायै नदीकूपादिनिर्माणेन

117. 'मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्'– प्रस्तुत श्लोक में 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ है?
(A) अग्नि (B) इन्द्र
(C) कुबेर (D) ब्रह्मा

118. किरातार्जुनीये दुर्योधनस्य तुलना केन सह वर्णिता?

(A) उरगेन सह (B) शुकेन सह
(C) गजेन सह (D) सिंहेन सह

119. किरातार्जुनीये गुप्तचरः कस्मिन् वेषे हस्तिनापुरं प्रति गच्छति?

(A) सैनिकवेषेण
(B) यतिवेषेण
(C) ब्रह्मचारिवेषेण
(D) मन्त्रिवेषेण

120. किरातार्जुनीयस्य कः पाकः प्रथितः?

(A) द्राक्षापाकः
(B) कदलीपाकः
(C) आमलकीपाकः
(D) नारिकेलपाकः

121. ब्रह्मचारिवेशधारिणः गुप्तचरः क आसीत्?

(A) यक्षः **(B) वनेचरः**
(C) सुयोधनः (D) दुर्मुखः

122. धनं विजित्य युधिष्ठिराय कः ददति स्म?

(A) भीमः (B) नकुलः
(C) सहदेवः **(D) अर्जुनः**

123. किरातार्जुनीये कीदृशं चमत्कारित्वम्?

(A) पदलालित्यम्
(B) अर्थगौरवम्
(C) उपमा
(D) श्लेषालङ्कारम्

124. किरातार्जुनीये अर्जुनः भगवतः शङ्करात् किम् अस्त्रं प्राप्नोति?

(A) गाण्डीवम्
(B) पाशुपतास्त्रम्
(C) अग्निबाणम्
(D) जृम्भकास्त्रम्

125. 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' अस्य वाक्यस्य हिन्द्याम् अनुवादो भवति?

(A) हठपूर्वकं कार्यं मा कुरु
(B) हठपूर्वकं कार्यं कुर्यात्
(C) सहसा कार्यं कुर्यात्
(D) सहसा कार्यं मा कुर्यात्

126. किरातार्जुनीयस्य पात्रं नास्ति-

(A) वनेचरः (B) सुयोधनः
(C) नलः (D) द्रौपदी

127. वनेचरस्य वार्तां श्रवणानन्तरं युधिष्ठिरः कुत्र गतवान्?

(A) स्वविश्रामगृहे
(B) द्रौपद्याः समीपे
(C) व्यासस्य समीपे
(D) पर्वते

128. ''कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौ यमौ'' श्लोकेऽस्मिन् 'यमौ' इत्यनेन कयोः बोधः भवति?

(A) राम-लक्ष्मणयोः
(B) नकुल-सहदेवयोः
(C) भीमार्जुनयोः
(D) बलराम-कृष्णयोः

129. महात्मभिः साकं विरोधोऽपि कीदृशः भवति?
(A) दुःखदायकः
(B) धन-सम्पत्तिप्रदायकः
(C) उन्नतिप्रदायकः
(D) मैत्रीसम्बन्धवर्धकः

130. दुर्योधनः यज्ञकार्ये कथं संलग्नः भवति?
(A) परितः सैनिकान् नियुज्य
(B) रिपून् कारागारे संस्थाप्य
(C) मित्राणि उपकृत्य
(D) दुःशासनं यौवराज्यपदे संस्थाप्य

131. दुर्योधनः कदा भयभीतो भवति–
(A) श्रीकृष्णस्य मायाशक्तिं विचिन्त्य
(B) युधिष्ठिराभिधानं श्रुत्वा
(C) पाण्डवानां दैवीयशक्तिं स्मृत्य
(D) विदुरस्य उपदेशं श्रुत्वा

132. 'कृतप्रणामः' पदे समासः वर्तते?
(A) तत्पुरुषः (B) कर्मधारयः
(C) द्वन्द्वः **(D) बहुव्रीहिः**

133. कस्य महाकाव्यस्य प्रतिसर्गान्ते 'लक्ष्मीशब्दः' प्राप्यते?
(A) रघुवंशस्य
(B) शिशुपालवधस्य
(C) किरातार्जुनीयस्य
(D) नैषधीयचरितस्य

134. भीमस्य दैवीयजनकः आसीत्?
(A) धर्मराजः **(B) वायुः**
(C) अग्निः (D) इन्द्रः

135. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'– कस्मिन् ग्रन्थे उक्तम्–
(A) शिशुपालवधे (श्रीकृष्णः)
(B) हर्षचरिते (राज्यश्रीः)
(C) किरातार्जुनीये (वनेचरः)
(D) किरातार्जुनीये (युधिष्ठिरः)

136. अर्जुनः कुत्र नायकरूपेण वर्तते?
(A) किरातार्जुनीये
(B) शिशुपालवधे
(C) कुमारसम्भवे
(D) नैषधीयचरिते

137. 'किरातार्जुनीयम्' इत्यत्र 'किरात' पदेन कस्य बोधो जायते?
(A) किरातवेशधारी-शिवस्य
(B) वनेचरस्य
(C) सुयोधनस्य
(D) अर्जुनस्य

138. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य अनुसारेण पाण्डवाः क्व निवसन्तः आसन्?
(A) शान्तिवने
(B) द्वैतवने
(C) तुलसीवने
(D) विन्ध्यवने

139. भारवेः अर्थगौरवसम्पन्नं काव्यं किम्?
(A) जानकीहरणम्
(B) किरातार्जुनीयम्
(C) सौन्दरानन्दम्
(D) रामचरितम्

140. 'अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां, भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः' अत्र 'अबन्ध्यकोपस्य' कोऽर्थः?
(A) **सफलक्रोध वाले**
(B) मृषाक्रोध वाले
(C) मुक्तकोप वाले
(D) व्यर्थक्रोध वाले

141. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे प्रयुक्तच्छन्दसि गणाः वर्तन्ते?
(A) जगण-तगण-जगण-रगणाः
(B) जगण-तगण-जगण-द्वौ गुरुवर्णौ
(C) तगण-तगण-जगण-गुरौ
(D) तगण-भगण-जगण-जगण-गुरौ

142. 'न्यायधारा हि साधवः।' तात्पर्यं किम्?
(A) न्यायधारा सरला भवति
(B) न्यायधारा सतां धारा भवति
(C) सज्जनाः न्यायमार्गमेव अनुसरन्ति
(D) सज्जनाः न्यायमार्गं परित्यजन्ति

143. यस्य कथा रामायणाश्रिता नास्ति—
(A) रघुवंशस्य
(B) भट्टिकाव्यस्य
(C) जानकीहरणस्य
(D) किरातार्जुनीयस्य

144. 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्' अस्याः पङ्क्तेः रचयिता कः?
(A) कालिदासः
(B) माघः
(C) भारविः
(D) भर्तृहरिः

145. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' इत्यस्य अर्थः भवति?
(A) हितकरं वचनं दुर्लभं भवति
(B) मनोहारिवचनं दुर्लभं भवति
(C) हितकरं मनोहारि च वचनं दुर्लभम्
(D) दुर्लभवचनमेव हितकरं भवति।

146. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' इति वचनानुसारेण खलजनसंसर्गस्य अपेक्षया श्रेष्ठं भवति—
(A) साधुजनसंसर्गः
(B) साधुजनविरोधः
(C) दुष्टजनसंसर्गः
(D) मूर्खजनविरोधः

147. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' कस्मिन् ग्रन्थे उक्तम्?
(A) नीतिशतके
(B) किरातार्जुनीये
(C) अभिज्ञानशाकुन्तले
(D) मेघदूते

148. 'समुन्नयन् भूतिमनार्यसंगमाद्वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' इत्युक्तिः कुत्र प्राप्यते?
(A) उत्तररामचरिते
(B) मेघदूते
(C) किरातार्जुनीये
(D) कादम्बरीकथायाम्

149. 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' कः एवं वदति—
(A) वनेचरः (B) द्रौपदी
(C) भीमः (D) युधिष्ठिरः

150. ''स्फुटता न पदैरपाकृता, न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्'' इति कुत्र प्राप्यते?
(A) शिशुपालवधे
(B) किरातार्जुनीये
(C) जानकीहरणे
(D) रघुवंशे

151. 'न तितिक्षासममस्ति साधनम्'' इदं वाक्यमस्ति?
(A) शिशुपालवधे
(B) किरातार्जुनीये
(C) बुद्धचरिते (D) मेघदूते

152. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' उक्तिरियं वर्तते?
(A) युधिष्ठिरस्य **(B) वनेचरस्य**
(C) द्रौपद्याः (D) अर्जुनस्य

153. हितं मनोहारि च दुर्लभं..... ?
(A) धनम् (B) पुस्तकम्
(C) वचः (D) गृहम्

154. 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्' सूक्तिरियं प्राप्यते?
(A) अभिज्ञानशाकुन्तले
(B) गीतायाम्
(C) किरातार्जुनीये
(D) शिशुपालवधे

155. राज्ञां स्वभावः भवति?
(A) दुर्विज्ञेयः
(B) विज्ञेयः
(C) अप्रत्यक्षः
(D) प्रत्यक्षः

156. 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' इत्यत्र 'कृष्णा' इत्यस्य तात्पर्यमस्ति?
(A) कृष्णः **(B) द्रौपदी**
(C) कुन्ती (D) सीता

157. 'भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।' अस्य वचनस्य भावसाम्यं वर्तते?
(A) यथा कर्म तथा फलम्
(B) यः यादृशः तेन सह तादृशः
(C) जाकी रही भावना जैसी
(D) न एतेषु किमपि

158. ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' कस्य वचनमिदम्?
(A) माघस्य **(B) भारवेः**
(C) श्रीहर्षस्य (D) भवभूतेः

159. ''सहसा विदधीत न क्रियाम्'' – इत्ययमुपदेशः केन प्रदत्तः?
(A) भीमेन (B) द्रौपद्या
(C) युधिष्ठिरेण (D) वनेचरेण

160. 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता।' उक्तिरियं वर्तते?
(A) काश्यपस्य (B) भर्तृहरेः
(C) द्रौपद्याः (D) युधिष्ठिरस्य

161. ''सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः'' इति केनोक्तम्?
(A) द्रौपद्या
(B) वनेचरेण
(C) दुर्योधनेन
(D) युधिष्ठिरेण

162. ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' उक्तिरियं कस्य विषये सङ्केतयति?
(A) युधिष्ठिरस्य
(B) वनेचरस्य
(C) दुर्योधनस्य
(D) दुःशासनस्य

163. 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्।' इयमुक्तिः कस्य वर्तते?
(A) वनेचरस्य (B) दुर्योधनस्य
(C) द्रौपद्याः (D) युधिष्ठिरस्य

164. 'विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः।' सुभाषितमिदं प्राप्यते?
(A) मेघदूते
(B) किरातार्जुनीये
(C) उत्तररामचरिते
(D) शिवराजविजये

165. ''तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः'' अयं श्लोकांशः प्राप्यते?
(A) मेघदूते
(B) शिवराजविजये
(C) नीतिशतके
(D) किरातार्जुनीये

166. 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्।' श्लोकांशोऽयं प्राप्यते?
(A) किरातार्जुनीये
(B) प्रतिमानाटके
(C) मालविकाग्निमित्रे
(D) शिशुपालवधे

167. ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' कस्येयमुक्तिः?
(A) भारवेः (B) कालिदासस्य
(C) व्यासस्य (D) वाल्मीकेः

168. 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।' उक्तिरियं प्राप्यते?
(A) नीतिशतके
(B) किरातार्जुनीये
(C) मुद्राराक्षसे
(D) शिशुपालवधे

169. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं'' सूक्तिरियं किरातार्जुनीयस्य कस्मात् सर्गात् उद्धृता वर्तते?
(A) प्रथमसर्गात्
(B) द्वितीयसर्गात्
(C) तृतीयसर्गात्
(D) चतुर्थसर्गात्

170. ''क्रियासु युक्तैर्नृपचारचक्षुषो, न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः'' पंक्तिरियं कुत्र प्राप्यते?
(A) किरातार्जुनीये
(B) शिशुपालवधे
(C) विक्रमाङ्कदेवचरिते
(D) रघुवंशे

171. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' सूक्तिरियं प्राप्यते?
(A) शिवराजविजये – सेनापतिना
(B) किरातार्जुनीये – वनेचरेण
(C) किरातार्जुनीये – युधिष्ठिरेण
(D) शिवराजविजये – शिववीरेण

172. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' एषा उक्तिः कस्य काव्यस्य?
(A) शिशुपालवधे श्रीकृष्णः
(B) हर्षचरिते-राज्यश्रीः
(C) किरातार्जुनीये-युधिष्ठिरः
(D) किरातार्जुनीये-वनेचरः

173. "व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः"–इत्याद्युक्तिः किरातार्जुनीये भवति–
(A) अर्जुनस्य **(B) द्रौपद्याः**
(C) युधिष्ठिरस्य (D) वनेचरस्य

174. 'अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः' इति वाक्यं कस्मिन् महाकाव्येऽस्ति?
(A) रघुवंशे
(B) शिशुपालवधे
(C) किरातार्जुनीये
(D) नैषधीयचरिते

175. द्वैतवने युधिष्ठिरं कः समाययौ–
(A) नभश्चरः (B) स्थलचरः
(C) वनेचरः (D) शनैश्चरः

176. 'वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः' उक्तिरियं प्राप्यते?
(A) नीतिशतके
(B) शिशुपालवधे
(C) किरातार्जुनीये
(D) कुमारसम्भवे

177. किरातार्जुनीयस्य मल्लिनाथसूरि-कृतटीकायाः नाम किम्?
(A) सञ्जीवनी
(B) घण्टापथः
(C) छाया
(D) चन्द्रालोकः

178. "सहसा विदधीत न क्रियाम्" कस्य कवेः अयं प्रियः श्लोकः?
(A) भारवेः
(B) माघस्य
(C) कालिदासस्य
(D) भवभूतेः

179. बृहत्त्रयीषु किं महाकाव्यं नास्ति?
(A) किरातार्जुनीयम्
(B) शिशुपालवधम्
(C) रघुवंशमहाकाव्यम्
(D) नैषधीयचरितम्

180. अर्थगौरवस्य कृते प्रसिद्धिरस्ति?
(A) कालिदासस्य
(B) दण्डिनः
(C) भारवेः
(D) माघस्य

181. "न नो ननुन्नो नुन्नोनो नाना नानानना ननु" अस्य श्लोकस्य सम्बन्धः अस्ति–
(A) भारवेः किरातार्जुनीयेन सह
(B) माघस्य शिशुपालवधेन सह
(C) कालिदासस्य रघुवंशेन सह
(D) वाल्मीकेः रामायणेन सह

182. "व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं" सूक्तिरियं प्राप्यते?
(A) माघकाव्ये
(B) दण्डिकाव्ये
(C) भारविकाव्ये
(D) कालिदासकाव्ये

183. कस्य महाकाव्यस्य प्रथमत्रयसर्गाणां प्रसिद्धिः 'पाषाणत्रय' नाम्ना वर्तते?
(A) रघुवंशस्य
(B) किरातार्जुनीयस्य
(C) नैषधीयचरितस्य
(D) कुमारसम्भवस्य

184. भारवेः मूलनाम किमासीत्?
(A) रत्नाकरः
(B) श्रीधरः
(C) दामोदरः
(D) नारायणस्वामी

185. किरातार्जुनीयस्य मङ्गलाचरणे किं छन्दः?
(A) मालिनी
(B) वंशस्थः
(C) पुष्पिताग्रा
(D) रुचिरा

186. पाण्डवानां कृते वनवासस्य अवधिः आसीत्?
(A) चतुर्दशवर्षाणाम्
(B) पञ्चदशवर्षाणाम्
(C) अष्टादशवर्षाणाम्
(D) त्रयोदशवर्षाणाम्

187. 'किरातार्जुनीयस्य कथानकं कुतः उद्धृतं वर्तते?
(A) महाभारतस्य वनपर्वणः
(B) महाभारतस्य आदिपर्वणः
(C) महाभारतस्य सभापर्वणः
(D) महाभारतस्य भीष्मपर्वणः

188. 'आतपत्र' इति कस्य उपाधिः?
(A) माघस्य **(B) भारवेः**
(C) कालिदासस्य (D) श्रीहर्षस्य

189. 'बृहत्त्रय्यां परिगणितम् अस्ति'?
(A) रामायणम्
(B) महाभारतम्
(C) किरातार्जुनीयम्
(D) रघुवंशमहाकाव्यम्

190. भारवेः कालः विद्वद्भिः स्वीक्रियते?
(A) ६०० ईस्वीये
(B) ८०० ईस्वीये
(C) कालिदासस्य पूर्वम्
(D) प्रथम-शताब्द्याः परम्

191. भारविः पूर्ववर्तिकविः वर्तते?
(A) व्यासस्य **(B) श्रीहर्षस्य**
(C) कालिदासस्य (D) अश्वघोषस्य

192. किरातार्जुनीयस्य मुख्यः रसः अस्ति?
(A) वीररसः
(B) शृङ्गाररसः
(C) भयानकरसः
(D) न कोऽपि

193. पाण्डवानां कृते अज्ञातवासः आसीत्?
(A) वर्षद्वयस्य
(B) एकवर्षस्य
(C) त्रयोदशवर्षाणाम्
(D) चतुर्दशवर्षाणाम्

194. पाण्डवाः वनवासकाले निवसन्ति स्म?

(A) तुलसीवने (B) विन्ध्यवने
(C) द्वैतवने (D) नन्दनवने

195. द्रौपदी युधिष्ठिरं कं प्रति उपालम्भयति?

(A) भीमं प्रति
(B) दुर्योधनं प्रति
(C) वनेचरं प्रति
(D) कर्णं प्रति

196. भारवेः काव्ये कस्य अलङ्कारस्य प्रामुख्यं वर्तते?

(A) रूपकस्य
(B) उत्प्रेक्षायाः
(C) उपमायाः
(D) चित्रालङ्कारस्य

197. भारवेः पितुर्नाम आसीत्?

(A) श्रीधरः (B) महीधरः
(C) लक्ष्मीधरः (D) कृष्णधरः

198. भारवेः माता आसीत्?

(A) रसिका **(B) सुशीला**
(C) सुनीता (D) सुगीता

199. किरातार्जुनीयस्य पात्रं नास्ति?

(A) भीमः (B) दुर्योधनः
(C) वनेचरः **(D) रघुः**

200. 'किरातार्जुनीयस्य पात्रमस्ति?

(A) दुष्यन्तः (B) चारुदत्तः
(C) युधिष्ठिरः (D) बाली

201. किरातार्जुनीयं कीदृशं काव्यम्?

(A) नाटकम्
(B) चम्पूकाव्यम्
(C) आख्यायिका
(D) महाकाव्यम्

202. भारवेः कवितायां कस्य प्रभावः दृश्यते?

(A) कालिदासस्य
(B) माघस्य
(C) भवभूतेः
(D) न कस्यापि

203. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे कस्याः उदात्तचरित्रं वर्णितम्?

(A) कुन्त्याः **(B) द्रौपद्याः**
(C) गान्धार्य्याः (D) तारायाः

204. वर्णिलिङ्गी कः आसीत्?

(A) अर्जुनः **(B) वनेचरः**
(C) दुर्योधनः (D) युधिष्ठिरः

205. वनेचरः हस्तिनापुरं कस्मिन् वेशे गतवान्?

(A) राजवेशे
(B) ब्रह्मचारिवेशे
(C) मन्त्रिवेशे
(D) कृषकवेशे

206. भारवेः रचनाः सन्ति?

(A) तिस्रः (B) द्वे
(C) एका (D) सप्त

207. द्वैतवने युधिष्ठिरस्य समीपे कः आगच्छति?

(A) दुर्योधनः
(B) भीष्मः
(C) वर्णिलिङ्गी वनेचरः
(D) द्रोणाचार्यः

208. किरातार्जुनीये 'दुर्योधनस्य' संज्ञा वर्तते?

(A) सुयोधनः (B) दुःशासनः
(C) ज्येष्ठभ्राता (D) धनञ्जयः

209. वनेचरस्य चारित्रिकी विशेषता नास्ति?

(A) सत्यवान्, हितैषी
(B) स्पष्टवक्ता
(C) गुणवान्
(D) नीचः अहङ्कारी

210. किरातार्जुनीयस्य प्रारम्भः केन पदेन भवति?

(A) श्रियः (B) लक्ष्मीः
(C) वनेचरः (D) कुरूणाम्

211. 'वञ्चनीयाः' पदे प्रत्ययोऽस्ति?

(A) तव्यत् **(B) अनीयर्**
(C) ल्यप् (D) तुमुन्

212. 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' कथनमेतत् कस्य वर्तते?

(A) वनेचरस्य युधिष्ठिरं प्रति
(B) द्रौपद्याः युधिष्ठिरं प्रति
(C) युधिष्ठिरस्य वनेचरं प्रति
(D) सेवकस्य जनतां प्रति

213. 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' सूक्तिरियं प्राप्यते?

(A) किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे
(B) शिशुपालवधस्य प्रथमसर्गे
(C) रघुवंशमहाकाव्यस्य प्रथमसर्गे
(D) नैषधीयचरितस्य प्रथमसर्गे

214. "स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्" सूक्तिरियं केनोक्तम्?

(A) युधिष्ठिरेण (B) दुर्योधनेन
(C) वनेचरेण **(D)** द्रौपद्या

215. 'नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' अत्र 'सुयोधनस्य' कोऽर्थः?

(A) भारविः (B) श्रीकृष्णः
(C) दुर्योधनः (D) युधिष्ठिरः

216. "वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्" इत्यत्र पुरुषार्थ-विस्तारः केन क्रियते?

(A) युधिष्ठिरेण **(B) दुर्योधनेन**
(C) वनेचरेण (D) भीमेन

217. 'निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्' इति कस्मै प्रयुक्तम्?

(A) दुर्योधनाय (B) युधिष्ठिराय
(C) वनेचराय (D) द्रौपद्यै

218. "भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्" इति कः केन सह वदति?

(A) वनेचरः-युधिष्ठिरेण सह
(B) वनेचरः-दुर्योधनेन सह
(C) द्रौपदी-युधिष्ठिरेण सह
(D) दुर्वासाः-शकुन्तलया सह

219. वनवासकाले अर्जुनः किं गृहीत्वा युधिष्ठिराय ददति स्म?
(A) स्वर्णम्
(B) रजतः
(C) धनम्
(D) वल्कलवस्त्रम्

220. किरातार्जुनीये 'युगलभ्रातृरूपेण' वर्णनं वर्तते?
(A) भीमार्जुनयोः
(B) दुर्योधन-दुःशासनयोः
(C) नकुल-सहदेवयोः
(D) वनेचर-युधिष्ठिरयोः

221. किरातार्जुनीयस्य सूक्तिः नास्ति?
(A) हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः
(B) प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः
(C) विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः
(D) भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्गमैः

222. "कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे" इत्यत्र 'महीभुजे' पदे का विभक्तिः?
(A) सप्तमी **(B) चतुर्थी**
(C) तृतीया (D) पञ्चमी

223. किरातार्जुनीये 'किरात' शब्देन कस्य बोधः जायते?
(A) भीमस्य **(B) शिवस्य**
(C) अर्जुनस्य (D) दुर्योधनस्य

224. वनेचरस्य वार्तां श्रुत्वा युधिष्ठिरः कुत्र अगच्छत्?
(A) द्रौपद्याः समीपे
(B) व्यासस्य समीपे
(C) श्रीकृष्णस्य समीपे
(D) दुर्योधनस्य समीपे

225. दुर्योधनस्य शासनव्यवस्थां ज्ञातुं हस्तिनापुरं युधिष्ठिरः कं प्रेषितवान् आसीत्?
(A) वनेचरम् (B) अर्जुनम्
(C) नकुलम् (D) न एतेषु कोऽपि

226. किरातार्जुनीये अर्जुनः शिवेन कम् अस्त्रं प्राप्तवान्?
(A) पाशुपतास्त्रम्
(B) आग्नेयास्त्रम्
(C) वायव्यास्त्रम्
(D) ब्रह्मास्त्रम्

227. 'वनेचरः' कस्य ग्रन्थस्य पात्रम्?
(A) उत्तररामचरितस्य
(B) कादम्बर्य्याः
(C) शिशुपालवधस्य
(D) किरातार्जुनीयस्य

228. किरातार्जुनीये संवादः नास्ति?
(A) युधिष्ठिर-व्यासयोः
(B) वनेचर-युधिष्ठिरयोः
(C) इन्द्र-अर्जुनयोः
(D) सिंह-दिलीपयोः

229. किरातार्जुनीये कुशलगुप्तचर-भूमिकायां चित्रितोऽस्ति?
(A) दुर्योधनः (B) युधिष्ठिरः
(C) वनेचरः (D) द्रौपदी

230. किरातार्जुनीयं निबद्धमस्ति?
(A) अध्यायेषु **(B) सर्गेषु**
(C) काण्डेषु (D) अङ्केषु

231. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे पात्ररूपेण चर्चा नास्ति?
(A) वनेचरः (B) द्रौपदी
(C) सुयोधनः **(D) श्रीकृष्णः**

232. वनेचरः युधिष्ठिरं, कस्य वृत्तान्तं श्रावयति?
(A) हस्तिनापुरस्य कर्णस्य
(B) इन्द्रप्रस्थस्य राज्ञः
(C) हस्तिनापुरस्य दुर्योधनस्य
(D) वनाधिराजस्य सिंहस्य

233. किरातार्जुनीयस्य पात्रं नास्ति?
(A) द्रौपदी (B) युधिष्ठिरः
(C) सुयोधनः **(D) मुरला**

234. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य प्रथमः वक्ता अस्ति?
(A) वनेचरः (B) श्रीकृष्णः
(C) भीमः (D) दुर्योधनः

235. वनेचरः हस्तिनापुरवृत्तान्तं कं श्रावितवान्?
(A) भीमम्
(B) द्रौपदीम्
(C) युधिष्ठिरम्
(D) अर्जुनम्

236. भारविः किरातार्जुनीयस्य मङ्गलाचरणं केन पदेन कृतवान्?
(A) श्रीशब्देन
(B) 'लक्ष्मीशब्देन'
(C) 'ओम्' शब्देन
(D) श्रीकृष्णशब्देन

237. भीमः स्वदेहे लेपनं करोति स्म?
(A) कमलरसस्य
(B) रक्तचन्दनस्य
(C) पीतचन्दनस्य
(D) सुगन्धित-इत्रस्य

238. 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' इति कस्य कथनम् ?
(A) श्रीहर्षस्य (B) माघस्य
(C) भारवेः (D) दण्डिनः

239. 'किरातश्च अर्जुनश्च' इत्यत्र कः समासः?
(A) द्विगुः **(B) द्वन्द्वः**
(C) तत्पुरुषः (D) बहुव्रीहिः

240. अर्थगौरवस्य कृते प्रसिद्धिरस्ति?
(A) कालिदासस्य (B) भवभूतेः
(C) बाणस्य **(D) भारवेः**

241. महाकविदण्डिनः पितामहः कः आसीत्?
(A) मम्मटः (B) कैय्यटः
(C) भारविः (D) बाणः

242. महाकवेः भारवेः उपाधिः आसीत्?
(A) आतपत्रम्
(B) घण्टा
(C) घटिकाशतक
(D) उपमा सम्राट्

243. 'महाकाव्ये' न्यूनातिन्यूनाः सर्गाः भवेयुः?
(A) अष्ट (B) चत्वारः
(C) पञ्च (D) सप्त

244. अधोलिखितेषु लघुत्रयीषु न परिगण्यते?
(A) रघुवंशम्
(B) कुमारसम्भवम्
(C) शिशुपालवधम्
(D) मेघदूतम्

245. ''प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्'' इत्यत्र 'यं' पदेन कस्यावबोधः जायते?
(A) सुयोधनस्य (B) युधिष्ठिरस्य
(C) वनेचरस्य (D) द्वैतवनस्य

246. ''हितैषिणः प्रियं प्रवक्तुं न इच्छन्ति'' इत्यत्र 'हितैषिणः' पदे का विभक्तिः-
(A) प्रथमा
(B) पञ्चमी
(C) षष्ठी
(D) द्वितीया

247. 'स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे' इत्यत्र 'स' पदेन कस्य बोधः भवति?
(A) सुयोधनस्य
(B) युधिष्ठिरस्य
(C) किरातस्य
(D) वनेचरस्य

248. राज्ञः मन्त्रिणश्च अनुकूले सति अनुरागं कुर्वन्ति?
(A) सर्वसम्पत्तयः
(B) सर्वोपदेशाः
(C) विपत्तयः
(D) कुमतयः

249. ''तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः'' कथनमिदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(A) सुयोधनाय (B) भीमाय
(C) वनेचराय (D) अर्जुनाय

250. 'धर्मार्थकामान्' भारविः किं वदति–
(A) धर्मत्रयः **(B) त्रिगणः**
(C) त्रिमुनिः (D) धर्मार्थकामाः

251. 'अशंकिताकारमुपैति शङ्कितः' कथनमिदं कस्य वर्तते?
(A) द्रौपद्याः (B) किरातस्य
(C) वनेचरस्य (D) सुयोधनस्य

252. कुल्यादिभिः सिञ्चिता कृषिभूमिः निगद्यते?
(A) अदेवमातृकाः (B) देवमातृकाः
(C) क्षेत्रमातृकाः (D) मातृकाः

253. पृथिव्याः कृते किरातार्जुनीये किं पदं प्रयुक्तम् ?
(A) बाधम् **(B) मेदिनी**
(C) वसूनि (D) उदयनः

254. ''नवयौवनोद्धतम्'' भारविः कं वदति?
(A) दुर्योधनम्
(B) दुःशासनम्
(C) भीमम्
(D) नकुल-सहदेवौ

255. कः आगम्यमानानां विपत्तीनां विषये एव चिन्तयति?
(A) युधिष्ठिरः (B) वनेचरः
(C) सुयोधनः (D) द्रौपदी

256. वनेचरस्य गमनानन्तरं युधिष्ठिरः कस्य भवनं गच्छति?
(A) कौरवस्य **(B) द्रौपद्याः**
(C) अर्जुनस्य (D) वनेचरस्य

257. ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' इति कः वदति?
(A) वनेचरः (B) सुयोधनः
(C) द्रौपदी (D) अर्जुनः

258. ''परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः'' पदमिदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(A) सुयोधनाय (B) धनञ्जयाय
(C) वृकोदराय (D) यमाय

259. 'चित्तवृत्तयः' कथं भवन्ति ?
(A) अचेतनाः **(B) विचित्ररूपाः**
(C) प्रसभाः (D) चलायमानाः

260. ''पुरोपनीतं नृप रामणीयकम्'' इति कस्य कथनम्?
(A) वनेचरस्य **(B) द्रौपद्याः**
(C) युधिष्ठिरस्य (D) अर्जुनस्य

261. द्रौपदी 'वन्यफलाशिनः' इति पदेन 'कं' भावयति?
(A) अर्जुनम् (B) भीमम्
(C) युधिष्ठिरम् (D) नकुलम्

262. ''समूलमुन्मूलयतीव मे मनः'' इति वाक्यं कस्मै प्रयुक्तम्?
(A) युधिष्ठिराय
(B) द्रौपद्ये
(C) भीमाय
(D) दुर्योधनाय

263. 'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' कथनमिदं कः कं प्रति वदति?
(A) द्रौपदी युधिष्ठिरं प्रति
(B) वनेचरः युधिष्ठिरं प्रति
(C) अर्जुनः भीमं प्रति
(D) दुर्योधनः सेवकं प्रति

264. ''विशङ्कमानो भवतः पराभवम्'' इत्यत्र 'भवतः' पदेन कः संकेतितः-
(A) दुर्योधनः
(B) वनेचरः
(C) युधिष्ठिरः
(D) द्रौपदी

265. भारवेः पूर्ववर्तिकविः कः वर्तते?
(A) व्यासः
(B) कालिदासः
(C) श्रीहर्षः
(D) अश्वघोषः

266. ''न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः'' इत्यत्र 'उद्यतम्' पदे कः धातुः?
(A) उद् + यम् + क्त
(B) उद् + क्त
(C) उद्य + क्त
(D) उद् + वह् + क्त

267. ''महौजसो मानधना धनार्चिताः'' इत्यत्र 'मानधना' पदस्यार्थः भवति?
(A) दर्पयुक्तः
(B) स्वाभिमानी
(C) निरभिमानी
(D) न एतेषु कोऽपि

268. ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः इत्यत्र 'स' पदेन कः सङ्केतितः-
(A) द्रौपदी (B) भीमः
(C) युधिष्ठिरः **(D) दुर्योधनः**

269. 'अवधूय' पदे प्रकृतिप्रत्ययः वर्तते?
(A) अव + धू + यत्
(B) आङ् + धू + ल्यप्
(C) अव + धू + ल्यप्
(D) अव + धू + यत्

270. 'कृतारिषड्वर्गजयेन' इति पदं कस्मै प्रयुक्तम्?
(A) युधिष्ठिराय (B) वनेचराय
(C) भीमाय **(D) दुर्योधनाय**

271. अर्जुनः कस्य पर्वतस्य यात्रां करोति?
(A) रैवतकपर्वतस्य
(B) इन्द्रकीलपर्वतस्य
(C) सुमेरुपर्वतस्य
(D) हिमालयपर्वतस्य

272. 'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती' इति प्रयोगः प्राप्यते?
(A) भारवेः कृते
(B) कालिदासस्य कृते
(C) भवभूतेः कृते
(D) श्रीहर्षस्य कृते

273. के जनाः शत्रून् पराजितं कृत्वा शान्तिमार्गेण सिद्धिं प्राप्नुवन्ति?
(A) मुनिजनाः (B) राजा
(C) दुर्योधनः (D) युधिष्ठिरः

274. एकाक्षरी-श्लोकाय कः प्रसिद्धः?
(A) दण्डी **(B) भारविः**
(C) बिल्हणः (D) न कोऽपि

275. 'सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः' इति केनोक्तम्?
(A) द्रौपद्या **(B) वनेचरेण**
(C) दुर्योधनेन (D) युधिष्ठिरेण

276. भारवेः पितरौ स्तः-
(A) नीलकण्ठः जातुकर्णी
(B) चन्द्रदेवः राजदेवी
(C) श्रीधरः सुशीला
(D) श्रीकण्ठः रसिकवती

277. अवन्तिसुन्दरीकथानुसारं भारवेः पितुः नाम किम्?
(A) नारायणस्वामी(B) श्रीधरः
(C) नीलकण्ठः (D) दामोदरः

278. भारवेः भार्यायाः नाम किम्?
(A) रसिकवती (B) यशोधरा
(C) राजदेवी (D) गोणिका

279. अवन्तिसुन्दरीकथानुसारं भारवेः मूलनाम किम्?
(A) लम्बोदरः (B) मंखकः
(C) जयादित्यः **(D) दामोदरः**

280. भारवेः सम्बन्धः कस्मात् प्रदेशात् अस्ति?
(A) उत्तरभारतात्
(B) दक्षिणभारतात्
(C) कश्मीरप्रदेशात्
(D) बंगालप्रदेशात्

281. भारवेः गोत्रोऽस्ति।
(A) कुशिकः (B) वशिष्ठः
(C) अंगिरा (D) किमपि न

282. भारविः कस्य मित्रं सभापण्डितः च आसीत् -
(A) हर्षवर्धनस्य
(B) सिंहविष्णोः
(C) विष्णुवर्धनस्य
(D) रविकीर्तेः

283. भारवेः स्थितिकालः अस्ति-
(A) कालिदासस्य पूर्वार्धम्
(B) माघस्य उत्तरार्धम्
(C) षष्ठ-शताब्द्याः उत्तरार्द्धे सप्तम शताब्द्याः पूर्वार्द्धे च-
(D) उपर्युक्तं न किमपि

284. भारवेः पुत्रस्य नाम आसीत्?
(A) मनोरथः (B) वीरदत्तः
(C) दण्डी (D) सर्वाश्रयः

285. भारवेः पुत्रस्य मनोरथस्य चतुर्थः पुत्रः कः आसीत्?
(A) रविदत्तः **(B) वीरदत्तः**
(C) वीरकान्तः (D) नारायणः

286. वीरदत्तस्य पत्न्याः नाम अस्ति-
(A) सुशीला **(B) गौरी**
(C) गार्गी (D) किमपि न

287. वीरदत्तस्य पुत्रः कः?
(A) अश्वघोषः (B) कालिदासः
(C) दण्डी (D) भवभूतिः

288. भारविः दण्डिनः कः अस्ति-
(A) जनकः (B) मातुलः
(C) पितामहः **(D) प्रपितामहः**

289. भारवेः जन्मस्थानम् अस्ति?
(A) अचलपुरम् (B) अचलीपुरम्
(C) पद्मपुरम् (D) उज्जयिनी

290. भारवेः काव्यस्य वैशिष्ट्यम् अस्ति-
(A) अर्थगौरवम्
(B) पदलालित्यम्
(C) उपमायाः निरूपणम्
(D) किमपि न

291. भारविः उपासकः आसीत् -
(A) ब्रह्मणः **(B) शिवस्य**
(C) बुद्धस्य (D) विष्णोः

292.भारवेः उपाधिः अस्ति-
(A) कविकुलगुरुः
(B) आतपत्र-भारविः
(C) शतावधानः
(D) पदवाक्यप्रमाणज्ञः

293. किरातार्जुनीयमहाकाव्ये कति सर्गाः श्लोकाश्च सन्ति?
(A) 19/1025
(B) 18/1040
(C) 20/1650
(D) 22/2830

294. किरातार्जुनीयस्य उपजीव्यम् अस्ति-
(A) महाभारतस्य भीष्मपर्व
(B) महाभारतस्य विराट्पर्व
(C) महाभारतस्य उद्योगपर्व
(D) महाभारतस्य वनपर्व

295. किरातार्जुनीयं विभक्तम् अस्ति-
(A) प्रकाशेषु (B) निःश्वासेषु
(C) अङ्केषु **(D) सर्गेषु**

296. युधिष्ठिरादीनां पञ्चपाण्डवानां कृते वनवासः अभूत्-
(A) 12 वर्षाणाम्
(B) 13 वर्षाणाम्
(C) 14 वर्षाणाम्
(D) 15 वर्षाणाम्

297. पाण्डवानां अज्ञातवासस्य अवधिः आसीत्-
(A) 13 वर्षस्य (B) 12 वर्षस्य
(C) 1 वर्षस्य (D) 5 वर्षस्य

298. महाकविभारवेः शैली अस्ति-
(A) सुकुमारशैली
(B) अलङ्कृतशैली
(C) वैदर्भीशैली
(D) सर्वे

299. महाराजदुर्विनीतः किरातार्जुनीयस्य कस्य सर्गस्य टीकाम् अरचयत्।
(A) प्रथमसर्गस्य
(B) दशमसर्गस्य
(C) पञ्चदशसर्गस्य
(D) षोडशसर्गस्य

300. बृहत्कथायाः संस्कृतरूपान्तर-शब्दावतारस्य लेखकः अस्ति।
(A) सिंहविष्णुः (B) विष्णुवर्धनः
(C) दुर्विनीतः (D) पुष्यमित्रः

301. संस्कृतसाहित्ये रीतिकाव्यस्य जन्मदाता अस्ति-
(A) माघः (B) वामनः
(C) विश्वनाथः **(D) भारविः**

302. किरातार्जुनीयस्य प्रथमं द्वितीयं तृतीयं च सर्गाः किं कथ्यन्ते-
(A) चित्रकाव्यम्
(B) पाषाणत्रयम्
(C) राजनीतिकाव्यम्
(D) सरसकाव्यम्

303. किरातार्जुनीयस्य नायकः अस्ति-
(A) युधिष्ठिरः (B) दुर्योधनः
(C) अर्जुनः (D) श्रीकृष्णः

304. एहोलशिलालेखस्य अवधिः अस्ति-
(A) 633 ई. **(B) 634 ई.**
(C) 635 ई. (D) 636 ई.

305. किरातार्जुनीयस्य सर्वप्रामाणिकी टीका कस्य अस्ति-
(A) हरिकान्तस्य
(B) भागीरथमित्रस्य
(C) विश्वनाथस्य
(D) मल्लिनाथस्य

306. किरातार्जुनीये आचार्यमल्लिनाथस्य टीकायाः नाम अस्ति-
(A) सारस्वती (B) बालबोधिनी
(C) घण्टापथ (D) तत्त्वदीपिका

307. आचार्य-मल्लिनाथस्य पुत्रः अस्ति-
(A) पेडुभट्ट (B) कुमारस्वामी
(C) (A) (B) **उभौ** (D) सारस्वतः

308. आचार्यमल्लिनाथस्य उपाधिः अस्ति-
(A) कोलाचलः
(B) महामहोपाध्यायः
(C) (A) (B) उभौ
(D) आतपत्रम्

309. आचार्यमल्लिनाथस्य कालः अस्ति-
(A) 14वीं शताब्दी उत्तरार्ध
(B) 15वीं शताब्दी
(C) 16वीं शताब्दी
(D) 17वीं शताब्दी

310. आचार्यमल्लिनाथस्य प्रणीतग्रन्थः अस्ति-
(A) उदारकाव्यम् (B) रघुवीरचरितम्
(C) (A) (B)**उभौ** (D) किरातार्जुनीयम्

311. आचार्यमल्लिनाथः 'सञ्जीवनी' नाम्नी टीकाम् अरचयत् -
(A) कुमारसम्भवे
(B) रघुवंशे
(C) मेघदूते
(D) उपर्युक्तेषु सर्वेषु

312.किरातार्जुनीयम् शब्दे कः प्रत्ययः?
(A) छ-प्रत्ययः
(B) ङीप्-प्रत्ययः
(C) ल्युट्-प्रत्ययः
(D) युच्-प्रत्ययः

313.'हितं मनोहारि च दुर्लभं ....' रिक्तस्थानं पूरयतु-
(A) धनम् (B) पुस्तकम्
(C) वचः (D) गृहम्

314.''वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि'' इति कस्योक्तिः?
(A) कालिदासस्य (B) भवभूतेः
(C) भारवेः (D) श्रीहर्षस्य

315.''अबन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः'' इति वाक्यं कस्मिन् महाकाव्येऽस्ति?
(A) रघुवंशे (B) शिशुपालवधे
(C) किरातार्जुनीये (D) नैषधीयचरिते

316.'स वल्कवासांसि तवाधुनाहरन्' कः?
(A) अर्जुनः (B) भीमः
(C) नकुलः (D) सहदेवः

317. ''कीदृशं वचः दुर्लभं भवति।'' सम्यक् शब्दस्य चयनं करोतु-
(A) सत्यम्
(B) प्रियम्
(C) हितं मनोहारि च
(D) मनोहारि

318.''निराश्रया हन्त! हता मनस्विता'' कस्य वचनमिदम्?
(A) काश्यपस्य (B) भर्तृहरेः
(C) द्रौपद्याः (D) युधिष्ठिरस्य

319.आचार्यमल्लिनाथः शिशुपालवधे कां टीकाम् अरचयत्-
(A) जीवातु (B) संजीवनी
(C) सर्वङ्कषा (D) घण्टापथः

320.आचार्यमल्लिनाथः 'जीवातु' टीकामरचयत्-
(A) नैषधीयचरिते (B) रावणवधे
(C)(A) (B)उभौ (D) कुमारसम्भवे

321. घण्टापथस्य अर्थः अस्ति-
(A) घण्टामार्गम् (B) घण्टानादम्
(C) उभौ **(D) राजमार्गम्**

322. 'शब्दार्थदीपिका' इत्यस्य टीकाकारः कः ?
(A) रामचन्द्रः **(B) चित्रभानुः**
(C) राजकुन्दः (D) भागीरथमिश्रः

323. किरातस्य 'सुबोधा' टीकायाः टीकाकारः कः ?
(A) रामचन्द्रः (B) हरिकान्तः
(C) राजकुन्दः **(D) भरतसेनः**

324. सुमेलितं नास्ति-
(A) सर्वमङ्गला - भागीरथमिश्रः
(B) सारावली - राजकुन्दः
(C) मनोरमा - रामचन्द्रः
(D) बालबोधिनी - मल्लः

325. मेलयतु-
(a) अल्लड़नरहरिः (i) सारावली
(b) राजकुन्दः (ii) घण्टापथ
(c) हरिकान्तः (iii) दुर्घटसंग्रह
(d) मल्लिनाथः (iv) तत्त्वदीपिका

	a	b	c	d
(A)	(i)	(iii)	(ii)	(iv)
(B)	(ii)	(i)	(iii)	(iv)
(C)	**(iv)**	**(iii)**	**(i)**	**(ii)**
(D)	(i)	(ii)	(iii)	(iv)

326. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य मुख्यप्रयोजनमस्ति –
(A) युधिष्ठिरस्य जागरणम्
(B) स्कन्दार्जुनयोः युद्धम्
(C) पाशुपतस्य अस्त्रप्राप्तिः
(D) शिवार्जुनयोः युद्धम्

327. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे कति श्लोकाः सन्ति-
(A) 44 (B) 45
(C) 46 (D) 47

328. महाकविभारवेः काव्ये कस्य प्रभावः अस्ति-
(A) माघस्य (B) भवभूतेः
(C) कालिदासस्य (D) श्रीहर्षस्य

329. भारवेः प्रभावः कुत्र दृश्यते-
(A) श्रीहर्षे **(B) माघे**
(C) कालिदासे (D) उपर्युक्तेषु सर्वेषु

330. किरातार्जुनीयस्य पात्रमस्ति-
(A) अभिमन्युः (B) परीक्षितः
(C) जनमेजयः **(D) वनेचरः**

331. किरातार्जुनीये यमौ भ्रातरौ स्तः -
(A) भीमार्जुनौ
(B) नकुलसहदेवौ
(C) दुर्योधनदुःशासनौ
(D) कृष्णबलरामौ

332. पात्रं सुमेलयतु-
(a) उत्तररामचरितम् (1) नारदः
(b) शिशुपालवधम् (2) वासन्ती
(c) किरातार्जुनीयम् (3) दमयन्ती
(d) नैषधीयचरितम् (4) द्रौपदी

	a	b	c	d
(A)	(1)	(2)	(3)	(4)
(B)	(1)	(2)	(4)	(3)
(C)	(2)	(1)	(3)	(4)
(D)	**(2)**	**(1)**	**(4)**	**(3)**

333. दुर्योधनेन सह युद्धाय युधिष्ठिरं कः प्रेरयति-
(A) भीमः (B) अर्जुनः
(C) द्रौपदी (D) श्रीकृष्णः

334. राजसिंहासने उपविष्टः दुर्योधनः कस्मात् पराजयस्य आशंकां करोति-
(A) शिशुपालात् **(B) पाण्डवात्**
(C) कंसात् (D) कृष्णात्

335. किरातार्जुनीयस्य मङ्गलाचरणमस्ति-
(A) श्रियःपतिः श्रीमति शासितुं जगज्जगन्निवासो वसुदेवसद्मनि
(B) श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं
(C) वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये
(D) या सृष्टिः स्रष्टुराद्यावहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री

336.किरातार्जुनीये प्रयुक्तमङ्गलाचरणं कीदृशमस्ति-
(A) नमस्कारात्मकम्
(B) आशीर्वादात्मकम्
(C) वस्तुनिर्देशात्मकम्
(D) किमपि न

337. 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं' इत्यत्र 'कुरूणामधिपः' पदं कस्य कृते अस्ति-
(A) युधिष्ठिरस्य (B) धृतराष्ट्रस्य
(C) श्रीकृष्णस्य **(D) दुर्योधनस्य**

338."स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ" अत्र 'सः' पदं कस्य कृतेऽस्ति-
(A) दुर्योधनस्य **(B) वनेचरस्य**
(C) युधिष्ठिरस्य (D) भारवेः

339.कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे अस्मिन् श्लोके 'महीभुजे' पदं कस्य प्रतीकमस्ति?
(A) दुर्योधनस्य (B) भीमस्य
(C) वनेचरस्य **(D) युधिष्ठिरस्य**

340."न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं" अस्मिन् वाक्ये 'तस्य' पदेन तात्पर्यमस्ति-
(A) वनेचरस्य
(B) युधिष्ठिरस्य
(C) द्रौपद्याः
(D) भीमस्य

341.के जनाः मृषा प्रियञ्च न वक्तुमिच्छन्ति-
(A) शत्रुः
(B) मित्रम्
(C) हिताभिलाषिणः
(D) उपर्युक्ताः सर्वेऽपि

342. कीदृशं वचनं दुर्लभमस्ति?
(A) हितं मनोहारि च
(B) अहितकरं प्रियञ्च
(C) उपदेशकारी
(D) सत्यं प्रियञ्च

343.यः नृपाय समुचितं परामर्शं न ददाति सः नास्ति?
(A) मन्त्री **(B) सखा**
(C) बन्धुः (D) गुरुः

344.वनेचरः हस्तिनापुरस्य वृत्तान्तं युधिष्ठिरं श्रावितवान्-
(A) सभामध्ये (B) वने
(C) रणे **(D) एकान्ते**

345. नृपस्य कृते गुप्तचरः भवति-
(A) कर्णः **(B) नेत्रम्**
(C) नासिका (D) मुखम्

346. निसर्गदुर्बोधं किम्?
(A) शास्त्रचिन्तनं
(B) राजनीतिचर्चा
(C) भूपतीनां चरितम्
(D) मैत्रीसम्बन्धः

347.कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः, शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः। इति उक्त्या कः प्रेरितः?
(A) अर्जुनः **(B) युधिष्ठिरः**
(C) वनेचरः (D) सुयोधनः

348. नृपासनस्थोऽपि, वनाधिवासिनः पदं क्रमशः कस्य विशेषणम्-
(A) युधिष्ठिरदुर्योधनयोः
(B) युधिष्ठिरश्रीकृष्णयोः
(C) शिशुपालदुर्योधनयोः
(D) दुर्योधनयुधिष्ठिरयोः

349.''छद्मजितां महीं नयेन कः जेतुम्'' इच्छति?
(A) शिशुपालः **(B) दुर्योधनः**
(C) अर्जुनः (D) युधिष्ठिरः

350.'तथापि जिह्मः स भवज्जिगीषया' इत्यत्र 'स' पदस्य तात्पर्यमस्ति-
(A) दुर्योधनः (B) युधिष्ठिरः
(C) उभौ (D) वनेचरः

351. दुर्योधनः स्वशुभ्रं यशः तनोति-
(A) राज्यसंचालनेन **(B) गुणसम्पदा**
(C) उभौ (D) युद्धजयेन

352.'स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः' इत्यत्र 'गतस्मयः' पदं कस्य कृते अस्ति-
(A) अर्जुनस्य (B) श्रीकृष्णस्य
(C) दुर्योधनस्य (D) युधिष्ठिरस्य

353. नृपेषु अमात्येषु च अनुकूलेषु रतिं कुर्वते–
(A) सर्वसम्पदः (B) सुखः
(C) उभौ (D) किमपि न

354. दुर्योधनः स्वभृत्येन व्यवहारं करोति-
(A) भ्रातृसदृशम् **(B) मित्रसदृशम्**
(C) शत्रुसदृशम् (D) पितृसदृशम्

355. दुर्योधनस्य व्यवहारः मित्रैः सह अस्ति-
(A) मित्रवत् (B) सेवकवत्
(C) बन्धुवत् (D) किमपि न

356. 'न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्' इत्यत्र 'त्रिगणः' इति पदस्य तात्पर्यमस्ति-
(A) धर्मार्थमोक्षाः
(B) अर्थकाममोक्षाः
(C) धर्मार्थकामाः
(D) कामार्थधर्माः

357. ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' इत्यत्र 'अस्य' पदं कस्य कृते अस्ति?
(A) दुर्योधनस्य (B) वनेचरस्य
(C) युधिष्ठिरस्य (D) द्रौपद्याः

358. ''वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना'' अस्मिन् श्लोके 'वशी' पदस्य प्रयोगः कस्य कृते अस्ति-
(A) अर्जुनस्य (B) युधिष्ठिरस्य
(C) दुःशासनस्य **(D) दुर्योधनस्य**

359. ''फलन्त्युपायाः परिबृंहतायतीः'' अस्मिन् श्लोके 'उपायाः' पदं कस्य कृते अस्ति-
(A) सामदानयोः
(B) दण्डभेदयोः
(C) A, B उभौ
(D) उपर्युक्तं किमपि न

360. 'इषवः' पदस्य कोऽर्थः-
(A) धनुषः **(B) बाणाः**
(C) कुन्ताः (D) त्रिशूलाः

361. 'अनुस्मृताखण्डलसूनु-विक्रमः इत्यत्र 'आखण्डलसूनुः' कः -
(A) युधिष्ठिरः (B) भीमः
(C) अर्जुनः (D) सुयोधनः

362. गरुडः कस्य वाहनमस्ति-
(A) इन्द्रस्य **(B) विष्णोः**
(C) कुबेरस्य (D) किमपि न

363. 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' इत्यत्र 'मादृशां' पदं कस्य कृते अस्ति-
(A) दुर्योधनस्य (B) युधिष्ठिरस्य
(C) द्रौपद्याः **(D) वनेचरस्य**

364. वनेचरेण दुर्योधनस्य वृत्तान्तं श्रुत्वा युधिष्ठिरः गतवान् -
(A) अर्जुनस्य समीपे
(B) भीमस्य समीपे
(C) द्रौपद्याः समीपे
(D) श्रीकृष्णस्य समीपे

365. ''प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः'' इत्यत्र 'धातुरिव' पदस्य अर्थः अस्ति-
(A) युधिष्ठिरः इव **(B) ब्रह्मा इव**
(C) श्रीकृष्णः इव (D) अर्जुनः इव

366. 'भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं' पंक्तिरियं कस्मात् काव्यात् उदधृतोऽस्ति?
(A) किरातार्जुनीयात्
(B) रघुवंशात्
(C) नैषधमहाकाव्यात्
(D) शिशुपालवधात्

367. 'नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः' इति वाक्यं कस्मिन् महाकाव्ये वर्तते-
(A) सौन्दरानन्दे
(B) बुद्धचरिते
(C) शिशुपालवधे
(D) किरातार्जुनीये

368. किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य शुभारम्भः कस्मात् शब्दात् भवति?
(A) 'लक्ष्मी'-शब्दात् **(B) 'श्री'- शब्दात्**
(C) 'शिव'-शब्दात् (D) 'विष्णु'-शब्दात्

369. किरातार्जुनीयस्य प्रतिसर्गान्ते कः शब्दप्रयोगो भवति -
(A) लक्ष्मीः
(B) श्रीः
(C) शिवः
(D) विष्णुः

370. किरातार्जुनीये अर्जुनस्य केन सह युद्धं वर्णितम् -
(A) विष्णुना सह
(B) इन्द्रेण सह
(C) किरातवेशधारिणा शंकरेण सह
(D) नारदेन सह

371. भारविणा कति अक्षरात्मकाः श्लोकाः रचिताः-

(A) एकाक्षर-द्वयाक्षरश्लोकाः

(B) द्वित्रयाक्षरश्लोकाः

(C) चतुराक्षरश्लोकाः

(D) पञ्चाक्षरश्लोकाः

372.न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः
कृतं न वा कोपविजिह्ममाननम्।
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते,
नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम् ।।
अस्मिन् श्लोके प्रशंसा वर्तते-

(A) युधिष्ठिरस्य (B) वनेचरस्य

(C) दुर्योधनस्य (D) अर्जुनस्य

373.भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते, विवर्तमानं नरदेव वर्त्मनि। इत्यत्र 'नरदेव' पदस्य अभिप्रायः अस्ति-

(A) श्रीकृष्णः (B) अर्जुनः

(C) युधिष्ठिरः (D) भीमः

374.अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना, न जातहार्देन न विद्विषादरः। इत्यत्र 'अमर्ष' पदस्य अर्थोऽस्ति-

(A) ईर्ष्या **(B) क्रोधः**

(C) सुखम् (D) स्नेहः

375.परिभ्रमँल्लोहितचन्दनोचितः, पदातिरन्तर्गिरिरेणुरूषितः। इत्यत्र 'लोहितचन्दनोचितः' पदातिः कस्य विशेषणमस्ति-

(A) दुर्योधनस्य

(B) भीमस्य

(C) नकुलस्य

(D) अर्जुनस्य

376. इन्द्रसदृशः पराक्रमयुक्तः कः अस्ति-

(A) श्रीकृष्णः **(B) अर्जुनः**

(C) भीमः (D) नकुलः

377. 'विजित्य यः प्राज्यमयच्छदुत्तरान् कुरूनकुप्यं वसु वासवोपमः' इत्यत्र अकुप्यं पदस्य कोऽर्थः-

(A) स्वर्णरजतरूपधनम्

(B) वसुन्धरारूपधनम्

(C) पशुरूपधनम्

(D) उपर्युक्तं सर्वम्

378. वनवाससमये पाण्डवेभ्यः वल्कलवस्त्राणि कः आनयति स्म -

(A) भीमः (B) नकुलः

(C) अर्जुनः (D) सहदेवः

379. ''वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती, कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ'' इत्यत्र 'अगजौ गजौ' कौ -

(A) सहदेवः (B) नकुलः

(C) A,B उभौ (D) भीमः

380. इमामहं वेद न तावकीं धियं, विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः। इत्यत्र 'तावकीं' पदस्य अभिप्रायः अस्ति-

(A) भीमः (B) नकुलः

(C) अर्जुनः **(D) युधिष्ठिरः**

381. 'इमामहं वेद न तावकीं धियं' कस्योक्तिः

(A) युधिष्ठिरस्य

(B) द्रौपद्याः

(C) भीमस्य

(D) श्रीकृष्णस्य

382. विचिन्तयन्त्या भवदापदं परां, रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः। इत्यत्र 'भवतः' 'मम' च पदस्य क्रमशः कयोः बोधः भवति।
(A) अर्जुन-भीमयोः
(B) वनेचर-युधिष्ठिरयोः
(C) युधिष्ठिर-द्रौपद्योः
(D) नकुल-सहदेवयोः

383.'पुराधिरूढः शयनं महाधनं, विबोध्यसे यः स्तुतिगीतिमङ्गलैः' इत्यत्र 'यः' पदस्य तात्पर्यमस्ति-
(A) युधिष्ठिरः (B) भीमः
(C) अर्जुनः (D) दुर्योधनः

384.'अदभ्रदर्भामधिशय्य स स्थलीं, जहासि निद्रामशिवैः शिवारुतैः' इत्यत्र 'शिवा' पदस्य अभिप्रायः अस्ति-
(A) पार्वती
(B) शिवः
(C) शृगाली
(D) द्रौपदी

385.''पुरोपनीतं नृप! रामणीयकं, द्विजातिशेषेण यदेतदन्धसा'' इत्यत्र 'नृप' इति पदं कस्य कृते अस्ति-
(A) दुर्योधनस्य कृते
(B) युधिष्ठिरस्य कृते
(C) श्रीकृष्णस्य कृते
(D) धृतराष्ट्रस्य कृते

386. ''मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्'' इत्यत्र 'बर्हिषाम्' पदस्य तात्पर्यमस्ति-
(A) कुशानाम् (B) फलानाम्
(C) नृपाणाम् (D) शत्रूणाम्

387.'कथं न मन्युर्ज्वलयत्युदीरितः शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः' का कं प्रेरयति।
(A) द्रौपदी-युधिष्ठिरम्
(B) भीमः-अर्जुनम्
(C) नकुलः-सहदेवम्
(D) अर्जुनः-द्रौपदीम्

388. किरातार्जुनीयस्य प्रतिनायकः अस्ति-
(A) किरातवेशधारी शिवः
(B) अर्जुनः
(C) दुर्योधनः
(D) युधिष्ठिरः

389.इन्द्रस्य सदृशः पराक्रमी अस्ति-
(A) श्रीकृष्णः **(B) अर्जुनः**
(C) भीमः (D) नकुलः

390. अर्जुनः कं प्रदेशम् अजयत्।
(A) पाञ्चालम्
(B) मगधम्
(C) गान्धारम्
(D) उत्तरकुरुप्रदेशम्

391.'विचित्ररूपाः खलु चित्तवृत्तयः' इति कस्योक्तिः-
(A) भीमस्य (B) अर्जुनस्य
(C) द्रौपद्याः (D) युधिष्ठिरस्य

392. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे वर्णनं नास्ति-
(A) वनेचरयुधिष्ठिरयोः संवादः
(B) दुर्योधनस्य शासनपद्धतेः वर्णनम्
(C) युधिष्ठिरस्य व्यासेन संवादः
(D) द्रौपद्याः युधिष्ठिरेण सह संवादः

393.किरातार्जुनीयस्य पञ्चमसर्गे वर्णनं नास्ति-
(A) हिमालयस्य वर्णनम्
(B) इन्द्रकीलस्य वर्णनम्
(C) अर्जुनस्य तपस्यायाः प्रारम्भः
(D) युधिष्ठिरभीमयोः संवादः

394.किरातार्जुनीयस्य कस्मिन् सर्गे अर्जुनस्य तपस्यायाः वर्णनम् अस्ति-
(A) 6 सर्गे (B) 7 सर्गे
(C) 8 सर्गे **(D) 5 सर्गे**

395. किरातार्जुनीयस्य कस्मिन् सर्गे चित्रयुद्धस्य वर्णनं प्राप्यते-
(A) किरातस्य- 13 सर्गे
(B) किरातस्य- 15 सर्गे
(C) किरातस्य- 14 सर्गे
(D) किरातस्य- 12 सर्गे

396.किरातार्जुनीयमहाकाव्ये इन्द्रकीलपर्वतस्य वैशिष्ट्यं कस्मिन् सर्गे वर्तते-
(A) 2 सर्गे (B) 3 सर्गे
(C) 5 सर्गे (D) 6 सर्गे

397.किरातार्जुनीयमहाकाव्ये कस्मिन् सर्गे पाशुपतास्त्र-प्राप्तिः वर्णिता अस्ति-
(A) 14 सर्गे (B) 15 सर्गे
(C) 16 सर्गे **(D) 18 सर्गे**

398. 'युधिष्ठिरम्' इत्यस्मिन् पदे समासः अस्ति-
(A) बहुव्रीहिः
(B) सप्तमी अलुक्तत्पुरुषः
(C) षष्ठीतत्पुरुषः
(D) तृतीयातत्पुरुषः

399.'किरातार्जुनीयम्' इत्यस्मिन् पदे समासः अस्ति-
(A) अव्ययीभावः (B) सुप्सुपा
(C) द्वन्द्वः (D) तत्पुरुषः

400.'किरातार्जुनीयम्' इत्यस्य समासविग्रहः अस्ति-
(A) किरातश्च अर्जुनश्च
(B) किरातौ च अर्जुनौ
(C) अर्जुनस्य किरातः यस्य सः
(D) किमपि न

401. 'असाधुः' इत्यत्र समासः -
(A) प्रादितत्पुरुषः (B) अव्ययीभावः
(C) अलुक्तत्पुरुषः **(D) नञ्तत्पुरुषः**

402. 'अनुभावः' इत्यत्र समासः -
(A) सुप्सुपा (B) नञ्तत्पुरुषः
(C) प्रादितत्पुरुषः (D) पञ्चमीतत्पुरुषः

403. 'वनाधिवासिनः' इत्यस्य समासविग्रहः अस्ति-
(A) वने अधिवसति
(B) वनम् अधिवसति
(C) वने वसति
(D) वनं वसति

404. 'सुयोधनः' इत्यत्र कः समासः अस्ति-
(A) उपपदतत्पुरुषः (B) बहुव्रीहिः
(C) कर्मधारयः (D) प्रादितत्पुरुषः

405. 'मानवीम्' इत्यत्र सामासिकविग्रहः अस्ति-
(A) मनुना प्रोक्तम् इति मानवीम्
(B) मनुः उद्देश्यम् अध्वनम्
(C) मनोः इयम् इति मानवी ताम् मानवीम्
(D) मानवीताम् मानवीम्

406. 'भवदापदं' पदे समासः अस्ति-
(A) अलुक्तत्पुरुषः
(B) सप्तमीतत्पुरुषः
(C) पञ्चमीतत्पुरुषः
(D) षष्ठीतत्पुरुषः

407. मानधनाः' पदस्य विग्रहपदमस्ति-
(A) मानं धनं येषां ते
(B) मानः एव धनं येषां ते
(C) मानस्य धनः येषां ते
(D) मानम् एव धनस्य येषां ते

408.'हिरण्यरेतसम्' पदे समासः अस्ति-
(A) तत्पुरुषः (B) द्वन्द्वः
(C) बहुव्रीहिः (D) अव्ययीभावः

409.'दुरन्ता' पदस्य समासविग्रहमस्ति-
(A) दुष्ट अन्तः यस्याः सा
(B) दुष्टम् अन्तम्
(C) दुष्टम् अन्तः यस्य सः
(D) दुष्टस्य अन्तम्

410.'कृष्णासदनम्' इत्यस्य विग्रहपदमस्ति-
(A) कृष्णस्य सदनम्
(B) कृष्णस्य सदनं यस्य सः
(C) कृष्णाय सदनम्
(D) कृष्णायाः सदनम्

411.'किरातार्जुनीयम्' इत्यत्र प्रत्ययः अस्ति-
(A) इय प्रत्ययः (B) क प्रत्ययः
(C) फ प्रत्ययः **(D) छ प्रत्ययः**

412.'वनेचरः' इत्यत्र प्रत्ययः अस्ति-
(A) छ प्रत्ययः **(B) ट प्रत्ययः**
(C) प प्रत्ययः (D) द प्रत्ययः

413. 'प्रवक्तुम्' पदे प्रकृति-प्रत्ययः अस्ति-
(A) प्र + वद् + तुमुन्
(B) प्र + वच् + ल्युट्
(C) प्र + वद् + ल्युट्
(D) प्र + वच् + तुमुन्

414.'प्रणामः' इत्यत्र प्रत्ययः अस्ति-
(A) ल्युट्- प्रत्ययः
(B) क्त- प्रत्ययः
(C) घञ् -प्रत्ययः
(D) शानच् -प्रत्ययः

415. 'शुभ्रम्' इत्यत्र प्रत्ययः अस्ति-
(A) रक्-प्रत्ययः (B) ल्युट्-प्रत्ययः
(C) घञ्-प्रत्ययः (D) क्त-प्रत्ययः

416.'अनुरागः' इत्यत्र प्रकृति-प्रत्ययः अस्ति-
(A) अनु + रञ् + क्त
(B) अनु + रञ्ज् + घञ्
(C) अनु + रञ्ज + क्त
(D) अनु + रञ्ज + सत्

417.'पावकः' इत्यत्र प्रकृति-प्रत्ययः अस्ति-
(A) पू + ल्युट् **(B) पू + ण्वुल्**
(C) पू + क्त (D) पू + घञ्

418.'समुन्नयन्' इत्यत्र प्रकृति-प्रत्ययः अस्ति-
(A) सम् + उद् + नी + शतृ
(B) सम् + उत + नी + शानच्
(C) सम + उत + नी + क्त
(D) सम + उत + नी + ता

419. 'विरोधिनः' इत्यत्र धातुः अस्ति-
(A) रुध् धातुः (B) नी धातुः
(C) कृ धातुः (D) पा धातुः

420. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गे प्रयुक्तः छन्दः अस्ति-
(A) वंशस्थः
(B) मालिनी
(C) पुष्पिताग्रा
(D) उपर्युक्तं सर्वम्

421. वंशस्थस्य लक्षणम् अस्ति-
(A) जरौ जरौ ततो जगौ च
(B) जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ
(C) अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा
(D) ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः

422. मालिनीछन्दसः लक्षणमस्ति-
(A) जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।
(B) उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।
(C) ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।
(D) रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

423. मालिनी छन्दसि यतिः भवति-
(A) 8-7 वर्णे
(B) 9-6 वर्णे
(C) 9-7 वर्णे
(D) 6-9 वर्णे

424. किरातार्जुनीयस्य प्रथमसर्गस्य अन्तिमे श्लोके किं छन्दः अस्ति-
(A) मालिनी (B) वंशस्थः
(C) पुष्पिताग्रा (D) अनुष्टप्

425. भारवेः प्रियच्छन्दः-
(A) इन्द्रवज्रा (B) मालिनी
(C) पुष्पिताग्रा **(D) वंशस्थः**

426. विधिसमयनियोगाद्दीप्तिसंहारजिह्मं, शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ।
इत्यत्र छन्दः अस्ति -
(A) वंशस्थः **(B) मालिनी**
(C) पुष्पिताग्रा (D) उपमालंकारः

427. पुष्पिताग्राछन्दसः लक्षणमस्ति-
(A) अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि च नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा।
(B) ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।
(C) जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।
(D) रसैः रुद्रैश्छिन्ना यमनसभलागः शिखरिणी।

428. 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ, युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः' अत्र अलङ्कारः अस्ति-
(A) यमकः (B) छेकानुप्रासः
(C) वृत्यनुप्रासः (D) श्रुत्यनुप्रासः

429. 'गुणानुरागादिव सख्यमीयिवान्' अस्मिन् श्लोके कः अलंकारः प्रयुक्तः-
(A) निदर्शना
(B) उपमा
(C) रूपकालंकारः
(D) उत्प्रेक्षालंकारः

430. 'उपेत्यसङ्घर्षमिवार्थसम्पदः' अत्र कः अलङ्कारः अस्ति-
(A) उपमालंकारः
(B) काव्यलिङ्गालंकारः
(C) उत्प्रेक्षालंकारः
(D) रूपकालंकारः

431. 'प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः' अत्र अलङ्कारः अस्ति-
(A) उपमालंकारः
(B) श्लेषालंकारः
(C) रूपकालंकारः
(D) उत्प्रेक्षालंकारः

432. स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता। अत्र अलङ्कारः अस्ति-
(A) दृष्टान्तालंकारः
(B) अर्थान्तरन्यासालंकारः
(C) रूपकालंकारः
(D) वृत्यनुप्रासालंकारः

433. परिभ्रमॅल्लोहितचन्दनोचितः, पदातिरन्तर्गिरिरेणुरूषितः। अस्मिन् श्लोके अलङ्कारः-
(A) उपमालंकारः
(B) दृष्टान्तालंकारः
(C) अनुप्रासालंकारः
(D) परिकरालंकारः

434.भारवेः प्रिय-अलङ्कारः -
(A) अर्थान्तरन्यासः (B) रूपकः
(C) श्लेषः (D) उत्प्रेक्षा

435. 'कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः' इत्यत्र 'सपत्नेन' पदस्य अर्थः अस्ति-
(A) सहपत्निकः (B) पत्नीद्वारा
(C) शत्रुणा (D) किमपि न

436. नसंहतास्तस्य नभिन्नवृत्तयः, प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्। इत्यत्र 'असुभिः' पदस्य अर्थः -
(A) असुरैः **(B) प्राणभिः**
(C) यज्ञैः (D) सैनिकैः

437. 'स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः, कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम्' इत्यत्र 'गतस्मयः' पदस्य अस्ति-
(A) ईर्ष्यायुक्तः
(B) स्वाभिमानी
(C) निरभिमानी
(D) अभिमानः

438. 'विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे' इत्यत्र 'आददे' पदस्य अर्थोऽस्ति-
(A) अकथयत् (B) ग्रहणम्
(C) दानम् (D) निश्चयकरणम्

439. क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो, न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः। इत्यत्र 'चारचक्षुषः' पदस्य तात्पर्यमस्ति-
(A) चत्वारि नेत्राणि
(B) चोराणां चक्षुः
(C) चतुरपादः
(D) गुप्तचरस्वरूप इव नेत्रवान्

440. किरातवेषधारिणं भगवन्तं शिवम् एवं तृतीयं पाण्डवम् अर्जुनमभिलक्ष्य कृतं काव्यं किम् अभिधीयते?
(A) शिशुपालवधम्
(B) रघुवंशम्
(C) किरातार्जुनीयम्
(D) नैषधीयचरितम्

441. अर्जुनः महर्षेः व्यासस्य आदेशं प्राप्य पाशुपतास्त्रस्य प्राप्त्यर्थं कुत्र गतवान्-
(A) इन्द्रकीलपर्वतम्
(B) प्रस्रवणपर्वतम्
(C) मलयपर्वतम्
(D) उदयाचलम्

442. युधिष्ठिरादयः पञ्च पाण्डवाः वनवासस्य अवधिं कुत्र व्यतीयुः?
(A) द्वैतवने (B) नन्दनवने
(C) हिमवने (D) हिमालये

443. अर्थगौरवाय कः कविः प्रसिद्धः अस्ति?
(A) कालिदासः (B) भासः
(C) भारविः (D) माघः

444. कस्य महाकाव्यस्य प्रथमं त्रयः सर्गाः 'पाषाणत्रयम्' नाम्ना प्रसिद्धाः?
(A) कुमारसम्भवमहाकाव्यस्य
(B) बुद्धचरितमहाकाव्यस्य
(C) किरातार्जुनीयमहाकाव्यस्य
(D) शिशुपालवधमहाकाव्यस्य

445. 'न नोननुन्नो नुन्नोनोनाना नानानना ननु' इति श्लोकपंक्तौ कविना असाधारणं कौशलं प्रदर्शितम् -
(A) कालिदासेन **(B) भारविना**
(C) अश्वघोषेन (D) श्रीहर्षेण

446. 'स किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपं' इति सूक्तिः किरातार्जुनीयस्य कस्मात् सर्गात् उद्धृता?
(A) द्वितीयसर्गात् (B) चतुर्थसर्गात्
(C) पञ्चमसर्गात् **(D) प्रथमसर्गात्**

447. 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः' इत्यत्र 'वने वनेचरः' पदस्य कोऽलंकारः?
(A) उपमालंकारः
(B) अनुप्रासोऽलंकारः
(C) यमकालंकारः
(D) रूपकालंकारः

448. भगवान् शिवः कं वेषमाधृत्य अर्जुनस्य वीरतायाः परीक्षार्थम् अर्जुनेन सार्धं युद्धमकरोत्?
(A) किरातवेषम् (B) सिंहवेषम्
(C) शशवेषम् (D) गुप्तचरवेषम्

449. 'वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः' इति सूक्तिः कस्मिन् ग्रन्थेऽस्ति-
(A) नीतिशतके
(B) किरातार्जुनीये
(C) कुमारसम्भवे
(D) पञ्चतन्त्रे

450. युधिष्ठिरः स्वाश्रमात् वनेचरं दुर्योधनस्य शासनपद्धतिं वेदितुं कुत्र प्रेषयति–
(A) अयोध्याम् **(B) हस्तिनापुरम्**
(C) कुरुक्षेत्रम् (D) न कुत्राऽपि

451. दुर्योधनेन केन प्रकारेण सर्वप्रजाजनाः स्ववशं कर्तुमिच्छति।
(A) स्वबलेन
(B) उत्तमशासनपद्धत्या
(C) प्रलोभनेन
(D) अहंकारेण

452. 'दामोदरः' इति नाम्ना प्रख्यातोऽभवत्?
(A) भारविः (B) कालिदासः
(C) नारायणः (D) भवभूतिः

453.'वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः' इत्यत्र दुर्योधनस्य कस्य गुणस्य उल्लेखः वर्तते-

(A) अहंकारस्य
(B) दण्डनीतेः न्यायप्रियतायाः च
(C) सत्याचरणस्य
(D) अनाचारस्य

454.'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' इत्यत्र वनेचरः कस्य भयं वर्णयति-

(A) युधिष्ठिरस्य
(B) भीमस्य
(C) द्रौपद्याः
(D) दुर्योधनस्य

455. 'तवाभिधानाद् व्यथते नताननः, स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः' इत्यत्र 'उरगः' पदस्य प्रयोगः कस्य कृते अस्ति-

(A) सुयोधनस्य
(B) धर्मराजस्य
(C) भीमसेनस्य
(D) अर्जुनस्य

456. 'सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः' इदं केन कथितम् -

(A) द्रौपद्या **(B) वनेचरेण**
(C) दुर्योधनेन (D) युधिष्ठिरेण

457. ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यती, अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' कस्य विषये कथितम् -

(A) दुर्योधनस्य विषये
(B) वनेचरस्य विषये
(C) युधिष्ठिरस्य विषये
(D) दुःशासनस्य विषये

458. 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' इति कस्योक्तिः ?

(A) वनेचरस्य
(B) दुर्योधनस्य
(C) द्रौपद्याः
(D) युधिष्ठिरस्य

459. 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्तनारीसमया दुराधयः' कस्मिन् ग्रन्थे समुपलभ्यते-

(A) मेघदूते
(B) किरातार्जुनीये
(C) नीतिशतके
(D) शिवराजविजये

460. 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः' पद्येऽस्मिन् 'वर्णिलिङ्गी' शब्दः कस्य बोधकः अस्ति-

(A) वनेचरस्य
(B) अर्जुनस्य
(C) युधिष्ठिरस्य
(D) भीमस्य

6. परीक्षा दृष्टि

किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण

☞ किरातार्जुनीयम् में ''श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्'' इस वंशस्थ छन्द के द्वारा वस्तुनिर्देशात्मक मङ्गलाचरण किया गया है।

☞ संस्कृतग्रन्थों के आरम्भ, मध्य और अन्त में मङ्गलाचरण करने की परम्परा रही है। 'ग्रन्थादौ ग्रन्थमध्ये ग्रन्थान्ते च मङ्गलमाचरणीयम् '

☞ संस्कृतशास्त्रों में मङ्गलाचरण के तीन प्रकार बताये गए हैं-

(1) नमस्कारात्मक

(2) आशीर्वादात्मक

(3) वस्तुनिर्देशात्मक *'आशीर्नमस्क्रियावस्तुनिर्देशो वापि तन्मुखम्''* इति दण्डी।

☞ मङ्गलाचरण का उद्देश्य बताते हुए महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य में कहते हैं- 'मङ्गलादीनि मङ्गलमध्यानि मङ्गलान्तानि च शास्त्राणि प्रथन्ते वीरपुरुषकाणि आयुष्मत्पुरुषकाणि च भवन्ति अध्येतारश्च प्रवक्तारो भवन्ति''

☞ भारवि ने किरातार्जुनीयम् के प्रथमश्लोक में सर्वप्रथम 'श्रियः' शब्द का प्रयोग किया है, जो कि मङ्गलवाचक है। मल्लिनाथ घण्टापथ नामक टीका में लिखते हैं- *''आदितः श्रीशब्दप्रयोगात् वर्णगणादिशुद्धिर्नात्रातीवोपयुज्यते''*

☞ भारवि किसके उपासक थे– **शिव**

☞ अर्थगौरव के लिए प्रसिद्ध हैं– **भारवि**

☞ भारवि का वास्तविक नाम था– **दामोदर**

☞ 'आतपत्र' किस कवि की उपाधि है– **भारवि**

☞ भारवि का समय विद्वानों ने क्या माना है– **600 ई0 के आस पास**

☞ भारवि का आश्रयदाता राजा था– **पुलकेशिन् का भाई विष्णुवर्धन**

☞ भारवि का जन्म स्थान है– **दक्षिणभारत का अचलपुर**

☞ अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार भारवि रहने वाले थे– **दक्षिण भारत के**

☞ भारवि के बाद किसका समय माना जाता है– **माघ का**

☞ भारवि पूर्ववर्ती कवि माने जाते हैं– **श्रीहर्ष के**

☞ भारवि के पिता का नाम– **श्रीधर**

☞ भारवि के पूर्ववर्ती कवि कौन हैं– **अश्वघोष**

☞ भारवि किससे प्रभावित थे– **कालिदास**
☞ महाकवि भारवि ने कुल कितने ग्रन्थों की रचना की है– **एक (1)**
☞ "भारवेरिव भारवेः" भारवि के सम्बन्ध में किसने कहा है– **कपिलदेव द्विवेदी ने**
☞ भारवि का सम्बन्ध किससे नहीं है– **लघुत्त्रयी से**
☞ किस पाश्चात्त्य विद्वान् ने भारवि के किरातार्जुनीयम् की भूरि-भूरि प्रशंसा की है– **डॉ० ए०बी०कीथ**
☞ संस्कृत साहित्य में 'अलङ्कृतकाव्यशैली' तथा विचित्रमार्ग के जनक के रूप में किस कवि का नाम उल्लेखनीय है– **भारवि**
☞ अवन्तिसुन्दरीकथा के अनुसार भारवि के पिता का नाम है– **नारायणस्वामी**
☞ किस महाकवि के साथ भारवि का पारिवारिक सम्बन्ध माना जाता है– **दण्डी**
☞ भारवि की माता का नाम– **सुशीला**
☞ 'प्रसन्नगम्भीरपदा सरस्वती' यह किस कवि की भाषा शैली की विशेषता रही है– **भारवि की**
☞ कालिदास के साथ भारवि का नामोल्लेख किस अभिलेख में मिलता है– **ऐहोल**
☞ भारवि किसके सभापण्डित थे– **विष्णुवर्धन**
☞ भारवि के प्रपौत्र माने जाते हैं– **दण्डी**
☞ भारवि की पत्नी का नाम है– **रसिका**
☞ किरातार्जुनीयम् की रचना भारवि ने की थी– **ससुराल में रहकर**
☞ भारवि प्रकाण्ड पण्डित थे– **राजनीति के**
☞ भारवि किस रस के वर्णन में अद्वितीय थे– **वीर**
☞ भारवि किस रीति के कवि थे– **वैदर्भी**
☞ भारवि का समय है– **6वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध**
☞ मनोरथ किसके पुत्र हैं– **भारवि**
☞ "वर्णिलिङ्गी" पद में समास है– **षष्ठी तत्पुरुष**
☞ किरात के किस सर्ग के आधार पर भारवि को आतपत्र की उपाधि प्राप्त हुई– **पञ्चम सर्ग**
☞ एकाक्षरी श्लोक के लिए कौन कवि प्रसिद्ध है– **भारवि**
☞ महाकाव्य में चित्रकाव्य के प्रथम प्रयोगकर्ता हैं– **भारवि**
☞ भारवि किस गोत्र के थे– **कुशिक**
☞ भारवि के पुत्र थे– **मनोरथ**
☞ भारवि का प्रिय अलंकार है– **अर्थान्तरन्यास**

☞ अर्थगौरवसम्पन्नकाव्यं किं नाम भारवेः– **किरातार्जुनीयम्**
☞ वीरदत्त एवं गौरी के पुत्र का नाम– **दण्डी**
☞ भारवि दण्डी के हैं– **प्रपितामह**
☞ पल्लव नरेश सिंहविष्णु का शासन काल है– **575-600**
☞ पापत्राण के लिए तीर्थयात्रा पर जाते समय मार्ग में भारवि की भेंट हुई– **दुर्विनीत से**
☞ राजा दुर्विनीत को भारवि ने सुनाया– **आर्या**
☞ महाकवि भारवि की शैली है– **अलङ्कार शैली**
☞ किरातार्जुनीयम् में कितने सर्ग हैं– **(18)**
☞ किरातार्जुनीयम् मङ्गलाचरण में छन्द प्रयुक्त है– **वंशस्थ**
☞ किरातार्जुनीयम् का कथानक लिया गया है– **महाभारत के वनपर्व से**
☞ किरातार्जुनीयम् के प्रत्येक सर्ग के अन्त में कौन-सा शब्द प्रयुक्त हुआ है– **लक्ष्मी**
☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में कुल कितने श्लोक हैं– **46**
☞ किरातार्जुनीयम् का मुख्य रस है– **वीररस**
☞ किरातार्जुनीयम् किस विधा का ग्रन्थ है– **महाकाव्य**
☞ किरातार्जुनीयम् का नायक कौन है– **अर्जुन**
☞ किरातार्जुनीयम् महाकाव्य में कुल श्लोकों की संख्या– **1040**
☞ किरातार्जुनीयम् निबद्ध है– **सर्गों में**
☞ केवल एक ग्रन्थ लिखने वाले महाकवि हैं– **भारवि**
☞ किरातार्जुनीयम् के प्रारम्भिक तीन सर्गों को कहा जाता है– **पाषाणत्रय**
☞ 'किरातार्जुनीयम्' इस पद में कौन-सा प्रत्यय है– **छ प्रत्यय (शिशुक्रन्दयमसभद्वन्द्वेन्द्रजननादिभ्यश्छ)**
☞ किरातार्जुनीयम् में समास है– **द्वन्द्व**
☞ किसकी गणना बृहत्त्रयी काव्यों में होती है– **किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम्, नैषधीयचरितम् की**
☞ किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण है– **वस्तुनिर्देशात्मक**
☞ महाकाव्य में न्यूनातिन्यून कितने सर्ग होने चाहिए– **(8)**
☞ भारवि के काव्य में किस अलंकार की प्रमुखता है– **चित्रालंकार**
☞ किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का फल है– **पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति**
☞ किरात के प्रथम सर्ग में किस रीति का प्रयोग है– **वैदर्भी रीति**
☞ 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य किस पर आधारित है– **महाभारत**
☞ 'स्फुटता न पदैरपाकृता न च न स्वीकृतमर्थगौरवम्' किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है– **किरातार्जुनीयम् से**

☞ महाभारत पर आधारित ग्रन्थ है– **किरातार्जुनीयम्**
☞ किरातार्जुनीयम् का प्रथम पद्य किस छन्द में है– **वंशस्थ**
☞ किरातार्जुनीयम् में किरात है– **शिव**
☞ किरातार्जुनीयम् में किस विषय का चमत्कारित्व है– **अर्थगौरव**
☞ अर्जुन किसमें नायक के रूप में वर्णित हैं– **किरातार्जुनीयम् में**
☞ मल्लिनाथविरचितं किरातार्जुनीयस्य व्याख्यानं किम्– **घण्टापथ**
☞ भारवि काव्य की विशेषता है – **अर्थगौरव**
☞ महाराज दुर्विनीत ने किरातार्जुनीयम् की टीका लिखी है– **15वें सर्ग की**
☞ दुर्विनीत द्वारा किरात (सर्ग 15) की टीका का नाम है–
☞ श्रीकृष्णमाचारियर महोदय के अनुसार किरात की कुल कितनी टीकाएँ हैं– **34**
☞ किरात की सर्वप्रामाणिक टीका किसकी है– **मल्लिनाथ की**
☞ बृहत्त्रयी में प्रथम स्थान है– **भारवि काव्य (किरातार्जुनीयम् का)**
☞ किरात की टीका 'सुबोध' लिखी है– **भरतसेन**
☞ 'नारिकेलफलसम्मितं वचो भारवेः' कथन किसका है– **आचार्य मल्लिनाथ**
☞ महाकवि भारवि की कथा पर प्रभाव है– **कालिदास का**
☞ भारविकाव्य का प्रभाव किस कवि पर दिखाई देता है– **माघ पर**
☞ किरातार्जुनीयम् का पात्र है– **वनेचर**
☞ किरात के प्रथम तीन सर्गों पर लिखी गई लोकप्रिय टीका 'शब्दार्थदीपिका' के प्रणेता हैं– **चित्रभानु**
☞ 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' यह किस कवि का प्रिय श्लोक है– **भारवि**
☞ ''न नोननुन्नो नुन्नो नो नानानाना नना ननु'' यह श्लोक किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है– **भारवि के किरातार्जुनीयम् से**
☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग के अन्तिम श्लोक में छन्द है– **मालिनी**
☞ पाण्डव वन में कितने वर्ष तक रहे – **13 वर्ष**
☞ पाण्डवों को अज्ञातवास करना पड़ा– **01 वर्ष**
☞ पाण्डवों ने वनवास काल में निवास किया था– **द्वैतवन में**
☞ द्रौपदी युधिष्ठिर को किसके प्रति उकसाती है– **दुर्योधन के प्रति**
☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथम सर्ग में किस नारी का उदात्त चरित्र वर्णन है– **द्रौपदी का**
☞ किरातार्जुनीयम् में किरात शब्द किसका बोधक है– **शिव**
☞ किरातार्जुनीयम् में अर्जुन को शिव से कौन-सा अस्त्र प्राप्त हुआ था– **पाशुपतास्त्र**
☞ अर्जुन ने किस पर्वत पर तपस्या की– **इन्द्रकील**
☞ किरातार्जुनीयम् के अनुसार अर्जुन ने इन्द्रकील पर्वत पर किस अस्त्र की प्राप्ति के लिये तपस्या की– **पाशुपतास्त्र की**

- ☞ द्रुपदात्मजा, वृकोदर, सुयोधन, वनेचर आदि पात्रों से युक्त रचना है– **किरातार्जुनीयम्**
- ☞ मल्लिनाथ का उपनाम है– **कोलाचल**
- ☞ किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग में अर्जुन को पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति का वर्णन है– **18वें सर्ग में**
- ☞ मल्लिनाथ की टीका 'घण्टापथ' का शाब्दिक अर्थ है– **राजमार्ग ('घण्टापथो राजमार्गः' इत्यमरः)**
- ☞ अर्जुन को गाण्डीव धनुष किसने दिया था– **अग्नि ने**
- ☞ अर्जुन के गुरु कौन थे– **द्रोण**
- ☞ 'किरातार्जुनीयम्' महाकाव्य का सहनायक है– **किरात (शिव)**
- ☞ 'भारवेरर्थगौरवम्' यह कथन है– **उद्भट का**
- ☞ ''नारिकेलफलसम्मितं वचः'' सूक्ति किसने कहा है– **मल्लिनाथ ने**
- ☞ 'किरातार्जुनीयम्' में कौन से सर्ग में इन्द्रकील पर्वत का वर्णन है– **पाँचवें सर्ग में**
- ☞ किरातार्जुनीयम् के पाषाणत्रय पर शब्दार्थदीपिका नामक टीका किसने लिखा है– **चित्रभानु ने**
- ☞ युधिष्ठिर नायकों की किस कोटि में आते हैं– **धीरोदात्त**
- ☞ 'सहसा विदधीत न क्रियाम्' यह किस कवि का प्रिय श्लोक है– **भारवि का**
- ☞ जगण, तगण, जगण, रगण, किस छन्द का लक्षण है– **वंशस्थ**
- ☞ युधिष्ठिर भीम का संवाद तथा व्यास का आगमन किरातार्जुनीयम् के किस सर्ग में वर्णित है– **सर्ग-2**
- ☞ 'लक्ष्मीपदाङ्क' महाकाव्य कहा जाता है– **किरातार्जुनीयम् को**
- ☞ 'सुदुर्लभा सर्वमनोरमा गिरः' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है– **किरातार्जुनीयम् से**
- ☞ इन्द्रकील पर्वत पर जाते हुए अर्जुन किसकी शोभा देखने में अत्यन्त मग्न हो गये थे– **शरत्कालीन शोभा**
- ☞ 'काशिकावृत्ति' जिसमें किरातार्जुनीयम् का 'संशय्य कर्णादिषु तिष्ठतेयः' श्लोक उद्धृत है, किसकी रचना है– **जयादित्य**
- ☞ चालुक्यवंशीय पुलकेशिन् द्वितीय का ऐहोल शिलालेख जिसमें भारवि का नामोल्लेख है, कहाँ मिलता है– **बीजापुर**
- ☞ ऐहोल अभिलेख जो जैन मन्दिर से प्राप्त हुआ है किसके द्वारा रचित है– **रविकीर्ति**
- ☞ 'कविताश्रितश्रीकालिदासभारविकीर्तिः' कथन है– **रविकीर्ति**
- ☞ 'सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्' श्लोकांश को लेकर भारवि की पत्नी गई थी– **वर्धमान की पत्नी के पास**
- ☞ 'नामूलं लिख्यते किञ्चिन्नानपेक्षितमुच्यते' कथन किसका है– **मल्लिनाथ का**
- ☞ 'वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि' इति कस्योक्तिः– **भारवेः**

- ☞ वंशस्थ छन्द के प्रत्येक पाद में वर्ण होते हैं– **12**
- ☞ 'न्यायाधारा ही साधवः' का अर्थ है– **सज्जन न्यायमार्ग का ही आश्रय लेते हैं।**
- ☞ भीम किसके पुत्र हैं– **वायु के**
- ☞ 'नहि तितिक्षासममस्ति साधनम्' इदं वाक्यमस्ति?– **किरातार्जुनीये**
- ☞ किरातार्जुनीयस्य कः पाकः प्रथितः– **नारिकेलपाकः**
- ☞ 'वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः' यह उक्ति कहाँ प्राप्त होती है– **किरातार्जुनीयम्**
- ☞ अवन्तिसुन्दरीकथा रचना है– **दण्डी की**
- ☞ दण्डी की रचना है– **दशकुमारचरितम् तथा काव्यादर्श**
- ☞ महेन्द्र विक्रम की शासन अवधि है– **600-625**
- ☞ महेन्द्रवर्मन् की उपाधि है– **शतुमल्ल, अवविभाजन**
- ☞ महेन्द्रवर्मन् की रचना है– **मत्तविलास, प्रहसन**
- ☞ महाराज दुर्विनीत के पिता का नाम था– **अविनीत**
- ☞ बृहत्कथा के संस्कृत रूपान्तर 'शब्दावतार' के लेखक हैं– **दुर्विनीत**
- ☞ एहोल शिलालेख का समय है– **634 ई.**
- ☞ एहोल नाम का स्थान स्थित है– **बीजापुर**
- ☞ एहोल शिलालेख का लेखक रविकीर्ति हैं– **जैनकवि**
- ☞ आचार्य मल्लिनाथ का गोत्र है– **काश्यप**
- ☞ आचार्य मल्लिनाथ के पितामह का नाम था– **कर्दिन**
- ☞ मल्लिनाथ एवं कर्दिन का सम्बन्ध है– **पुत्र-पिता**
- ☞ आचार्य मल्लिनाथ का पुत्र है– **पेड्डुभट्ट तथा कुमारस्वामी**
- ☞ काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ प्रतापरुद्रयशोभूषणम् पर टीका लिखी है– **कुमारस्वामी ने**
- ☞ आचार्य मल्लिनाथ की व्यक्तिगत उपाधि है– **महामहोपाध्याय**
- ☞ आचार्य मल्लिनाथ का समय है– **14वीं शताब्दी**
- ☞ आचार्य मल्लिनाथ का पवित्र ग्रन्थ है– **उदारकाव्य, रघुवीरचरित**
- ☞ शूकर के रूप में अर्जुन पर आक्रमण किया– **मूकदानव ने**
- ☞ आचार्य मल्लिनाथ ने संजीवनी नामक टीका लिखी है– **कुमारसम्भवम्, रघुवंशम्, मेघदूतम् पर**
- ☞ आचार्य मल्लिनाथ ने शिशुपालवधम् पर टीका लिखी है– **सर्वङ्कषा**
- ☞ आचार्य मल्लिनाथ ने 'जीवातु' टीका लिखी है– **नैषधीयचरितम् तथा रावणवधम् दोनों पर**

☞ किरातार्जुनीयम् मङ्गलाचरण में छन्द प्रयुक्त है - **वंशस्थ**
☞ 'वर्णिलिङ्गी' से किसका बोध हो रहा है - **वनेचर का**
☞ वनेचर हस्तिनापुर से लौटकर युधिष्ठिर से कहाँ मिला - **द्वैतवन में**
☞ वनेचर हस्तिनापुर किस वेष में गया - **ब्रह्मचारी के वेश में।**
☞ वनेचर हस्तिनापुर का समाचार जानकर किसके पास आता है– **युधिष्ठिर के पास**
☞ किरातार्जुनीयम् का प्रारम्भ किस पद से होता है – **श्रियः**
☞ 'कुरूणामधिपः' पद से किसका बोध होता है – **सुयोधन (दुर्योधन) का**
☞ 'वनेचर' किस ग्रन्थ का पात्र है – **किरातार्जुनीयम् का**
☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग का आरम्भिक वक्ता है – **वनेचर**
☞ 'वनेचरः' में कौन सा प्रत्यय है – **'चरेष्टः' सूत्र से 'ट' प्रत्यय**
☞ वनेचर में हस्तिनापुर का समाचार सर्वप्रथम किससे कहा– **युधिष्ठिर से**
☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग के आधार पर पाण्डव कहाँ निवास कर रहे थे **– द्वैतवन में**
☞ किरातार्जुनीयम् के प्रथमसर्ग में प्रयुक्त छन्द में प्रयुक्त गण हैं **– जगण तगण जगण रगण (जतौ जरौ)**
☞ 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' यह श्लोकांश कहाँ से उद्धृत है – **किरातार्जुनीयम् से**
☞ 'स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ' यहाँ 'सः' पद से किसका बोध हो रहा है – **वनेचर का**
☞ 'समाययौ' में कौन सा लकार है – **लिट्लकार**
☞ 'अयुङ्क्त' पद की व्याकरणात्मक टिप्पणी लिखें – **युज्, धातु, लङ्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन**
☞ 'श्रियः' में कौन सी विभक्ति है– **षष्ठी विभक्ति**
☞ वर्णिलिङ्गी कौन था – **वनेचर**
☞ दुर्योधन की शासनव्यवस्था जानने के लिए हस्तिनापुर किसे भेजा गया था – **वनेचर को**
☞ 'युधिष्ठिर' पद में स् को ष् किस सूत्र से हुआ है – **गवियुधिभ्यां स्थिरः**
☞ वनेचर पद के 'वने' पद में सप्तमी विभक्ति का अलुक् हुआ है – **'तत्पुरुषे कृति बहुलम्'**
☞ वनेचर का शाब्दिक अर्थ होगा – **वने चरति इति=वनेचरः**
☞ किरातार्जुनीयम् का मङ्गलाचरण है – **वस्तुनिर्देशात्मक**
☞ 'प्रजासु वृत्तिं यमयुङ्क्त वेदितुम्' में 'यम्' पद से किसका बोध होता है– **वनेचर का**
☞ किरातार्जुनीयम् प्रथम सर्ग में प्रमुखता से प्रयुक्त छन्द हैं–**वंशस्थ, पुष्पिताग्रा, मालिनी**

- ☞ 'वर्णिलिङ्गी' पद में समास है – **षष्ठीतत्पुरुष**
- ☞ 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' में 'श्रियः' पद में विभक्ति है–**षष्ठी**
- ☞ 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीम्' में 'श्रियः' से तात्पर्य है – **राजलक्ष्मी**
- ☞ 'वनेचरः' में समास है – **अलुक् तत्पुरुष**
- ☞ 'द्वैतवने वनेचरः' में अलंकार है – **वृत्त्यनुप्रास**
- ☞ 'युधिष्ठिरम्' पद में समास है – **सप्तमी अलुक् तत्पुरुष**
- ☞ ''न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः'' यह सूक्ति किस ग्रन्थ से उद्धृत है –**किरातार्जुनीयम् से**
- ☞ ''कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे'' यहाँ 'महीभुजे' पद में विभक्ति है– **चतुर्थी**
- ☞ 'महीभुज्' में प्रत्यय है – **क्विँप्**
- ☞ ''हितैषिणः प्रियं प्रवक्तुं न इच्छन्ति'' यह कथन किसका किससे है –**वनेचर का युधिष्ठिर से**
- ☞ ''न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं'' यह कथन किसके लिए आया है – **वनेचर**
- ☞ 'न विव्यथे तस्य मनः' यहाँ 'विव्यथे' पद में धातु है – **व्यथ् धातु है**
- ☞ 'कृतप्रणामः' में कौन-सा समास है – **बहुव्रीहि**
- ☞ 'प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः' अत्र अलङ्कारः कः – **अर्थान्तरन्यासालङ्कारः**
- ☞ 'महीभुजे' में कौन-सी विभक्ति है – **चतुर्थी**
- ☞ हस्तिनापुर से लौटकर वनेचर ने किसे प्रणाम किया – **युधिष्ठिर को**
- ☞ शत्रुओं द्वारा जीती गई पृथ्वी के वृत्तान्त का वर्णन करते हुए किसका मन दुःखी नहीं हुआ – **वनेचर का**
- ☞ कौन लोग मिथ्या एवं प्रिय नहीं बोलना चाहते –**हिताभिलाषी**
- ☞ शत्रुओं के नाश के लिए कार्य करने की इच्छा वाला राजा कौन है – **युधिष्ठिर**
- ☞ वनेचर ने युधिष्ठिर से हस्तिनापुर का वृत्तान्त बताया – **एकान्त में**
- ☞ 'कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः' में 'सपत्नेन' पद का अर्थ है – **शत्रु द्वारा**
- ☞ 'प्रवक्तुम्' पद में उपसर्ग, धातु एवं प्रत्यय है –**प्र + वच् + तुमुन्**
- ☞ 'प्रणामः' पद में प्रयुक्त प्रत्यय है – **घञ्**
- ☞ ''विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे'' यह वाक्य किसके लिये प्रयुक्त है– **वनेचर के लिये**
- ☞ ''द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतः'' के 'विघाताय' पद में धातु है– **हन्**
- ☞ 'आददे' में लकार है – **लिँट्**
- ☞ 'रहसि' शब्द में विभक्ति है – **सप्तमी**

☞ 'स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे' में 'स' पद किसके लिए आया है – **वनेचर**

☞ 'रहसि' पद में प्रकृति प्रत्यय है – **रह् + असुँन्**

☞ 'विघाताय' में कौन-सी धातु प्रयुक्त है – **हन् धातु**

☞ वनेचर ने युधिष्ठिर से हस्तिनापुर का वृत्तान्त बताया – **एकान्त में**

☞ 'विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे' में 'आददे' पद का अर्थ है – **कहा**

☞ ''वञ्चनीयाः'' पद में प्रत्यय है – **अनीयर्**

☞ ''अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा'' में कौन किससे क्षमायाचना कर रहा है – **वनेचर युधिष्ठिर से**

☞ 'न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः' यह कथन है – **वनेचर का युधिष्ठिर से**

☞ 'हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः' यह सूक्ति कहाँ की है– **किरातार्जुनीयम् की**

☞ राजाओं का नेत्र होता है – **गुप्तचर**

☞ ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' उक्ति है – **वनेचरस्य**

☞ ''हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः'' यह उक्ति किसकी है? – **भारवि की**

☞ किस प्रकार के वचन दुर्लभ होते हैं – **हितकारी और मनोहारी**

☞ 'स किंसखा साधु न शास्ति योऽधिपम्' इसे किसने कहा – **वनेचर ने**

☞ 'शास्ति' में लकार, पुरुष और वचन है – **लँट्लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन**

☞ सम्पदाएँ सदा अनुराग करती हैं– **राजा और मंत्री के परस्पर अनुकूल होने पर**

☞ राजा और मन्त्री के अनुकूल रहने पर अनुराग करती हैं – **सर्वसम्पत्तियाँ**

☞ 'शास्ति' धातु है – **द्विकर्मक**

☞ 'सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं, नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः' यह किसके द्वारा कहा गया है – **वनेचर के द्वारा**

☞ जो राजा को उचित परामर्श नहीं देता वह नहीं है – **मंत्री**

☞ जो हितकारी बातों को नहीं सुनता वह नहीं है – **राजा**

☞ 'निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्' यह उक्ति किसकी है –**वनेचर की**

☞ ''तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया'' यहाँ 'अवेदि' पद में लकार है –**लुँङ्लकार**

☞ राजाओं का आचरण कैसा होता है –**स्वभाव से दुर्बोध**

☞ किसका चरित्र कष्टपूर्वक समझ में आने वाला है –**राजाओं का**

☞ 'अबोधविक्लव' कौन है –**वनेचर**

☞ राजाओं का स्वभाव होता है – **दुर्विज्ञेय**

☞ दुर्योधन की नीतियों को समझ लेने का श्रेय वनेचर ने किसको दिया – **युधिष्ठिर को**

☞ 'अनुभावः' पद में समास है – **प्रादितत्पुरुष**

☞ किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन को कहा गया है – **सुयोधनः**

☞ ''विशङ्कमानो भवतः पराभवम्'' यहाँ विशङ्कमानः पद में प्रत्यय है– **शानच्**

☞ ''विशङ्कमानो भवतः पराभवम्'' यहाँ 'भवतः' से बोध होता है– **युधिष्ठिर**

☞ दुर्योधन कब भयभीत हो जाता है – **युधिष्ठिर का नाम सुनकर**

☞ वन में निवास करने वाले युधिष्ठिर से पराजय की आशंका करता है– **दुर्योधन**

☞ दुर्योधन ने युधिष्ठिर से पृथ्वी जीत ली थी – **जुए में**

☞ 'नृपासनस्थः' एवं 'वनाधिवासिनः' पद क्रमशः किसका विशेषण है–**दुर्योधन, युधिष्ठिर**

☞ छल से जीती गई पृथ्वी को नीति से कौन जीतना चाहता है – **दुर्योधन**

☞ 'दुरोदरच्छद्मजितां समीहते' में 'छद्म' पद का तात्पर्य है – **छल**

☞ 'वनाधिवासिनः' पद का सामासिक विग्रह है – **वनम् अधिवसति इति**

☞ 'सुयोधनः' पद में समास है – **उपपद तत्पुरुषसमास**

☞ 'जिह्मः' में प्रकृति-प्रत्यय है – **हा + मनिन्**

☞ 'भवज्जिगीषया' पद में समास है – **षष्ठीतत्पुरुष**

☞ ''तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः'' यह किसके लिए कहा गया है – **सुयोधन**

☞ 'वरं विरोधोऽपि------------महात्मभिः' रिक्तस्थान की पूर्ति करें – **समम्**

☞ दुर्योधन अपने निर्मलयश को फैला रहा है – **गुणसम्पत्ति के द्वारा**

☞ दुष्टों के साथ मित्रता से अच्छा है – **महात्माओं से शत्रुता**

☞ 'शुभ्रम्' पद में प्रत्यय बताइए – **रक्**

☞ 'समुन्नयन्' पद में उपसर्ग, धातु एवं प्रत्यय बताइए– **सम् + उद् + नी + शतृँ**

☞ 'विरोधिनः' पद में धातु है – **रुध्**

☞ वनेचर के अनुसार किसने अपने छः शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली–**दुर्योधन ने।**

☞ ''नक्तं च दिवा च'' इस समास विग्रह से सामासिक पद होगा–**नक्तन्दिवम्।**

☞ 'कृतारिषड्वर्गजयेन' यहाँ षड्वर्ग से तात्पर्य है– **काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर।**

- ☞ मनुवादी मार्ग का अनुसरण करता है – **दुर्योधन**
- ☞ दुर्योधन के लिए प्रयुक्त अस्ततन्द्रिणा पद का अर्थ है– **आलस्यरहित।**
- ☞ रात और दिन को अच्छी तरह बाँटकर अपने पौरुष को कौन बढ़ा रहा है– **दुर्योधन।**
- ☞ 'वितन्यते' पद में प्रकृति-प्रत्यय बताइए – **वि + तन् + यक् + त ।**
- ☞ 'गतस्मयः सः' में 'सः' पद किसके लिए आया है – **सुयोधन**
- ☞ गर्वहीन दुर्योधन अपने सेवकों से व्यवहार करता है – **मित्र जैसा**
- ☞ गर्वहीन दुर्योधन का व्यवहार मित्रों के साथ है – **बन्धुवत्**
- ☞ 'गतस्मयः' पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है – **दुर्योधन**
- ☞ दुर्योधन स्वामी जैसा सम्मान किसे दे रहा है – **भाइयों को**
- ☞ ''स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम्''– पंक्ति में प्रयुक्त अलङ्कार है – **रशनोपमा**
- ☞ 'गतस्मयः' का अर्थ है – **निरभिमानी**
- ☞ त्रिगण किसको परस्पर बाधा नहीं डालते – **दुर्योधन को**
- ☞ ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' श्लोकांश में 'त्रिगणः' से क्या तात्पर्य है – **धर्म, अर्थ, काम**
- ☞ किरातार्जुनीयम् के 'त्रिगणः' पद में परिगणित नहीं है – **मोक्ष**
- ☞ ''न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्'' में 'अस्य' पद बोधक है – **दुर्योधन का**
- ☞ 'गुणानुरागादिव सख्यमीयिवान्' इस पंक्ति में अलङ्कार बताइए – **उत्प्रेक्षा**
- ☞ 'अनुरागः' पद में उपसर्ग, धातु, प्रत्यय है – **अनु + रञ्ज + घञ्**
- ☞ दुर्योधन की वाणी है – **दानयुक्त**
- ☞ दुर्योधन का दानयुक्त है – **सत्कार से**
- ☞ दुर्योधन द्वारा किया जानेवाला सत्कार किसके बिना नहीं होता –**गुणों के प्रति अनुराग के बिना**
- ☞ 'न भूरिदानं विरहय्य सत्क्रियाम्' में 'विरहय्य' पद का अर्थ है – **छोड़कर**
- ☞ 'निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्' किसके लिये कहा गया है – **दुर्योधन के लिए**
- ☞ ''वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना'' में 'वशी' पद का प्रयोग हुआ है–**दुर्योधन के लिए**
- ☞ दुर्योधन गुरुजनों द्वारा बताए गये विधान से किसके विषय में धर्मविप्लव को रोकता है – **शत्रुओं और पुत्रों**
- ☞ 'स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः'– इस पंक्ति में 'निवृत्तकारणः' का अर्थ है– **कारणरहित**

☞ ''अशंकिताकारमुपैति शङ्कितः'' यह कथन किसका है – **वनेचर का**

☞ 'विधाय रक्षान् परितः परेतरान्' पंक्ति से वनेचर किसका वर्णन करता है – **दुर्योधन की भेदनीति का**

☞ दुर्योधन ने अपना रक्षक किसे नियुक्त किया – **शत्रुओं के शत्रु को**

☞ दुर्योधन को पराजय की आशङ्का है – **युधिष्ठिर से**

☞ 'अनारतं तेन पदेषु लम्भिता' में 'पदेषु' पद से तात्पर्य है– **कार्यों से**

☞ 'फलन्त्युपायाः परिबृंहितायतीः' में 'उपाय' पद से तात्पर्य है– **साम, दान, दण्ड, भेद**

☞ 'उपेत्यसङ्घर्षमिवार्थसम्पदः' में अलङ्कार है – **उत्प्रेक्षा**

☞ 'अयुग्मच्छदगन्धिः' का अर्थ क्या है – **सप्तपर्ण वृक्ष के पुष्प की गन्ध**

☞ 'तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्' में 'तदीयम्' से ग्रहण होता है – **दुर्योधन का**

☞ राजाओं द्वारा दिये गये हाथियों के मदजल की सुगन्ध कैसी थी –**सप्तपर्ण के पुष्प की तरह**

☞ दुर्योधन के सभाभवन का प्राङ्गण गीला होता है – **हाथियों के मदजल से**

☞ जो देश वर्षा पर निर्भर नहीं रहते हैं उन्हें कहा जाता है – **अदेवमातृक**

☞ 'कृषीवलैः' का अर्थ है – **किसानों द्वारा**

☞ दुर्योधन कुरु की प्रजा को प्रसन्न करने के लिए जो विशेष व्यवस्था करता है वह सम्बन्धित है – **सिंचाई व्यवस्था को उन्नत करने से**

☞ ''चिराय तस्मिन् कुरवः चकासति'' यहाँ 'चकासति' पद में लकार है – **लँट् प्र0पु0 बहुवचन**

☞ 'चिराय तस्मिन् कुरवः चकासति' क्रियापद में कौन-सी धातु है – **चकासृँ दीप्तौ धातु**

☞ दुर्योधन ने अपने राज्य में किसानों की सुविधा के लिए किया – **नदी, नहर, कुओं का निर्माण**

☞ 'वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी'यहाँ 'वसूपमानस्य'पद से किसका संकेत है–**दुर्योधन का**

☞ 'वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी' में किसके गुणों की प्रशंसा की गई है– **दुर्योधन के**

☞ पृथ्वी के लिए प्रयुक्त पद है – **मेदिनी**

☞ किरातार्जुनीयम् में 'उदारकीर्तेः' विशेषण किसके लिए है – **दुर्योधन के लिए**

☞ 'उदारकीर्तेरुदयं दयावतः' में 'दयावतः' पद का प्रयोग हुआ है– **दुर्योधन के लिए**

☞ दुर्योधन के अन्दर आने वाले गुणों का समावेश हुआ–**युधिष्ठिर से विरोध के कारण**

- ☞ किसके गुणों से द्रवीभूत होकर पृथ्वी स्वयं सम्पदा बरसाती है– **दुर्योधन के**
- ☞ 'महौजसो मानधनाः धनार्चिताः धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः' ये किसके विशेषण हैं – **योद्धाओं के**
- ☞ 'प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्' यह श्लोकांश है– **किरातार्जुनीयम् का**
- ☞ 'महौजसो मानधना धनार्चिताः' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है– **धनुर्धारी सेना**
- ☞ 'महौजसो मानधना धनार्चिताः' पद में 'मानधनाः' पद का अर्थ है– **स्वाभिमानी**
- ☞ कुरुराज्य के सैनिक दुर्योधन के प्रति समर्पित हैं – **प्राणपण लगाकर**
- ☞ 'मानधनाः' पद का समास विग्रह है – **मानः एव धनं येषां ते**
- ☞ 'प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः'– यह पद्यांश किस ग्रन्थ से सम्बन्धित है – **किरातार्जुनीयम्**
- ☞ दुर्योधन अन्य राजाओं की सारी गतिविधियाँ जान लेता है– **गुप्तचरों के द्वारा**
- ☞ सभी राजा दुर्योधन की आज्ञा स्वीकार करते हैं– **माला के समान**
- ☞ अनुल्लङ्घनीय आदेश वाला कौन है – **दुर्योधन**
- ☞ 'प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः' में अलङ्कार बताइए – **उपमा**
- ☞ 'कोपविजिह्ममाननम्' यह पद किसके लिए आया है – **दुर्योधन**
- ☞ 'न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः' यहाँ 'उद्यतम्' में कौन सी धातु है– **यम् धातु**
- ☞ 'हिरण्यरेतसम्' का अर्थ क्या है– **अग्नि**
- ☞ 'नवयौवनोद्धतम्' यह पद भारवि ने किसके लिए प्रयोग किया है– **दुःशासन के लिए**
- ☞ ''निधाय दुःशासनमिद्धशासनः'' में 'इद्धशासनः' विशेषण किसके लिए प्रयुक्त है – **दुर्योधन के लिए**
- ☞ दुर्योधन यज्ञकार्य में कैसे लगा रहता है – **दुःशासन को युवराज पद पर बैठा करके**
- ☞ दुर्योधन ने युवराज किसे बनाया– **दुःशासन को**
- ☞ 'हिरण्यरेतसम्' पद में समास है– **बहुव्रीहि**
- ☞ 'यौवन' पद में प्रकृति प्रत्यय बताइए– **युवन् + अण्**
- ☞ 'स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीः' में 'स' पद का अर्थ है– **दुर्योधन**
- ☞ ''अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता'' यह कथन किसका है– **वनेचर का**
- ☞ 'अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता' यह सूक्ति किसके लिए कथित है– **दुर्योधन के विषय में**
- ☞ ''स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीरहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता''उदाहरण है – **अर्थान्तरन्यास अलङ्कार का**

☞ 'दुरन्ता' पद का सामासिक विग्रह होगा – **दुष्टः अन्तः यस्याः सा**
☞ 'भूपालाः' पद की व्युत्पत्ति है– **भू + पाल + अच्**
☞ किरातार्जुनीयम् में दुर्योधन की तुलना की गई है– **उरग से**
☞ 'तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः'
इत्यत्र नताननः कः?– **सुयोधनः**
☞ दुर्योधन किसके पराक्रम को स्मरण करके नतमस्तक हो जाता है– **अर्जुन के**
☞ विषवैद्य सर्प के प्रभाव को कम करने के लिए किसका
स्मरण करता है– **गरुड एवं वासुकि**
☞ 'आखण्डलसूनुः' से तात्पर्य है– **अर्जुन**
☞ गरुड किसका वाहन है – **विष्णु का**
☞ 'प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः' यहाँ 'मादृशां' पद से किसका संकेत है– **वनेचर का**
☞ ''प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः'' यहाँ गिरः पद में विभक्ति है– **प्रथमा बहुवचन**
☞ किसका वचन केवल राजाओं को सूचना मात्र देने के लिए होते हैं– **गुप्तचरों के**
☞ वनेचर की बातें सुनने के बाद युधिष्ठिर कहाँ पहुँचे – **द्रौपदी के पास**
☞ 'प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा' यहाँ 'महीभुजा' पद में तृतीया
विभक्ति है – **अनुक्ते कर्तरि तृतीया**
☞ 'महीभुजा' पद किसके लिए प्रयुक्त है – **युधिष्ठिर के लिए**
☞ 'कृष्णासदनम्' पद का समास विग्रह होगा – **कृष्णायाः सदनम्**
☞ ''उदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः'' यहाँ 'गिरः'पद में वचन विभक्ति है–**बहुवचन, द्वितीया**
☞ दुर्योधन की उन्नति का वृत्तान्त सुनकर द्रौपदी किसका
क्रोध उद्दीप्त कर रही हैं – **युधिष्ठिर का**
☞ द्रुपदात्मजा पद से तात्पर्य है– **द्रौपदी**
☞ दुर्योधन की उन्नति का वृत्तान्त किससे सहन नहीं होता – **द्रौपदी से**
☞ ''भवादृशेषु प्रमदाजनोदितम्'' यहाँ 'प्रमदाजन' से किसका बोध हो रहा है– **द्रौपदी का**
☞ 'निरस्तनारीसमया दुराधयः' किसका कथन है– **द्रौपदी का**
☞ 'नारीसमया' में 'समया' से तात्पर्य है– **मर्यादा**
☞ ''मतङ्गजेन स्रगिवापवर्जिता'' उद्धृत है – **किरातार्जुनीयम् से**
☞ ''मतङ्गजेन स्रगिवापवर्जिता'' में अलंकार है– **उपमा**
☞ ''अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभिः'' यहाँ 'आखण्डल' पद का अर्थ है– **इन्द्र**
☞ मदस्रावी हाथी के समान युधिष्ठिर ने क्या अपने हाथों से गिरा दिया– **पृथ्वी**
☞ ''व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवम्'' किसको सम्बोधित करके कहा गया है– **युधिष्ठिर को**

- ☞ ''भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः'' किसने किससे कहा– **द्रौपदी ने युधिष्ठिर से**
- ☞ ''प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधान्'' यहाँ घ्नन्ति पद में धातु है– हन्
- ☞ धूर्त लोग निश्छल लोगों के भीतर किस रूप में प्रवेश करते हैं– **बाण के रूप में**
- ☞ जो लोग मायावियों के साथ मायावी आचरण नहीं करते वे– **पराजय प्राप्त करते हैं।**
- ☞ 'इषवः' पद का अर्थ है– **बाण**
- ☞ ''गुणानुरक्तामनुरक्तसाधनः कुलाभिमानी कुलजां नराधिपः'' इस पंक्ति में 'कुलाभिमानी' पदबोधक है– **युधिष्ठिर का**
- ☞ 'कुलजाम्' पद का भाव है – **उत्तम वंश में उत्पन्न हुई**
- ☞ ''परैस्त्वदन्यः क इवापहारयेत् में'' 'परैः' पद का भाव है– **शत्रु**
- ☞ 'घ्नन्ति' में धातु है – **हन्**
- ☞ 'शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः' यह सूक्ति किस कवि से सम्बन्धित है– **भारवि से**
- ☞ 'शमीतरुं शुष्कमिवाग्निरुच्छिखः' इस सूक्ति में कौन-सा अलङ्कार है– **उपमा**
- ☞ 'भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते' यहाँ 'भवन्तम्' पद से किसका सङ्केत किया गया है – **युधिष्ठिर का**
- ☞ निराशावस्था में बैठे युधिष्ठिर की तुलना की गई है – **शमीवृक्ष से**
- ☞ 'भवन्तमेतर्हि मनस्विगर्हिते विवर्तमानं नरदेव वर्त्मनि' में 'नरदेव' पद आया है – **युधिष्ठिर के लिए**
- ☞ 'वश्याः' में प्रत्यय जुड़ा है – **यत्**
- ☞ 'अबन्ध्यकोपस्य' पद का अर्थ है– **सफलक्रोध से युक्त**
- ☞ 'देहिनः' पद से तात्पर्य है – **शरीरधारी**
- ☞ 'अमर्षशून्येन जनस्य जन्तुना न जातहार्देन न विद्विषादरः' में 'अमर्ष' पद का अर्थ है – **क्रोध**
- ☞ 'दरः' पद का अर्थ है – **भय**
- ☞ ''परिभ्रमन्'' पद में प्रत्यय है– **शतृँ**
- ☞ 'वासवः' शब्द का अर्थ है– **इन्द्र**
- ☞ 'लोहितचन्दनोचितः, 'रेणुरुषितः' विशेषण है– **भीम का**
- ☞ द्रौपदी ने सबसे पहले किसकी दयनीय दशा का वर्णन किया– **भीम**
- ☞ 'महारथः सत्यधनस्य मानसं दुनोति नो कच्चिदयं वृकोदरः' श्लोक में अलङ्कार है– **परिकर**
- ☞ 'लोहितः' पद की प्रकृति-प्रत्यय है– **रुह + इतच्**
- ☞ ''स वल्कवासांसि तवाधुनाहरन्'' इस पंक्ति में किसका वर्णन है– **अर्जुन का**
- ☞ ''वासवोपमः'' किसके विषय में कहा गया है– **अर्जुन**

☞ इन्द्र के समान पराक्रमी है– **अर्जुन**
☞ अर्जुन ने किस प्रदेश को जीता था– **उत्तरी कुरुप्रदेश**
☞ 'अकुप्यधन' से तात्पर्य है– **स्वर्णरजतरूपी धन**
☞ वनवासकाल के समय पाण्डवों के लिए वल्कलवस्त्र कौन ले आता था–**अर्जुन**
☞ वनवासकाल में कठोर भूमि में कौन सोते हैं– **नकुल-सहदेव**
☞ किरातार्जुनीयम् में युगलभ्राता के रूप में वर्णन है– **नकुल-सहदेव**
☞ पर्वतीय हाथियों से तुलना की गई– **नकुल-सहदेव की**
☞ ''वनान्तशय्याकठिनीकृताकृती कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ'' इस पंक्ति में 'अगजौ' एवं 'गजौ' पद आया है– **नकुल-सहदेव के लिए**
☞ ''कचाचितौ विष्वगिवागजौ गजौ में'' 'कचाचितौ' पद का अर्थ है–**केशों से ढका हुआ**
☞ ''इमामहं वेद न तावकीं धियम्'' यहाँ 'अहम्' पद से किसका बोध हो रहा है– **द्रौपदी का**
☞ चित्तकी वृत्तियाँ कैसी होती हैं– **विचित्ररूप वाली**
☞ 'रुजन्ति चेतः प्रसभं ममाधयः' इस श्लोकांश में किसकी मानसिक स्थिति बतलाई गई है – **द्रौपदी की**
☞ 'इमामहं वेद न तावकीं धियम्' किसका कथन है – **द्रौपदी का**
☞ 'भवदापदम्' पद में समास है– **षष्ठी तत्पुरुष**
☞ अमंगलकारी सियारिनियों की बोलियों से कौन जगते हैं– **युधिष्ठिर**
☞ पुरा कः स्तुतिगीतिमङ्गलै विबोध्यते – **युधिष्ठिर**
☞ 'शयनं' पद का अर्थ है– **शय्या**
☞ ''जहासि निद्रामाशिवैः शिवारुतैः'' इस पंक्ति में 'शिवा' पद का अर्थ है– **शृगाली**
☞ 'पुरोपनीतं नृप रामणीयकं' कथन किसका है– **द्रौपदी**
☞ द्रौपदी 'वन्यफलाशिनः' किसको कहती है– **युधिष्ठिर को**
☞ 'अन्धसा' पद से तात्पर्य है – **अन्न**
☞ 'द्विजः' पद की व्युपत्ति है – **द्वि + जन् + ड**
☞ 'मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्' यहाँ 'बर्हिषाम्' पद का अर्थ है– **कुश**
☞ 'निषीदतस्तौ चरणौ वनेषु ते मृगद्विजालूनशिखेषु बर्हिषाम्' इस पंक्ति में 'निषीदतः' का अर्थ होगा– **पड़ना**
☞ 'बर्हिषाम्' से तात्पर्य है– **कुशों के**
☞ 'पराभव' किसके लिए उत्सव के समान होता है – **स्वाभिमानी के लिए**
☞ ''समूलमुन्मूलयतीव मे मनः'' किसके लिए आया है– **द्रौपदी**

- ☞ 'पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्' पंक्ति में अलङ्कार है– **अर्थान्तरन्यास**
- ☞ युधिष्ठिर के बुरी दशा का कारण है – **शत्रु**
- ☞ स्वाभिमानी पुरुषों के लिए पराजय होती है– **उत्सव के समान**
- ☞ 'शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः' यह कथन किसका है– **द्रौपदी का**
- ☞ 'विहाय' पद में प्रकृति प्रत्यय है– **वि + हा + ल्यप्**
- ☞ 'अवधूय' पद में प्रकृति प्रत्यय है– **अव + धू + ल्यप्**
- ☞ मुनि लोग सिद्धि प्राप्त करते हैं– **शम से**
- ☞ द्रौपदी युधिष्ठिर को फिर से क्या धारण करने को कहा– **तेज**
- ☞ 'निराश्रया हन्त! हता मनस्विता' सूक्ति के वक्ता तथा श्रोता हैं– **द्रौपदी-युधिष्ठिर**
- ☞ 'भवादृशाश्चेदधिकुर्वते रतिम्' में 'रतिम्' पद का भाव है– **सन्तोष**
- ☞ 'कार्मुकम्' पद का अर्थ है – **धनुष**
- ☞ 'जटाधरः सञ्जुहुधीह पावकम्' यह किसके लिए किसने कहा– **द्रौपदी ने युधिष्ठिर से**
- ☞ द्रौपदी ने राजचिह्न त्यागने को किसे कहा– **युधिष्ठिर को**
- ☞ 'जटाधरः' इस पद का समास विग्रह है– **जटानां धरः**
- ☞ 'पावकम्' की धातु एवं प्रत्यय बताइए – **पू + ण्वुल्**
- ☞ 'निकृतिपरेषु परेषु भूरिधाम्नः' इस पंक्ति में अलंकार है– **यमक**
- ☞ 'न समयपरिरक्षणं क्षमं ते'– यहाँ छन्द है– **पुष्पिताग्रा**
- ☞ 'किरातार्जुनीयम्' प्रथम सर्ग का पैतालिसवाँ श्लोक किस छन्द में है– **पुष्पिताग्रा**
- ☞ 'न समयपरिरक्षणं क्षमं ते' इस पंक्ति में 'समय' पद का भाव है– **शपथ, प्रतिज्ञा, काल**
- ☞ 'निकृतिपरेषु भूरिधाम्नः' यहाँ 'निकृति' पद बोधक है– **शत्रुता, अपमान**
- ☞ किरातार्जुनीयम् के प्रत्येक सर्ग का अंतिम पद है– **लक्ष्मीः**
- ☞ किरातार्जुनीयम् के अंतिम श्लोक में छन्द है– **मालिनी**
- ☞ 'रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानम्' में अलंकार है– **रूपक**
- ☞ किसके वक्तव्य की समाप्ति के साथ किरातार्जुनीयम् का प्रथम सर्ग समाप्त होता है– **द्रौपदी के**
- ☞ मालिनी छन्द के प्रत्येक चरण में कितने वर्ण होते हैं– **15**
- ☞ रिपुतिमिरमुदस्योदीयमानं दिनादौ-यहाँ पर 'रिपुतिमिर' पद का अर्थ है– **सूर्य, शत्रुसदृश अन्धकार**

महत्त्वपूर्ण सूक्तियाँ

➢ **अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितीशाः विदधति सोपधि सन्धिदूषणानि।** (1/45)

भावार्थ-द्रौपदी का कथन, युधिष्ठिर से- विजय की अभिलाषा वाले राजा लोग शत्रुओं के विषय में (की गयी) सन्धियों को छलपूर्वक भङ्ग कर देते हैं।

➢ **अहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता।** (1/23)

भावार्थ- वनेचर युधिष्ठिर से कहता है- 'बलवान् के साथ किया गया वैर-विरोध होना अनिष्ट अन्त है।'

➢ **कामाः कष्टा हि शत्रवः।** (11/35)

भावार्थ- इन्द्र अर्जुन से कहता है- 'ये कामादि विषय बड़े कष्टदायी शत्रु हैं।'

➢ **तत्तविदां किमिवास्ति यन्न सुकरं मनस्विभिः।** (12/6)

भावार्थ-भगवान् शंकर की आराधना करने हुए अर्जुन का शरीर क्षीण हो गया था फिर भी उसने तीनों लोक के उत्कर्ष को जीत लिया था-'उस शरीर के देखने से तत्त्वज्ञ लोगों को भी भय उत्पन्न हो जाता था। कौन ऐसा कार्य है जिसे मनस्वी लोग आसानी से नहीं कर सकते?'

➢ **तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां, निरस्तनारीसमया दुराधयः।।** (1/28)

भावार्थ- द्रौपदी का कथन- फिर भी स्त्रीजनोचित शालीनता को नष्ट कर देने वाली दुष्ट मानसिक व्यथाएँ मुझे बोलने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

➢ **न तितिक्षा सममस्ति साधनम्।** (2/43)

भावार्थ- युधिष्ठिर भीम से कहते हैं- क्षमाशीलता ही सभी काल में सभी फलों को देने वाली है।

➢ **नयहीनादपरज्यते मनः।** (2/49)

भावार्थ- युधिष्ठिर भीम से कहते हैं- 'नीतिमार्ग से भ्रष्ट हुए राजा से प्रजानन विरक्त हो जाते हैं अर्थात् उससे अनुराग नहीं करते।'

➢ **न रम्यमाहार्यमपेक्षते गुणम्।** (4/23)

भावार्थ- शरत् ऋतु की शोभा को देखकर यक्ष अर्जुन से बिना पूछे ही कहने लगा- 'क्योंकि मनोहर वस्तु आरोपित गुणों की अपेक्षा नहीं करता।'

➢ **न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः।** (1/2)

भावार्थ- वनेचर युधिष्ठिर से कहता है- 'क्योंकि कल्याण चाहने वाले (स्वपक्षीय) लोग मिथ्याभूत मुधर वचन बोलने की इच्छा नहीं करते हैं।'

➢ **न्यायाधारा हि साधवः।** (11/30)

भावार्थ- अर्जुन को तपस्या करते देख प्रसन्न मुनि वेशधारी इन्द्र आकर अर्जुन से बोले-'सज्जन लोग तो न्याय का ही आश्रय लेते हैं।'

➢ **पराभवोऽप्युत्सव एव मानिनाम्।** (1/41)
भावार्थ- युधिष्ठिर की दशा को देखकर द्रौपदी कहती है- शत्रुओं द्वारा अपराभूत शौर्य सम्पत्ति वाले मनस्वी पुरुषों के लिये पराभव भी उत्सव के ही समान है।

➢ **प्रकृत्यमित्रा हि सतामसाधवः।** (14/21)
भावार्थ-वराह की मृत्यु पर अर्जुन तथा किरात आपस में युद्ध करने के पूर्व एक दूसरे से बहस करते हैं- 'गुणों के अर्जन से उत्कृष्ट जन एकत्र करने के विरोधी असज्जन लोग सज्जनों के सहज बैरी होते हैं।'

➢ **प्रकर्षतन्त्रा हि रणे जयश्रीः।** (3/17)
भावार्थ-वेदव्यास युधिष्ठिर से कहते हैं- 'युद्ध में विजयश्री उत्कर्ष के ही अधीन रहती है।'

➢ **प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः।** (1/25)
भावार्थ-वनेचर का कथन- मुझ जैसे की बाते तो वृत्तान्त मात्र पर्यवसायिनी होती हैं।

➢ **भवन्ति भव्येषु हि पक्षपाताः।** (3/12)
भावार्थ- युधिष्ठिर के विजय के लिए विचार करते द्वैपायन व्यास बोले- 'विरागी मुमुक्षु लोगों का भी साधुजनों में अधिक स्नेह होता है।'

➢ **मित्रलाभमनुलाभसम्पदः।** (13/52)
भावार्थ- भगवान् शंकर द्वारा भेजा गया वनेचर अर्जुन से कहता है- इस तरह का मित्रलाभ सर्वोत्कृष्ट है।

➢ **मुखरताऽवसरे हि विराजते।** (5/16)
भावार्थ- कुबेर का अनुचर यक्ष अर्जुन से प्रिय वचन बोला- अवसर पर वाचालता शोभित ही होती है।

➢ **लङ्घ्यते न खलु कालनियोगः।** (9/13)
भावार्थ- महाकवि भारवि ने सूर्यास्त के समय चकवा-चकवी अलग हो जाते हैं इस विषय में लिखा- 'दैव की आज्ञा कौन भङ्ग कर सकता है।'

➢ **वसन्ति हि प्रेम्णि गुणा न वस्तुनि।** (8/37)
भावार्थ-अप्सरायें कहती हैं- 'गुण तो प्रेम में निवास करते हैं, किसी वस्तु में नहीं।'

➢ **विविक्तं ब्रह्मणः पदम्।** (11/66)
भावार्थ-अर्जुन इन्द्र को अपने तपस्या का प्रयोजन बताते हुए बोले- न तो मैं विनश्वरता रूप विद्युत्पात से ही डरता हूँ, अतः मुझे मुक्ति की भी इच्छा नहीं है।

➢ **वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः।** (1/8)
भावार्थ- वनेचर युधिष्ठिर से बताता है कि दुर्योधन अपने यश का विस्तार कर रहा है- 'महापुरुषों के साथ विरोध भी दुष्टजनों के साथ की अपेक्षा श्रेष्ठ है।'

➢ **व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं**
भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथा-
विधानसंवृतांगान्निशिता इवेषवः। (1/30)

भावार्थ-द्रौपदी युधिष्ठिर से कहती है- 'जो मनुष्य कपटियों के प्रति स्वयं कपटी नहीं बनते, विवेकरहित वे मनुष्य सर्वत्र पराजय को प्राप्त करते हैं, क्योंकि कुटिल व्यक्ति उस

प्रकार के व्यक्तियों के (कुटिलता से रहित सज्जनों के) शरीर में प्रवेश करके कवच आदि से आरक्षित देह वाले पुरुषों को मारने वाले अत्यन्त तीक्ष्ण बाणों की तरह आत्मीय बनकर मार डालते हैं।'

- **शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृतः।** (1/42)

भावार्थ-द्रौपदी युधिष्ठिर से शान्तिमार्ग को छोड़कर युद्ध के लिए कहती हैं- 'कामना रहित तपस्वी लोग काम,क्रोध,लोभ,मोह,मद,मात्सर्य नामक षड्विध शत्रुओं को जीतकर संयम के द्वारा (मोक्षरूपी सिद्धि को प्राप्त करते हैं।)

- **सदानुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः।** **(1/5)**

भावार्थ- वनेचर का कथन, युधिष्ठिर से- क्योंकि राजाओं और अमात्यों के परस्पर अनुकूल होने पर समस्त सम्पदाएँ सर्वदा अनुराग करती हैं।

- **सः किं सखा साधु न शास्ति योऽधिपम्।** (1/5)

भावार्थ- युधिष्ठिर द्वारा दुर्योधन के विषय में जानकारी लेने के लिए भेजा गया वनेचर (गुप्तचर) वापस आकर बोला- 'जो राजा को समुचित उपदेश नहीं देता है क्या वह मित्र है? अर्थात् कभी नहीं।'

- **सुदुर्लभा सर्वमनोरमा गिरः।** (14/5)

भावार्थ- अर्जुन ने किरात से क्षोभरहित की तरह वचन बोले- 'तुम्हारी वाणी तो सर्वगुण सम्पन्न होने से सर्वप्रिय है।'

- **सुलभा रम्यता लोके दुर्लभं हि गुणार्जनम्।** (11/11)

भावार्थ- मुनिवेषधारण कर इन्द्र अर्जुन से कहते हैं- सौन्दर्य का मिलना तो संसार में कोई कठिन बात नहीं है परन्तु गुणों को प्राप्त करना अत्यन्त कठिन है।

- **स्फुटता न पदैरपाकृता न च स्वीकृतमर्थगौरवम्।**
  रचित पृथगर्थता गिरां न च सामर्थ्यमपोहितं क्वचित्। (2/27)

भावार्थ- युधिष्ठिर भीम को समझाते हुये बोले- '(वचन में प्रयोग किये गये) पदों के द्वारा अर्थ की सुस्पष्टता का परित्याग नहीं किया गया है और अर्थगौरव को नहीं स्वीकार किया गया, ऐसी बात नहीं (अर्थात् अर्थ विपुलता है ही) पदों का भिन्न भिन्न अर्थ निरूपित है। कहीं पर भी परस्पर सापेक्षभाव परित्यन्त नहीं हुआ है अर्थात् भीमसेन के वचन के पद स्फुट अर्थ वाले अर्थगौरव सार्थक तथा परस्पर पूर्वापर सम्बन्ध से युक्त है।'

- **स सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे।**

(किरात. 03)

भावार्थ- शब्द सौन्दर्य और अर्थ-सम्पत्ति की विशिष्टता से सुशोभित तथा सुनिश्चित अर्थवाली, इस प्रकार की वाणी अङ्गीकृत अर्थात् कही।

- **हरति मनो मधुरा यौवनश्रीः।** (10/17)

भावार्थ- अप्सरायें अर्जुन को तपस्या करता देख मोहित हो जाती हैं तथा अर्जुन की तपस्या भंग करने का विचार करती हैं- 'क्योंकि युवावस्था की रम्य शोभा मन का हरण कर लेती है।'

❑❑